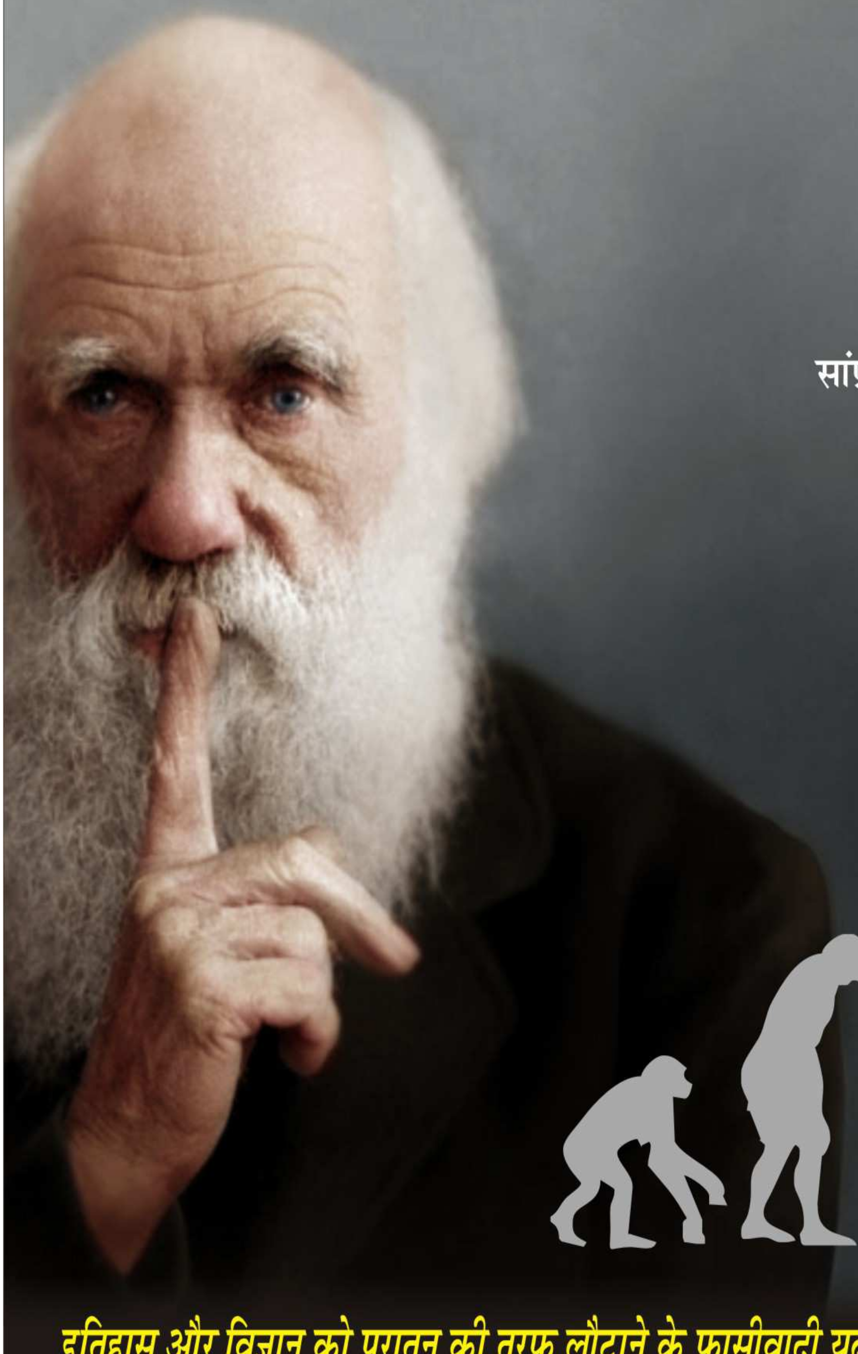
वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

मार्च 2018





अंदर पढ़े...

20/-

इतिहास और विज्ञान को पुरातन की तरफ लौटाने के फासीवादी यत्न सोची समझी साजिश का हिस्सा है।

मैं पूछता हूँ

पाश

मैं पूछता हूँ आसमान में उड़ते हुए सूरज से
क्या वक्त इसी का नाम है
कि घटनाएँ कुचलती चली जाएँ
मस्त हाथी की तरह
एक पूरे मनुष्य की चेतना?
कि हर प्रश्न
काम में लगे जिस्म की गलती ही हो?

क्यूँ सुना दिया जाता है हर बार
पुराना चुटकुला
क्यूँ कहा जाता है कि हम जिन्दा है
जरा सोचो -
कि हममें से कितनों का नाता है
जिन्दगी जैसी किसी वस्तु के साथ !

रब की वो कैसी रहमत है
जो गेहूं बोते फटे हुए हाथों-
और मंडी के बीचोंबीच के तख्तपोश पर फैली हुई
माँस की उस पिलपली ढेरी पर,
एक ही समय होती है ?

आखिर क्यों
बैलों की घंटियाँ
और पानी निकालते इंजन के शोर में
घिरे हुए चेहरों पर जम गई है
एक चीखतीं खामोशी ?

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFSC: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416036203 पर एस.एम.एस करें।

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग:

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969
Email: baldevmehrok@gmail.com

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802

गुरमीत अम्बाला - 94160-36203

अनुपम राजपुरा - 94683-89373

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98153-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

द्विवार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email: tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)
म.नं. 1062, आदर्श नगर,
नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।
जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)
Email: tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia
पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org

Tarksheel on Whatsapp : 9416036203
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com
Tarksheel on Twitter:
@gurmeeteditor

संकेतिका

विशेष लेख : **पृष्ठ संख्या**

मीटिंग की सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक, दिनांक **13-05-2018**, दिन रविवार को चीका जिला कैथल में प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोटः तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

गुरविंद्र सिंह - *94675 85390*
का. श्रीकृष्ण - *92535 01500*

-नोट-

किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

चार्ल्स डार्विन की सार्थकता

केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री सत्यपाल सिंह ने डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत पर प्रश्न खड़ा किया कि मानव क्रमिक विकास का प्रतिफल नहीं है। डार्विन की खोजों से गिरते हुए धार्मिक विश्वासों के कारण इस प्रकार के प्रश्न उभरते रहे हैं। यूरोप में भी कैथोलिक ईसाइयों ने चार्ल्स डार्विन की खोजों पर उल्टे-सीधे प्रश्न किए थे जिसकी तथ्यपरक खोजों के कारण बाईबल की मान्यताओं पर प्रश्न चिह्न लगा दिया था। परंतु पूरा विश्व यहां तक कि कट्टरवादी इस्लामी मुल्क भी चार्ल्स डार्विन को पढ़ाने पर विवश है क्योंकि जीवविज्ञान की परिकल्पना चार्ल्स डार्विन को पढ़े बिना नहीं की जा सकती है।

कार्ल्स मार्क्स चार्ल्स डार्विन की खोजों से काफी प्रभावित हुए थे और अपनी विश्व प्रसिद्ध रचना 'केपिटल' को उन्हें सम्र्पित करने की बात कही थी जिसे डार्विन ने बहुत गरिमापूर्णता से उनका यह प्रस्ताव ठुकरा दिया था कि उनकी 'केपिटल' अर्थशास्त्र एक पूर्ण ग्रंथ है। जिसके विषय का उन्हें ज्ञान नहीं है। वह स्वयं को इस काबिल नहीं समझते कि 'केपिटल' उन्हें सर्मिपत हो।

चार्ल्स डार्विन के सिद्धांत पर केंद्रीय मंत्री के इस वक्तव्य पर विज्ञान जगत की कड़ी प्रतिक्रिया हुई है। यहां तक कि 12 से 28 फरवरी तक देश भर में विज्ञानवादियों ने डार्विन वीक मनाया और उनकी थ्यूरी ऑफ एवोल्लयूशन पर संशय को दूर करने का प्रयत्न किया तथा लम्बी श्रृंखलायें मीडिया में छपीं व विरोधियों के बेवकूफाना प्रश्नों का उत्तर वैज्ञानिक नज़रिये से दिया।

धर्मवादियों को पूरे विश्व में थ्यूरी ऑफ एवोल्यूशन पर इस प्रकार के प्रश्न करते देखा जाता है। आज विज्ञान के बढ़ते प्रभाव के कारण पूरा युवा वर्ग अंधविश्वासपूर्ण कृत्यों से बगावत कर रहा है। भारत जैसे देश और एशिया के लोग अपने धर्मवादी संस्कारों को पारिवारिक वातावरण के कारण एकदम त्याग नही कर पा रहे हैं। परंतु अंतर्मन से जो भी विद्यार्थी समझ रहा है और जीवन को उसके अनुरूप ढाल रहा है, वह अन्तर्मन से इन सब अंधविश्वासों से मुक्त हो रहा है।

पाकिस्तान जैसे देश में कुछ वर्ष पूर्व जीवन विज्ञान के प्रोफेसर एक प्रो.मुनीर शेख के खिलाफ बलास्फेमी के केस डाले गये थे। क्योंकि वह चार्ल्स डार्विन को उसके सही संदर्भ मे पढ़ा रहा था। जिस कारण धर्मवादियों ने उन्हें जेल में डलवा दिया। उस समय पाकिस्तान में जनरल मुशर्रफ की तानाशाही थी। परंतु विश्व के विज्ञानवादियों ने प्रोफेसर के हक में आवाज बुलंद की। भारत में भी तर्कशील संगठनों ने अपना विरोध दर्ज किया था। फलस्वरूप प्रो. मुनीर शेख को रिहा करना पड़ा था।

सभी विज्ञानवादियों का कर्तव्य है कि वे विश्व को धर्म आधारित अंधविश्वासों से मुक्ति की राह दिखाएं और मानवतावाद का झंडा बुलंद करें जिसे बखूबी निभाने के संकल्प की जरूरत है।

23 मार्च शहीदी दिवस पर विशेष

सांप्रदायिक दंगे और उनका इलाज

(1919 के जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के बाद ब्रिटिश सरकार ने साम्प्रदायिक दंगों का खूब प्रचार शुरू किया। इसके असर से 1924 में कोहार में बहुत ही अमानवीय ढंग से हिन्दू-मुसलमान दंगे हुए। इसके बाद राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना में साम्प्रदायिक दंगों पर लम्बी बहस चली। इन्हें समाप्त करने की जरूरत तो सबने महसूस की। इस समस्या के निश्चित हल के लिए क्रान्तिकारी आन्दोलन ने अपने विचार प्रस्तुत किये। भगतसिंह का यह लेख जून 1928 के 'किरती' में छपा था।

भारत वर्ष की दशा इस समय बड़ी दयनीय है। एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म के अनुयायियों के जानी दुश्मन हैं। अब तो एक धर्म का होना ही दूसरे धर्म का कट्टर शत्रु होना है।' यदि इस बात का अभी यकीन न हो तो लाहौर के ताजा दंगे ही देख लें। किस प्रकार मुसलमानों ने निर्दोष सिखों, हिन्दुओं को मारा है और किस प्रकार सिखों ने भी वश चलते कोई कसर नहीं छोड़ी है। यह मार-काट इसलिए नहीं की गयी कि फलाँ आदमी दोषी है, वरन् इसलिए कि फलाँ आदमी हिन्दू है या सिख है या मुसलमान है। बस किसी आदमी का सिख या हिन्दू होना मुसलमानों द्वारा मारे जाने के लिए काफी था और इसी तरह किसी व्यक्ति का मुसलमान होना ही उसकी जान लेने के लिए पर्याप्त तर्क था। जब स्थिति ऐसी हो तो हिन्दुस्तान का ईश्वर ही मालिक है।

ऐसी स्थिति में हिन्दुस्तान का भविष्य बहुत अन्धकारमय नजर आता है।' इन 'धर्मों' ने हिन्दुस्तान का बेड़ा गर्क कर दिया है। और अभी पता नहीं कि यह धार्मिक दंगे भारतवर्ष का पीछा कब छोड़ेंगे। इन दंगों ने संसार की नजरों में भारत को बदनाम कर दिया है। और हमने देखा है कि इस अन्धविश्वास के बहाव में सभी बह जाते हैं। कोई बिरला ही हिन्दू, मुसलमान या सिख होता है, जो अपना दिमाग ठण्डा रखता है, बाकी सब के सब धर्म के ये नामलेवा अपने नामलेवा धर्म के रोब को कायम रखने के लिए डण्डे-लाठियां, तलवारे-छुरे हाथ में पकड़ लेते हैं। और आपस में सिर फोड़ फोड़ कर मर जाते हैं। बाकी बचे कुछ तो फांसी चढ़ जाते हैं और कुछ जेलों में फैंक दिये जाते हैं। इतना रक्तपात होने पर इन 'धर्मजनों' पर अंग्रेजी सरकार का डण्डा बरसता है और फिर इनकेदिमाग का कीड़ा ठिकाने पर आ जाता है।

जहां तक देखा गया है, इन दंगों के पीछे साम्प्रदायिक नेताओं और अखबारों का हाथ है। इस समय हिन्दुस्तान के नेताओं ने ऐसी लीद की है कि चुप ही भली। वही नेता जिन्होंने भारत को स्वतंत्र कराने का बीड़ा अपने सिरों पर उठाया हुआ था और जो 'समान राष्ट्रीयता' और 'स्वराज-स्वराज' दम गजे मारते नहीं थकते थे, वही या तो अपने सिर छिपाये चुपचाप बैठे हैं या इसी धर्मान्धता के बह चले हैं। सिर छिपा कर बैठने वालों की संख्या भी क्या कम है, और क्या साम्प्रदायिकता की ऐसी प्रबल बाढ़ आयी हुई है कि वे भी इसे रोक नहीं पा रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि भारत में नेतृत्व का दिवाला पिट गया है।

दूसरे सज्जन जो साम्प्रदायिक दंगों को भड़काने में विशेष हिस्सा लेते रहे हैं, वे अखबार वाले हैं। पत्रकारिता का व्यवसाय जो किसी समय बहुत उंचा समझा जाता था, आज बहुत ही गन्दा हो गया है। यह लोग एक-दूसरे के विरुद्ध बड़े मोटे-मोटे शीर्षक देकर लोगों की भावनाएँ भड़काते हैं और परस्पर सिर-फुटौव्वल करवाते हैं। एक-दो जगह ही नहीं, कितनी ही जगहों पर इसलिए दंगे हुए कि स्थानीय अखबारों ने बड़े उत्तेजनापूर्ण लेख लिखे हैं। ऐसे

लेखक जिनका दिल व दिमाग ऐसे दिनों में भी शान्त रहा हो, बहुत कम हैं।

अखबारों का असली कर्तव्य शिक्षा देना, लोगों से संकीर्णता निकालना, साम्प्रदायिक भावनाएँ हटाना, परस्पर मेल-मिलाप बढ़ाना और भारत की साझी राष्ट्रीयता बनाना था, लेकिन इन्होंने अपना मुख्य कर्तव्य अज्ञान फैलाना, संकीर्णता का प्रचार करना, साम्प्रदायिक बनाना, लड़ाई-झगड़े करवाना और भारत की साझी राष्ट्रीयता को नष्ट करना बना लिया है। यही कारण है कि भारत वर्ष की वर्तमान दशा पर विचार कर आँखों से रक्त के आँसू बहने लगते हैं और दिल में सवाल उठता है कि 'भारत का बनेगा क्या ?''

जो लोग असहयोग के दिनों के जोश व उभार को जानते हैं, उन्हें यह स्थिति देख रोना आता है। कहाँ थे वे दिन कि स्वतन्त्रता की झलक सामने दिखायी देती थी और कहाँ आज यह दिन कि स्वराज्य एक सपना मात्र बन गया है। बस यही तीसरा लाभ है जो इन दंगों से अत्याचारियों को मिला है। वही नौकरशाही-जिसके अस्तित्व को खतरा पैदा हो गया था, कि आज गयी, कल गयी-आज अपनी जड़ें इतनी मजबूत कर चुकी है कि उसे हिलाना कोई मामूली काम नहीं है।

यदि इन साम्प्रदायिक दंगों की जड़ खोजें तो हमें इसका कारण आर्थिक ही जान पड़ता है। असहयोग के दिनों में नेताओं व पत्रकारों ने ढेरों कुर्बानियाँ दीं। उनकी आर्थिक दशा बिगड़ गयी थी। असहयोग आन्दोलन के धीमा पड़ने पर नेताओं पर अविश्वास-सा हो गया, जिससे आजकल के बहुत-से साम्प्रदायिक नेताओं के धन्धे चौपट हो गये। विश्व में जो भी काम होता है, उसकी तह में पेट का सवाल जरूर होता है। कार्ल मार्क्स के तीन बड़े सिद्धान्तों में से यह एक मुख्य सिद्धान्त है। इसी सिद्धान्त के कारण ही तबलीग, तनकीम, शुद्धि आदि संगठन शुरू हुए और इसी कारण से आज हमारी ऐसी दुर्दशा हुई, जो अवर्णननीय है।

बस, सभी दंगों का इलाज यदि कोई हो सकता है तो वह भारत की आर्थिक दशा में सुधार से ही हो सकता है, क्योंकि भारत के आम लोगों की आर्थिक दशा इतनी खराब है कि एक व्यक्ति दूसरे को चवन्नी देकर किसी और को अपमानित करवा सकता है। भूख और दुख से आतुर होकर मनुष्य सभी सिद्धान्त ताक पर रख देता है। सच है, मरता क्या न करता। लेकिन वर्तमान स्थिति में आर्थिक सुधार होना अत्यन्त कठिन है क्योंकि सरकार विदेशी है और यही लोगों की स्थिति को सुधरने नहीं देती। इसलिए लोगों को हाथ धोकर इसके पीछे पड़ जाना चाहिए और जब तक सरकार बदल न जाये, चैन की साँस न लेना चाहिए।

लोगों को परस्पर लड़ने से रोकने के लिए वर्ग चेतना की जरूरत है। गरीब मेहनतकश व किसानों को स्पष्ट समझा देना चाहिए कि तुम्हारे असली दुश्मन पूँजीपति हैं, इसलिए तुम्हें इनके हथकण्डों से बचकर रहना चाहिए और इनके हत्थे चढ़ कुछ न करना चाहिए। संसार के सभी गरीबों के, चाहे वे किसी भी जाति, रंग, धर्म या राष्ट्र के हों, अधिकार एक ही हैं। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम धर्म, रंग, नस्ल और राष्ट्रीयता व देश के भेदभाव मिटाकर एकजुट हो जाओ और सरकार की ताकत अपने हाथ में लेने का यत्न करो। इन यत्नों में तुम्हारा नुकसान कुछ नहीं होगा, इससे किसी दिन तुम्हारी जंजीरें कट जाएँगी और तुम्हें आर्थिक स्वतन्त्रता मिलेगी।

जो लोग रूस का इतिहास जानते हैं, उन्हें मालूम है कि जार की समय वहाँ भी ऐसी ही स्थितियाँ थीं, वहाँ भी कितने की समुदाय थे जो परस्पर जूत-पतांग करते रहते थे। लेकिन जिस दिन से वहाँ श्रमिक शासन हुआ है, वहाँ नक्शा ही बदल गया है। अब वहाँ कभी दंगे नहीं हुए। अब वहाँ सभी को 'इंसान' समझा जाता है, 'धर्मजन' नहीं। जार के समय लोगों की आर्थिक दशा बहुत ही खराब थी, इसलिए सभी दंगे-फसाद होते थे। लेकिन अब रूसियों की आर्थिक दशा सुधर गयी है, और उनमें वर्ग चेतना आ गयी है, इसलिए अब वहाँ से कभी किसी दंगे की खबर नहीं आयी।

इन दंगों में वैसे तो बड़े निराशाजनक समाचार सुनने में आते हैं, लेकिन कलकत्ते के दंगों में एक बात बहुत खुशी की सुनने में आयी। वह यह कि वहाँ दंगों में ट्रेड यूनियनों के मजदूरों ने हिस्सा नहीं लिया

और न ही वे परस्पर गुत्थम-गुत्था ही हुए, वरन् सभी हिन्दू, मुसलमान बड़े प्रेम से कारखानों आदि में उठते-बैठते और दंगे रोकने के भी यत्न करते रहे। यह इसलिए कि उनमें वर्ग चेतना थी और वे अपने वर्ग हित को अच्छी तरह पहचानते थे। वर्ग चेतना का यही सुन्दर रास्ता है जो साम्प्रदायिक दंगे रोक सकता है।

यह खुशी का समाचार हमारे कानों को मिला है कि भारत के नवयुवक अब वैसे धर्मो से जो परस्पर लड़ाना व घृणा सिखाते हैं, तंग आकर हाथ धो रहे हैं और उनमें इतना खुलापन आ गया है कि वे भारत के लोगों को धर्म की नजर से-हिन्दू, मुसलमान या सिख-रूप में नहीं, वरन् सभी को पहले इंसान समझते हैं, फिर भारतवासी। भारत के युवकों में इन विचारों के पैदा होने से पता चलता है कि भारत का भविष्य सुनहला है और भारतवासियों को इन दंगों आदि को देखकर घबराना नहीं चाहिए, बल्कि तैयार-बर-तैयार हो यत्न करना चाहिए कि ऐसा वातावरण ही न बने, ताकि दंगे हो ही नहीं।

1914-15 के शहीदों ने धर्म को राजनीति से अलग कर दिया था। वे समझते थे कि धर्म व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है, इसमें दूसरे का कोई दखल नहीं। न ही इसे राजनीति में ही घुसाना चाहिए क्योंकि यह सरबत को मिलकर एक जगह काम नहीं करने देता। इसलिए गदर पार्टी-जैसे आन्दोलन एकजुट व एकजान रहे, जिसमें सिख बढ़-चढ़कर फाँसियों पर चढ़े और हिन्दू-मुसलमान भी पीछे नहीं रहे। इस समय कुछ भारतीय नेता भी मैदान में उतरे हैं, जो धर्म को राजनीति से अलग करना चाहते हैं। झगड़ा मिटाने का यह भी एक सुन्दर इलाज है और हम इसका समर्थन करते हैं।

यदि धर्म को अलग कर दिया जाय तो राजनीति पर हम सभी इकट्ठे हो सकते हैं। धर्मो में चाहें अलग-अलग ही रहें।

हमारा खयाल है कि भारत के सच्चे हमदर्द हमारे बताये इलाज पर जरूर विचार करेंगे और भारत का इस समय जो आत्मघात हो रहा है, उससे हमें बचा लेंगे।



The Tribune.

NO. 70 LAHORE, WEDNESDAY, MARCH 25, 1931. Price One Anna

T SINGH, RAJGURU AND SUKHDEV EXECUTED.

AST INTERVIEW" WITH RELATIONS.

Emerge From Jail.

S SECRETLY DISPOSED OF

d to Distant Place.

TRUCE TERMS NOT BEING CARRIED OUT.

Congressmen's Feeling.

TWISTED WRECKAGE OF ROYAL SCOT

Fastest Train in World

BHAGAT SINGH.

The Tribune, Lahore,
March 18, 1931:
Kishen Singh, father of Sardar Bhagat Singh received the following letter from Mohammad Akbar, deputy superintendent, Lahore Central Jail: "Dear Sir, I am directed to inform you that your interview with condemned prisoner Bhagat Singh has been fixed for the March 23, 11 am. You should arrange to bring all your blood relations with you." Another notice to the same effect but with the words "that interview will be the last interview with Bhagat Singh" was received through the tehsil officials. Similar notices were received by the mother of Rajguru. Kishen Singh sent a telegram to Mahatma Gandhi: "Just received Viceroy's order. Relation's mercy plea rejected. Last interview with Bhagat Singh on 23rd"

भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव की फांसी के बारे 25 मार्च, 1931 को 'द ट्रिब्यून' में छपी खबर

10 अप्रैल जन्म दिवस पर विशेष

परमात्मा संबंधी धारणा

-डा.ए.टी. कोव्वूर

मैं इस ज्वलंत प्रश्न के संबंध में, जो कि मनुष्य के बढ़ते ज्ञान के क्षितिज के साथ और भी अधिक वाद-विवाद का विषय बनता जा रहा है, के बारे में अपने विचार प्रकट करना चाहता हूं।

प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक एवं रोमन पादरी टीलहार्ड डी. चार्डिन अपनी पुस्तक 'दी फिनामन्न् आफ मैन' लिखता है कि मनुष्य की पृथ्वी के ऊपर उत्पत्ति जीव विज्ञान का ही एक कमाल है, जिसके पीछे एक सर्वशक्तिएवं सर्वोच्च प्रतिभा का हाथ है, जिसको परमात्मा कहना ही श्रेयकर है।

आधुनिक युग के एक शिष्ट धर्म वेत्ता डाक्टर रोबिन्सन जिसने साकार ईश्वर को उसके स्वर्गधाम में उतार दिया है, अपनी पुस्तक 'ऑनैस्ट टू गॉड' में एक बुद्धिमान अमानवीय ईश्वर का वर्णन करते हुए कहता है कि वह हमारे अंदर ही है और प्रकृति की प्रत्येक वस्तु पूर्णतः उसके अधिकार में है।

मैथोडिस्ट चर्च के पादरी रैवः फ्रैड-डी-सिल्वा ने एक लघु पुस्तिका जिसका शीर्षक था-'क्या विज्ञान परमात्मा को स्वीकार करता है?' मैं लिखा-विज्ञान और विज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओं में परमात्मा से संबंध में भिन्न-भिन्न धारणाएं हैं। परमात्मा के रहस्य को कुछ भौतिक विज्ञान ने, कुछ रासायनिक विज्ञान ने एवं कुछ जीव विज्ञान ने, कुछ वनस्पति विज्ञान ने एवं कुछ स्वास्थ्य विज्ञान ने अनावृत करने का प्रयत्न किया है कलाकारों व कवियों को भी परमात्मा के प्रति ही धारणा है। सच्चा धर्म इन सभी धारणाओं को समावेश करके आध्यात्मिक रूप दे देता है। क्या चंद्रमा को उसके ग्रह पथ पर पृथ्वी, सूर्य व चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति नहीं रखती है? क्या इनका तालमेल महज एक संयोग था? मैं इस सर्वोच्च बुद्धिमान को ही परमात्मा का नाम देता हूं।'

आइए, हम विचार करें कि ये सुधारवादी आस्तिक किसी परमात्मा के बारे में बोल रहे हैं? बुद्धि, जोकि एक मानसिक विशेषता है, दिमागी कोशिकाओं के काम करने के बिना नहीं हो सकती। बायोनिक्स विज्ञान की एक नयी शाखा है, जो जीवों के मानसिक व शारीरिक आचरण के बारे में जानकारी देती है।

मन या बुद्धि का बिना जीवन के कोई अस्तित्व नहीं हो सकता। इसी तरह जीवन बिना शरीर के संभव नहीं। जैसे आग इंधन के बिना नहीं हो सकती, उसी तरह जिंदगी, सांस लेते शरीर के बिना नहीं हो सकती। इसलिए जीव रहित बुद्धि के बारे में सोचना मूर्खता है।

जीवन कोई वैसी वस्तु नहीं जैसा मन है। एक आलू या काया रहित दिल तो अनुकूल वातावरण में जीवित रह सकते हैं, परन्तु उनके कोई मन नहीं होता। क्योंकि उनके मन में दिमागी सैल नहीं होता। तो फिर जिस आत्मिक रूप के बारे में रैव डी. सिल्वा लिखता है, वह क्या है? यह बात निरर्थक धारणा से उत्पन्न हुई है कि सभी जीवित वस्तुओं में एक जीवित आत्मा होती है।

आध्यात्मवादियों को विश्वास है कि आत्मा में जीवन और मन दोनों होते हैं। यह एक सर्वथा काल्पनिक एवं असत्य विचार है, क्योंकि जीवन और मन तो श्वास रहित शरीर में बिल्कुल असंभव है। शरीर रहित आत्माएं अपनी पूरी पोशाक पहनकर मानसिक रोगियों के सामने प्रकट हो जाती हैं। ये शरीर रहित आत्माएं कैसे बोल सकती हैं? बिना शक्तिशाली मांसपेशियों के ये भारी शारीरिक कार्य कैसे कर लेती हैं? ये अपने पहनने के लिए पोशाक कहां से प्राप्त कर लेती हैं? ऐसे प्रश्न प्रेतात्माओं में अंधविश्वास रखने वालों को बिल्कुल मुश्किल में नहीं डालते।

यदि मृत व्यक्ति अपनी आत्माएं पीछे छोड़ जाते हों तो फिर जल्दी ही चंद्रमा भी भूत प्रेतों का ही रैन बसेरा हो जाएगा और फिर अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा के प्रेतों द्वारा मारे जाने से कोई नहीं रोक सकेगा। यदि सब कुछ ऐसा ही होता तो अमरीका और रूस वालों को अपने साथ श्रीलंका के कुछ 'स्याने' (ओझे) अपने साथ चंद्रमा पर ले जाने पड़ेंगे ताकि वहां जाकर अपने जादू टोने से चंद्रमा की धरती को भूत-प्रेतों से साफ व राकेटोंके उतरने के लिए तैयार करेंगे।

हमें विज्ञान के इस सत्य को स्वीकार करना चाहिए कि इस ब्रह्माड में हर एक वस्तु पदार्थ है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार पुराने अंतर जैसे पदार्थ और शक्ति में, पदार्थ और मन में, पदार्थवाद और आध्यात्मवाद में कुछ भी नहीं है। वे आरंभिक पदार्थ जिनमें पदार्थ बनता है, ऊर्जा के बिना कुछ नहीं। इसिलए पुरातन दार्शनिकोंका यह कथन कि मन मादा से ऊपर नहीं होता है, अब पुराना हो गया है। मन उत्पत्ति व कार्यशीलता में एक शुद्ध पदार्थ है।

नाड़ी विज्ञान के प्रसिद्ध डाक्टर वाल्टर हैस् ने, जिसको मन की कार्यप्रणाली संबंधी बहुत सी अद्‌भुत खोजें करने के कारण नोबेल पुरस्कार मिला था, आध्यात्मिक मूल्य या आध्यात्मिक गुण जैसे : प्रेम, दयालुता, करूणा आदि के पदार्थवादी रूप को सिद्ध किया है। हमने दिखाया है कि मानसिक भावनाएं जैसे कि - प्रेम, दोस्ती, नफरत, बेरहमी, दया, गुस्सा, भूख, हमदर्दी, दुख, खुशी, इच्छा, नपसंदगी एवं डर आदि को अपनी इच्छा के साथ दिमाग में विद्युत के झटके लगाकर उत्पन्न किया जा सकता है। इस वाल्टर हैस् ने सिद्ध किया है कि आध्यात्मिक मूल्य कुछ भी नहीं। ये सिर्फ तंतुओं की विद्युत रासायनिक क्रियायें ही हैं। इनको किसी ईश्वरीय शक्ति से प्रेरणा नहीं होती।

क्योंकि ब्रह्मांड पदार्थ है और पदार्थ को न तो नष्ट किया जा सकता है और न उत्पन्न इसलिए किसी शरीरवान या शरीर रहित सृष्टिकर्ता का प्रश्न उत्पन्न ही नहीं होता। सभी रासायनिक परिवर्तनों के लिए जीवित वस्तु के रासायनिक विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियों एवं वातावरण की आवश्यकता होती है, न कि किसी बुद्धिमान सृष्टिकर्ता की।

यह सत्य है कि इन आस्तिकों को उचित ढंग से उत्तर देना कोई आसान कार्य नहीं है। निस्संदेह उनको उत्तर देने के लिए, कोई कठिन प्रश्न उनसे पूछा जा सकता है। यह ईश्वर कहां से आया? आइए! हम पड़ताल करें कि सबूत, कारण उवं दलीलें कहां तक हमारा साथ देती हैं।

सबसे पहले हम अपने इर्द-गिर्द की दुनिया का अवलोकन करें, फिर ग्रह, उपग्रह सौर मंडल और फिर आकाश गंगाओं का। इस विशाल ब्रह्मांड में चारों तरफ दृष्टिपात करते हुए हमारे खगोल वैज्ञानिक सूर्य जैसे अनगिनत तारे देखते हैं। एक अनुमान के अनुसार, तारों की संख्या एक सौ हजार बिलियन है। यह बहुत बड़ी संख्या अनंत तक फैली हुई है, क्योंकि सभी तारे प्रकाश फैला रहे हैं, हमें उन्हें सौ वर्ष एवं कुछ को कई सौ हजार वर्ष पुरातन रूप में ही देख सकते हैं।

विस्तृत हो रहे ब्रह्मांड का अर्द्धव्यास एक बिलियन प्रकाश वर्ष है। यह समस्त ब्रह्मांड नहीं है, यह तो मात्र उतना ही है, जितना संसार की सबसे बड़ी दूरबीन से देखा गया है। ब्रह्मांड के उस भाग में, जहां अभी तक नहीं देखा जा सका, बहुत सारी आकाश गंगाएं हैं जिनकी खोज रेडियो दूरबीनों की सहायता से उनके ग्रहों से आने वाली किरणों से हुई हैं।

देखे जा चुके ब्रह्मांड में एक सौ मिलियन से कम आकाश गंगाएं नहीं हैं। इनमें से कुछ तो हमारी आकाश गंगा से भी बड़ी हैं, जिसमें हमारा सौर मंडल मात्र एक छोटा सा कण है। यह आकाश गंगाएं बहुत ही तेज वेग से एक-दूसरे से दूर हट रही हैं।

एक अनुमान है कि हमारी आकाश गंगा में ही दस लाख से ज्यादा सौर मंडल हैं। इन ग्रहों पर वही तत्व हैं जो हमारी पृथ्वी पर हैं। इस विचार को छोड़ा नहीं जा सकता कि यदि पृथ्वी जैसी स्थिति वहां भी हो तो इन लाखों ग्रहों पर भी पृथ्वी के जीवों के साथ मिलते-जुलते जीव होते।

पदार्थ के इन विशाल पिण्डों में, तत्व अनवरत् रूप से टूट व बन रहे हैं अब हम गंभीरता से स्वयं विचार करें कि क्या कोई ऐसा इंजीनियर है, जिसने

इस समस्त ब्रह्मांड के पदार्थ की रचना की है? इसका सिर्फ एक ही उत्तर है–नहीं।

हम पूछ सकते हैं कि प्रकृति का क्या कार्य है? समस्त प्रकृति का अवलोकन करने के बावजूद हम उचित उत्तर नहीं खोज सकते। इस सूक्षम कण, जिसे पृथ्वी कहा जा सकता है और जिस पर हम रहते हैं, के ऊपर घटनाएं इस तरह घटित होती हैं जैसे जंगल में वृक्ष उगते हैं यह विकास शताब्दियों से जल की काई से हुआ है। इन्होंने सूर्य से शक्ति प्राप्त की है। फिर प्रकृति की ही एक नष्ट करने वाली ताकत तूफान इनको नष्ट कर देती है। हम पूछते हैं कि फिर तूफान के इस नुक्सान का क्या अभिप्राय है? उत्तर नाकारात्मक ही होगा। ऐसी स्थितियां उन घटनाओं का ही परिणाम हैं, जो ऐसी परिस्थितियों में ही संभव है।

पिछले लगभग 20 लाख वर्ष पूर्व मानव जंगली जानवरों की तरह रहता था और हाथ में डंडा व नोकदार भाला लेकर शिकार की खोज में भागता रहता था। वह चंद्रमा, मर्करी, शुक्र ग्रह व बृहस्पति ग्रह जैसे ग्रहों की की पूजा करता था। यद्यपि आज के बुद्धिमान मानव ने चंद्रमा पर विजय प्राप्त कर ली है, परन्तु अभी भी इस मानव में आदि मानवों एवं जानवरों के कुछ पुरातन गुण मौजूद हैं।

वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की सबसे प्राचीन चट्टान की आयु तीन बिलियन वर्ष बताई है। सो पृथ्वी की आयु तीन बिललियन वर्ष से ज्यादा अर्थात 4.5 बिलियन वर्ष के करीब होनी चाहिए। बाईबल में पृथ्वी की आयु 5975 वर्ष लिखी है। इस तरह यह पृथ्वी की भौगोलिक आयु का 1/20 लाखवां भाग है।

हम सभी प्रकृति की सुंदर वस्तुओं पर आश्चर्यचकित होते हैं, परन्तु यदि हम अपने इर्द–गिर्द देखें तो हमें प्रकृति में सुंदर वस्तुओं के साथ–साथ बुरी वस्तुएं भी मिलती हैं। यदि इनका कोई सृजनकर्ता है, जिसने सुंदर व कुरूप, अच्छी व बुरी वस्तुएं बनाई हैं, तो फिर दयालू ईश्वर ने क्यों ये बुरी वस्तुएं बनाई? यदि ब्रह्मांड में घटने वाली हर एक घटना ईश्वर द्वारा पहले ही निश्चित है तो फिर उसको सभी बुरी घटनाएं जैसे कत्ल, दुख, युद्ध, भुखमरी, प्लेग, बलात्कार एवं डाकों इत्याादि का भी जिम्मेदार होना चाहिए। परन्तु नहीं! सभी धर्मो ने इसको दो तरीकों से लिया है। यद्यपि ईश्वर सर्व–शक्तिमान है, परन्तु मानव भी जिम्मेदार है। उसकी इच्छा आजाद है, इसलिए वह अपनी बुराइयों एवं गलत कार्यो का स्वयं उत्तरदायी है। क्या यह उस बुद्धिमान सृजनकर्ता पर आक्षेप नहीं है? उसने मनुष्य को बुरे कार्य करने की आजाद इच्छा क्यों दी?

यदि किसी व्यक्ति की पत्नी, जो लेट हो जाने के कारण हवाई हादसे से बच गया हो, ईश्वर को इसलिए धन्यवाद देती है कि उसने उसके पति की जान बचाई है, तो क्या उन औरतों को जिनके पति इस हवाई हादसे में मर गए हों, ईश्वर को धिक्कारना नहीं चाहिए, क्योंकि उसकी मृत्यु का जिम्मेदार भी तो ईश्वर ही है। यदि कोई सृजनकर्ता ईश्वर है, तो क्या वह बांगलादेश में मरने वाले हजारों लोगों की मृत्यु का जिम्मेदार नहीं, क्योकि हैजे के कीटाणु उसी ने तो उत्पन्न किए होंगे?

हम मनुष्य की आंख द्वारा वस्तुओं का प्रतिबिम्ब लेने और शिरा द्वारा दिमाग को यह प्रतिबिम्ब पहुंचाने की क्रिया पर बहुत ही हैरान होते हैं। हम सोचते हैं कि परमात्मा हमेशा मनुष्य की भलाई में ही दिलचस्पी लेता है। आइए! हम सांप के दांतों का भी अवलोकन करें, जो डाक्टर की सूईयों की तरह अंदर से खोख्ले व तीखे होते हैं। ताकि बेसहारा शिकार के अंदर जहर पहुंचा सकें। उन सहस्त्रों लोगों के बारे में सोचें, जो हर वर्ष भूचाल, आंधी तूफान व ज्वालामुखी पर्वतों के लावे से मारे जाते हैं। यदि ये एक सृजनकर्ता के कार्य हैं तो क्या उसे प्राकृतिक विपत्तियों के कारण मारे जाने वाले बेकसूर व बेबस लोगों की मृत्यु की जिम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए?

क्या टीलहार्ड–डी–चार्डिअन का यह विचार सत्य है कि जीव विकास एक बुद्धिमान सर्वशक्तिमान के नेतृत्व में चलता है? प्रकृति के शेष सभी विकास की तरह, जीव विकास भी एक अन्धी प्रक्रिया है, जिसमें रोगी व निरोगी दोनों ही प्रकार के जीव पैदा होते हैं। यह सब भिन्न–भिन्न उत्पत्ति एवं वातावरण के फलस्वरूप होता है। इस लंबे जीव संघर्ष में निरोगी

जीवित रहते हैं और रोगग्रस्त मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। पृथ्वी के पाषाण युग से प्रमाण मिलता है कि बहुत से जीव अब नहीं हैं। इसलिए जीव विकास से यह बात स्पष्ट होती है कि सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर ऐसा कुछ नहीं कर सकता। फिर यह कहना कि जीव विकास किसी अज्ञात बुद्धिमान के नेतृत्व में हो रहा है, बिल्कुल मूर्खता है।

वर्तमान युग के कुछ आध्यात्मवादियों ने यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि बाईबल में लिखी गई बात कि परमात्मा का एक दिन मनुष्य के लाखों वर्षों के बराबर होता है, आज के परिणामवाद से मेल खाती है। ये लोग बाबा आदम की परिहासपूर्ण बात को भूल जाते हैं। जब उसे अपनी पत्नी ईव को प्राप्त करने के लिए लंबा समय इंतजार करना पड़ा था। फिर तो उसने लाखों वर्षो तक इंतजार किया होगा, क्योंकि उसको आदम के साथ उसी दिन तो पैदा नहीं किया गया था। क्योंकि रचना के दिनों में सुबह शाम होती थी और हमारी पृथ्वी को एक चक्कर को पूरा करने के लिए लाखों ही वर्ष लग जाने चाहिएं थे।

टीलहार्ड-डी-चार्डिन का विचार है कि मनुष्य परमात्मा की रचना का अंतिम ध्येय है और जीव विकास का चरम बिंदू। ब्रह्मांड के बारे में उसका विचार सिर्फ ईश्वर के पक्ष में ही नहीं, बल्कि भू-केंद्रीय व मानव-केंद्रीय भी है। चार्डिन यद्यपि एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक है, परंतु फिर भी वह गिरजे के उन विचारों से ऊपर न उठ सका, जो बचपन में उसके मन में भर दिए गए थे कि परमात्मा ने मनुष्य को अपना प्रतिबिम्ब बनाया और इस ब्रह्मांड में हर वस्तु उसके लाभार्थ है।

यदि मानव, इस ग्रह पर सब जीवों से श्रेष्ठ है, तो क्या इसका अभिप्राय है कि पृथ्वी पर प्रकृति द्वारा और जीव विकास नहीं होगा? यह सोचना गलत है कि ब्रह्मांड अपने जीव विकास के अंत तक ब्रह्मांड में केवल पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है, जिस पर परमात्मा ने अपनी विशेष 'रचना' के रूप में देवताओं जैसा आदमी रहने के लिए छोड़ दिया है।

जब कोई इस विशाल ब्रह्मांड का अवलोकन करता है जिसमें हमारी पृथ्वी धूल के कण जैसी है, तो वह यह भी सोचता है कि जिस सर्वशक्तिमान ने इतना कुछ उत्पन्न किया है, उसको पृथ्वी और उसके मानव में लेश-मात्र ही दिलचस्पी होगी। सर्वज्ञाता ईश्वर ने मानव के लिए इतना विशाल ब्रह्मांड क्यों बनाया? जिसका वह एक खरबवां भाग नहीं दे सकता। यह बात समझ में नहीं आती।

चिकित्सा विज्ञान में मनुष्य अपने ज्ञान को बढ़ाकर प्रतिदिन परमात्मा पर विजय प्राप्त कर रहा है। उन लाखों ही लोगों को बचाकर, जिनको परमात्मा ने मौत का संदेश भेज दिया था, मनुष्य उसकी अवज्ञा कर रहा है। और वह आज उत्पत्ति विषयक शास्त्र एवं चुनाव विधि से अच्छे मनुष्यों को अच्छे जानवरों को व अच्छे पौधों को पैदा कर रहा है और प्रकृति से टक्कर लेकर उसके भयानक प्रभावों को कम कर रहा है।

नस्ल सुधार, टैस्ट ट्यूब बेबी और जन्म से पहले ही बच्चे के सैक्स के बारे में बताना, ऐसी नई खोजें हैं, जिनका ईश्वर को भी ज्ञान नहीं था।

यद्यपि धार्मिक लोग इसे पसंद करें या न करें, परन्तु वह दिन दूर नहीं जब मानव नस्ल सुधार के विभाग का मंत्री यह निर्णय करेगा कि बच्चे पैदा करने का लाईसैंस कौन-कौन से व्यक्तियों को दिया जाना चाहिए? भविष्य में रोगी व्यक्तियों को शारीरिक आनंद मनाने का तो अधिकार होगा, लेकिन बच्चे तब तक पैदा नहीं कर सकेंगे, जब तक वे मानव नस्ल सुधार मंत्री से आशय का स्वीकृति पत्र नही ले लेंगे।

क्या ईश्वर का अस्तित्व है? ईश्वर या देवताओं के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए कोई भी ठोस प्रमाण नहीं है?

अनमोल वचन

'कितनी ही चीजें हैं जिन पर हम कल विश्वास करते थे परन्तु आज परी-कथाएं बताते हैं'

-माईकल डी मोन्टेन (1533-1592)

कब खुलेगी आंखें ?

आर.पी. गांधी
9315446140

आए दिन समाचर पत्रों में बाबाओं की काली करतूतों के बारे में पढ़ने को मिलता है और इलैक्ट्रोनिक मीडिया में इनकी जलील-घटिया हरकतें देखने को मिल जाती हैं। आसाराम जैसे लोग जो कभी अजमेर शरीफ में टांगा चलाते थे। ईश्वर के दलाल बन जनता को स्वर्ग के सपने दिखाना और ईश्वर के दर्शन करवाने के लालच में भोली-भाली जनता की मेहनत की कमाई का शोषण करते हुए कुछ दिनों के अंदर अरबपति बन गए।

सरकारी जमीनों पर नाजायज कब्जा कर अपने आश्रम खड़े कर लिए। इस तरह से 450 के करीब लूट के स्थान जिनको आश्रम कहा जाता है बना लिए गए। शिक्षा के लिहाज से आठ कलास से ज्यादा पढ़ा नहीं। जनता में कई तरह की भ्रांतियां पैदा कर भावनाओं से खिलवाड़ और पर्दे में मासूम बच्चियों से रेप जैसे घटिया हरकतें देखने व पढ़ने को मिलती हैं। इस समय जोधपुर जेल में दिन काट रहा है और भक्त जन उसके जन्म दिन पर जेल की दीवार के सामने उसकी आरती उतार रहे थे और दण्डवत प्रणाम कर रहे थे। कब खुलेंगी ऐसे लोगों की आंखें? जितनी तर्क शक्ति व विचार शक्ति पर पट्टी बंधी है। आसाराम की पोती जैसे बच्ची के साथ बलात्कार या दुष्कर्म के कारण जेल में बंद है। फिर भी लोग यह जानकर भी ऐसे लोगों से घृणा क्यों नहीं करते? उल्टा उनकी पूजा करते हैं। उसका बेटा नारायण साईं भी बलात्कार के दोष में पुलिस से बचने के लिए इधर-उधर भागता रहा। अंत में पिपली में पकड़ा गया और वह भी अब जेल में है। न जाने पहले भी कितनी बच्चियों के साथ कुकर्म किया होगा। हम उस बच्ची को प्रणाम करते हैं, जिसने आगे बढ़कर समाज के डर की परवाह न करते हुए आसाराम को सलाखों के पीछे भेजा है। इन बदमाशों के हाथ इतने लंबे है कि जेल में रहते हुए भी तीन गवाहों का मर्डर करवा दिया।

ऐसे ही बाबा रामपाल जो सिंचाई विभाग में एक जूनियर इंजीनियर के पद पर कार्य कर रहा था। सतलोक आश्रम के नाम पर पांच मंजिला महल खड़ा कर लिया। कई दिन पुलिस के साथ झड़प चली। इन दिनों सलाखों के पीछे है। इन दिनों राम रहीम बहुत ही चर्चित हुआ है। 2002 में एक साध्वी ने दिलेरी करते हुए इसके काले कारनामों को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को चिट्ठी लिखकर बेनकाब किया था और समाज सुधार संगठनों को भी इसकी प्रतिलिपि भेजी गई। 15 साल की खोजबीन के बाद इसको जेल भेजा गया, जहां पर आए दिन साध्वियों की इज्जत के साथ खिलवाड़ करता था। इसने चार सौ पुरुषों को नपुंसक बनाया। रणजीत सिंह जो कभी उसके डेरे का अनुयायी था और छत्रपति जो एक समाचार पत्र के सम्पादक थे, उनका कत्ल करवा दिया। दो साध्वियों के प्रयासों से इसको 20 साल की सजा मिल चुकी है और कत्ल के केस अभी चल रहे हैं। कई लोगों की जमीन हड़प की हुई है। हर रोज इसके बारे में नई-नई कहानियां, इसकी गंदी करतूतें देखने को मिल रही हैं। मगर भक्तजन अभी अपनी आंखें बंद करके सच्चाई की शक्ति नहीं जुटा पा रहे। हनीप्रीत साध्वी जिसको यह अपनी मुंहबोली बेटी कहता है, परन्तु हनीप्रीत का पति इस पर यह दोष लगा रहा है कि हनीप्रीत के साथ शारीरिक संबंध हैं। कई दिन वह पुलिस के डर से इधर-उधर भागती रही। अंत में पकड़ी गई। इस वक्त अम्बाला जेल में बंद है और राम रहीम रोहतक जेल में अपनी करतूतों का फल भोग रहा है।

पिछले दिनों फलाहारी बाबा का यह कहना कि मैं अनाज नहीं खाता, केवल फल खाता हूं। पुलिस के द्वारा बंदी बनाया गया है। 21 साल की शिष्या से बलात्कार करता हुआ पकड़ा गया और अब जेल में बंद है।

कुछ दिन पहले गाजियाबाद से ललिता प्रसाद शास्त्री भी बलात्कार करते हुए पुलिस के

चंगुल में फंस गया, जिस महिला के साथ बलात्कार कर रहा था। उसने उसका वीडियो थाने में जमा किया जिससे वह अब जेल की हवा खा रहा है।

ऐसे ही दिल्ली से इच्छाधारी बाबा अनैतिक कार्यो के दोष में दुबारा पुलिस की पकड़ में आया और जेल की सलाखों के पीछे बंद है। कुछ समय पहले दक्षिण के शंकराचार्य अपने मैनेजर को मरवाने के दोष में जो उसकी कमजोरियों से परिचित हो चुका था। इसलिए उसका कत्ल करवाया था। आखिर उसको भी जेल जाना पड़ा।

यह हमने चंद उदाहरण पेश किए हैं, जबकि हजारों की गिनती में यह ढोंगी लोग जनता की भावना से खिलवाड़ करते हैं और थोड़े दिनों में ही अरबों रुपए इक्ट्ठा कर लेते हैं जैसे निर्मल बाबा ने कई धंधे किए, परन्तु सफलता न मिली। अंत में वह भी बाबा बन अरबों की कमाई कर रहा है। लोगों से समोसे और चटनी खिलाने की बात करता है और तीसरे नेत्र की बात करता है और अंधविश्वासी लोगों की भीड़ मोटी फीस देकर अपने दुखों का निवारण करवाने के लिए हाथ जोड़ कर दरबारों में खड़ी नजर आती है।

विज्ञान के जमाने में इन अंधभक्तों को देखकर तरस भी आता है, क्रोध भी आता है। तरस इसलिए कि पढ़े-लिखे होने के उपरांत भी इन बहरूपियों के चंगुल में फंस जाते हैं। उन्हें अपने खून-पसीने की कमाई उनके चरणों में डालते हैं। कब खुलेंगे ऐसे लोगों की आंखें, जोइस विज्ञान के जमाने में अंधता भरा जीवन जी रहे है। आज इस धरती का मनुष्य चांद तक जा पहुंचा है और मंगल तक पहुंचने की योजनाएं बनई जा रही हैं अंतरिक्ष यान दूर तक खगोल को समझने का प्रयास कर रहे हैं। पनडुब्बी सागरों की गहराई तक नाप रही है और वहां के अनोखे एवं विचित्र जीवों की जानकारियां प्राप्त कर रहे हैं। कुछ ऐसी संस्थाएं हैं। उदाहरण के लिए तर्कशील सोसायटी एक सोच नई सोच संस्था पाखंडियों का पर्दाफाश करने में योगदान दे रही। यहां तक कई साथियों को बलि देनी पड़ी। डा. नरेंद्र दाबोलकर और कलबुर्गी को भी अपने जीवन से हाथ धोने पड़े। ऐसे सुधारकों को कट्टरपंथियों की धमकी मिलती है। थोड़े दिन पहले गौरी-लंकेश के घर में घुस कर गोली का निशाना बना दिया गया। कसूर क्या था उसका वह ऐसे सियारों के पाखंडों को नंगा कर रही थी।

हरियाणा तर्कशील सोसायटी के पूर्व प्रधान राजाराम हंडयाया की राम रहीम के सेवकों ने बुरी तरह से पिटाई कर दी। यमुनानगर इकाई से आर.पी. गांधी पर चार बार हमला किया गया और उसे आठ साल तक आठ साथियों सहित झूठे मुकद्दमें का शिकार होना पड़ा।

तर्कशील पथ के संपादक बलवंत सिंह को डेरा सच्चा सौदा के अनुयाईयों द्वारा कई बार जान से मार देने की धमकियां मिलती रही हैं तथा एक अन्य कुरड़ी वाले महाराज ने उन पर वर्ष 2002 से लेकर अब तक 10 झूठे मुकद्दमें दायर किए हैं, जिनमें से 6 मुकद्दमें वे जीत चुके हैं और शेष अभी भी चल रहे हैं।

तर्कशील सोसायटी की पत्रिका तर्कशील पथ में बाबाओं के काले कारनामों के नाम से कालम छपते रहते हैं, जिसमें इन बाबाओं की करतूतों का पर्दाफाश किया जाता है, परंतु लोगों की आंखें नहीं खुलती। कारण बचपन से ही कुछ ऐसे संस्कार बना दिए जाते हैं कि जनता उसकी सोच से बाहर नहीं आ पाती। उदाहरण के लिए गुर बिन ज्ञान नहीं, साधु निंदा घोर पाप, गुर बिन गति नहीं, ऐसे एक दोहा है। जिसका उच्चारण भक्तजन करते है। गुरु गोबिंद दोनों खड़े जिसके लागू पाएं, बलिहार गुरु अपने जिस गोविंद दियो मिलाए। इसमें भी ईश्वर से ज्यादा गुरु की प्रशंसा की गई है। यह सारे संस्कार जीवन में कुछ इस तरह रसबस जाते हैं कि साधारण पुरुष इनसे बाहर नहीं आ पाता। इन घटिया बाबाओं की काली करतूतों को देखकर ही जनता की आंखें नहीं खुलती।

अब समय की सबसे बड़ी मांग है वैज्ञानिक युग में अगर हम सच्चाई को नहीं समझेंगे, तब कब समझेंगे। हमें श्रद्धा और आस्था से बाहर हो सच्चाई को समझना होगा। तर्क के सहारे जो कुछ हम पढ़ते हैं, सुनते हैं, देखते हैं, वह परखना है। तब जाकर विश्वास करना चाहिए। सच को जानने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं। पहली तर्क, दूसरा सुबूत तीसरा परख। 2500 वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध ने भी यह कहा था कि जब तक आप किसी बात को परख पर नहीं उतार लेते, उस पर विश्वास मत करो। अगर मैं कुछ कहता हूं। उसकी सच्चाई जानने के लिए भरपूर

प्रयत्न करो। वरना् ये ढोंगी पाखंडी बाबे जनता के दिलो, दिमाग पर छाए रहेंगे और जनता की मेहनत की कमाई का शोषण होता रहेगा और इन पाखंडियों के डेरे दिन-दोगुनी और रात चौगुनी उन्नति करते रहेंगे। ईश्वर के नाम पर इनकी दलाली बदस्तूर बनी रहेगी। अब आंखें खोलो, कब तक आंखें बंद रखोगे। हमारे पिछड़ेपन का कारण भी यही है कि अपनी बुद्धि का प्रयोग न कर बंद आंखों से इस संसार को देखने का प्रयत्न करते हैं आंखों पर बांधी हुई पट्टी को खोल दो और सच्चाई को जानकर जन जीवन को नई दिशा देनी होगी। बहुत लुट गए थे, कब तक लुटना चाहते हो। स्वर्ग के लालच को त्यागो और नर्क के डर से बचो। इन दोनों विचारों का सहारा बाबा लोगों को पथभ्रष्ट कर रहे हैं। जहां भी आपको कई ऐसे घटिया व्यक्ति के बारे में जानकारी मिलती है, जनता में उसके पाखंड का पर्दाफाश करो। देखने में आता है कि एक आम व्यक्ति मेरे अंदर देवी देवता का आगमन होता है और कई तरह की नोटंकी भी करता है, जिससे भोली भाली जनता उसके चक्कर में फंस जाती है और अपना सब कुछ लुटा बैठती है। अंत में इस तरह के बाबे बलात्कारी सिद्ध होते हैं दुःख तो इस बात का है कि सब देखकर भी जनता सच्चाई को देखकर समझने का प्रयत्न नहीं करती। हजारों की गिनती में हमारे देश में छोटे-बड़े डेरे जो सही मायने में कुछ पाखंड की दुकाने हैं और ईश्वर को मिलाने का षड्यंत्र रचते हैं। आम जनता उसके पाखंड को न समझ कर उनके चेले बन जाते हैं और उनकी घटिया हरकतों पर अपना जीवन न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं हर शहर में कोई अच्छा शिक्षालय हो या न हो ऐसे दुराचारी पाखंडी का डेरा अवश्य मिल जाता है। सत्संग के नाम पर झूठ का पाठ पढ़ाया जाता है। विशेषकर महिलाएं जल्दी ही ऐसे धोखेबाजों के चक्कर में आ जाती है। घर में काम से बेशक मन चुराए, परन्तु डेरे की साफ-सफाई में पूरे लगन से करती है और बाबा लोग इस तरह से जनता की कमाई पर चलते हैं। और ऐश्वर्य का जीवन जीते हैं।

अगर आप अब नहीं समझोगे, तो कब समझोगे। आंखों से पट्टी उतार वास्तविकता को समझने का प्रयास करें और ऐसी चलने वाली दुकानों पर ताले लगाने के लिए पुलिस की सहायता से ताले लगवाने का प्रयत्न करें। देखने को यह भी मिलता है कि बड़े-बड़े अफसर, मिनिस्टर इनके कदमों में पड़े रहते हैं और दान देते हैं जैसे राम बिलास शिक्षा मंत्री हरियाणा ने राम रहीम को 51 लाख रुपए भेंट किया था।

०००

पूरी दक्षिणा ना मिलने पर ब्राह्मण ने बीच में रोके फेरे

गोहाना 19 फरवरी (अरोड़ा)ः गोहाना के एक गांव में एक अजीबो गरीब मामला सामने आया है। विवाह में फेरों के बीच में में ही ब्राह्मण दान दक्षिणा मांगने लगा। परिजनों ने कुछ दान दे दिया लेकिन ब्राह्मण ने इसे कम बता कर फेरे बीच में ही रोक दिए। इस पर गांव के लोगों ने ब्राह्मण की धुनाई कर दी। बाद में ग्रामीणों ने दोनों पक्षों में समझौता करवा दिया। गांव बरोदा में एक दलित समाज में एक लड़की की शादी थी। बारात आ गई। परिवार ने फेरे करने के लिए दूसरे गांव में एक ब्राह्मण को बुला लिया। फेरों के बीच में ही वह ब्राह्मण दान-दक्षिणा के 2100 रूपये मांगने लगा। परिजनों ने उसे 1100 रूपये दे दिए। इस पर ब्राह्मण ने एतराज जताया और पूरे पैसे मांगे। परिजनों ने दान दक्षिणा को अधिक बताया। पूरे पैसे न मिलने पर ब्राह्मण ने बीच में ही फेरे रोक दिए। इस पर गांव व परिवार के लोग भड़क उठे। और ब्राह्मण की धुनाई कर दी। बाद में दोनों पक्षों में समझौता हो गया और शादी पूरी हो गई।

-अमर उजाला- 20-2-2018

स्वतंत्र चिंतन

मिथ्या-विश्वास

कर्नल इंगरसोल

एक कदम और आगे चलें-...

जब कि हमारे पूर्वजों ने मानवता के शत्रु असुरों ने अंधकार को पाट दिया, वे सुरों अर्थात् देवताओं में भी विश्वास रखते थे। इन देवताओं का परमात्मा से वही संबंध था, जो दैत्यों का शैतान सें ये देवता श्रद्धालुओं को मार (शैतान) के फंदों से बचाते थे। जो तंत्र-मंत्र धारण करते थे, जो मालाओं का जप करते थे, जो व्रत रखते थे, ये देवता-गण उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी अपने सिर ले लेते थे।

इन देवताओं की कई श्रेणियां थी। कुछ पुरुष या स्त्री रहे थे, कुछ कभी इस संसार में नहीं रहे, कुछ आरंभ से ही देवता रहे थे। कोई भी यह जानने का दावा नहीं कर सकता कि ये देवता-गण ठीक-ठीक क्या थे, किस प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे और वे आदमियों के दिमाग को जिस प्रकार प्रभावित करते अथवा उस पर अधिकार प्राप्त करते थे।

यह विश्वास किया जाता था कि सभी दुष्टात्माएं शैतान के अधीन थीं और सभी देवता-गण परमात्मा के अधीन। यह भी विश्वास किया जाता था कि वास्तव में परमात्मा का राज्य तो सभी पर है कि स्वयं शैतान भी परमात्मा के पुत्रों में से एक है।

हमारे पूर्वजों का विश्वास था कि वे प्रार्थना, यज्ञ और व्रतों के द्वारा इस परमात्मा और इन देवताओं की सहायता प्राप्त कर सकते हैं। वे हर विषय में तर्कसंगत नहीं है। वे यह नहीं मानते थे कि शैतान ही सभी बुराइयों की जड़ है। वे समझते थे कि परमात्मा कभी-कभी बाढ़, अकाल, प्लेग और भूकंप आदि भेजकर उन्हें अनेक विश्वास के लिए दंड देता है। वे घुटने टेककर परमात्मा से प्रार्थना करते थे कि वह उन पर दया दिखाए। उनकी प्रार्थनाओंका कहीं कुछ असर न होता था। वे शून्य आकाश में विलीन हो जाती थीं। बेचारे हमारे पूर्वज किसी विज्ञान के बारे में कुछ भी न जानते थे। सभी घटनाओं की तह में सुरों अथवा असुरों का हाथ था। उनके लिए किसी ऐसी चीज का जिसे हम प्राकृतिक कारण कह सकते हैं, कुछ अर्थ न था। सारा संसार एक युद्धक्षेत्र था, जिसमें स्वर्ग और नरक की सेनाएं आपस में लड़ती रहती थीं।

4

जो विचारवान हैं, बुद्धिमान हैं, वे शैतान के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते। वह इस बात का अनुभव करता है कि भूत-प्रेत और दुष्ट-आत्माएं केवल अज्ञानी और भयभीत मनुष्यों के मानस पुत्र हैं। वह जानता है कि किस प्रकार इन हानिकर कपोल-कल्पनाओं की रचना हुई है। वह जानता है कि सभी धर्मो में इनका क्या स्थान रहा है। वह जानता है कि शताब्दियों तक इन भूत-प्रेतों, दुष्ट आत्माओं में विश्वास करना सर्वव्यापक बात थी। वह जानता है कि बातों में पुरोहित का भी उतना पक्का विश्वास था, जितना किसान का। उन दिनों अत्यंत शिक्षित और अत्यंत अशिक्षित मनुष्य समान रूप में मूर्ख थे।

इन विश्वासों के पीछे न कोई प्रमाण है और न रहा है। इस तरह के विश्वासों का कोई आधार नहीं है। गलती, अतिश्योक्ति और झूठ भी इस प्रकार के विश्वासों के एकमात्र आधार रहे हैं। गलतियां स्वाभाविक थीं, अतिश्योक्तियां प्रायः अनजाने

में हुई थीं और जो मिथ्या-कथन थे वे सामान्तया ईमानदारी से बोले गए थे। इन गलतियों, इन अतिश्योक्तियों, इन झूठों के पीछे चमत्कार का प्रेम था। इन्हें सुनने के लिए आश्चर्य के कान और आंखें खुली थीं और खुला था अज्ञान का मुंह।

5

पुराने धर्म-प्रधान दिनों में पृथ्वी चपटी मानी जाती थी-एक थाली की तरह। ऊपर भगवान का घर था और ठीक नीचे शैतान का निवास। परमात्मा और उसके देवता मकान के ऊपर के तल्ले पर रहते थे, भूत, प्रेम और शैतान नीचे के तल्ले में और मनुष्य बीच के दूसरे तल्ले पर।

उस समय वे जानते थे कि स्वर्ग कहां पर है। उन्हें स्वर्ग की हा हा हू हू लगभग सुनाई देती थी। वे यह भी जानते थे कि नरक कहां है? उन्हें नरक का चीत्कार लगभग सुनाई देता था और गंधक की आग की लपटों में गंध आती थी। ज्वालामुखी-पर्वतों को वे धुआं निकालने की चिमनियां समझे थे।

इन सुनहरे दिनों में पादरी पुरोहितों को स्वर्ग-नरक के बारे में पूरा-पूरा ज्ञान था। वे जानते थे कि परमात्मा संसार के लोगों को आशा दिलाकर, भय दिखाकर तथा पुरस्कार और दण्ड देकर उन पर शासन करता है। उसका पुरस्कार अनंत होता है और उसी प्रकार दण्ड भी। परमात्मा की यह मंशा नहीं थी कि आदमी के दिमाग का ऐसा विकार हो जाए कि वह उचित और अनुचित के भेद को समझ सके। उसने आदमी को केवल अज्ञानी बने रहने और आज्ञा-पालक बने रहने की शिक्षा दी। आज्ञा -पालन के बदले में उसने उन्हें अनंत सुख देने की बात कही। उसे नम्र लोग-घुटने वाले और रेंगने वाले प्रिय लगते थे। संदेह करने वाले, विचारकों और दार्शनिकों से उसें घृणा थी। उनके लिए उसने सदाकालिक कारागृह बनाया, जहां वह हमेशा के लिए अपनी घृणा रूपी क्षुधा को संतुष्ट कर सके।

लेकिन वह स्वर्ग और नरक कहां है? अब हम जान गए हैं कि न तो स्वर्ग ही पृथ्वी के ठीक ऊपर है और न नरक ही पृथ्वी के ठीक नीचे। दूरवीक्षण यंत्र ने प्राचीन स्वर्ग को समाप्त कर दिया है और अपनी धुरी के इर्द-गिर्द घूमने वाली पृथ्वी ने प्राचीन नरक की लपटों को शांत कर दिया है। धार्मिकों के ये देश, यह काल्पनिक संसार अदृश्य हो गए हैं? न तो कोई जानता है और न कोई यह जानने का दावा ही करता है कि स्वर्ग कहां है? और नरक कहां है? अब धार्मिक लोगों ने कहना आरंभ किया है कि नरक और स्वर्ग स्थानों के नाम नहीं है, किंतु वे मन की अवस्थाओं के नाम हैं।

सुरों और असुरों में विश्वास लगभग हर जगह विद्यमान रहा है। भलाई के पीछे आदमी ने एक देवता की कल्पना की, बुराई के पीछे एक दैत्य की। स्वास्थ्य, सुदिन और अच्छी पैदावार के पीछे एक भला देवता था। रोग, दुर्भाग्य और मृत्यु के पीछे एक दुष्ट दैत्य।

क्या सुरों और असुरों के अस्तित्व का कोई प्रमाण है? परमात्मा और शैतान दोनों के अस्तित्व का जो प्रमाण दिया जाता है, वह लगभग एक ही है। दोनों का अस्तित्व ही एक अनुमान मात्र है, दोनों एक 'शायद' मात्र हैं। वे कभी किसी को दिखाई नहीं दिए, वे अदृश्य हैं और उन्होंने किसी मनुष्य के इंद्रिय-गोचर होने का साहस नहीं किया। एक बुढ़िया का यह कहना-'कोई न कोई शैतान तो होगा ही, क्योंकि जो तस्वीरें शैतान की शक्ल की बनाई जाती हैं। वे ठीक उसी की शक्ल की होती हैं' जितना तर्क-पूर्ण हमारे धर्माचार्यो का कथन होता है।

अब कोई समझदार आदमी किसी शैतान के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता, कोई उससे डरता नहीं बहुत से लोगों ने, जो कुछ विचार करते हैं, अब साकार परमात्मा की बात कहनी छोड़ ही दी है और ईश्वर के कर्तृत्ववाद की भी। अब वे अज्ञात और अनंत-शक्ति शब्दों का उपयोग करने लगे हैं।

जो पुरुष और स्त्रियां प्रमाण की चिंता करती हैं, जो सत्य बात जानना चाहती हैं, उन्हें शकुनों की परवाह नहीं होती, चमत्कारों की परवाह नहीं होती, अच्छे तथा बुरे दिनों की परवाह नहीं होती, जंत्रों और मंत्रों की परवाह नहीं होती, चंद्र-ग्रहण तथा सूर्य-ग्रहण आदि की परवाह नहीं होती, अच्छी-बुरी आत्माओं की परवाह नहीं होती, शैतान और परमात्मा

की परवाह नहीं होती। ऐसे लोग किसी सामान्य अथवा विशेष दैवी शक्ति में विश्वास नहीं करते, जो अच्छे आदमियों को बचाती है, रक्षा करती है और उनका पालन करती है तथा दुष्टों को दंड देती है। वे यह विश्वास नहीं करते कि समस्त मानव जाति के इतिहास में कभी एक भी प्रार्थना स्वीकृत हुई है। वे मानते हैं कि जितने भी बलिदान दिए गए हैं, सब व्यर्थ दिए गए हैं और जितनी भी सुगंधि जलाई गई है, सब आकाश में व्यर्थ उड़ गई है। वे यह नहीं मानते कि संसार की उत्पत्ति और रचना आदमी के लिए हुई थी, ठीक वैसे ही जैसे वे यह नहीं मानते कि संसार की उत्पत्ति और रचना कीड़ों-मकोड़ों के लिए हुई थी। हर ओर एक योजना दिखाई देती है-भलाई के लिए योजना, बुराई के लिए योजना। हर ओर उपकार भी है, अपकार भी है-कोई किसी को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील है, कोई किसी के विनाश मे रत है। प्रत्येक वस्तु मैत्री और शत्रुता से घिरी हुई है-उस प्रेम से जो रक्षा करता है और उस घृणा से जो मार डालती है। योजना, विकास और विनाश में समान रूप से दिखाई देती है और दिखाईदेती है सुख तथा दुख में। प्रकृति एक हाथ से निर्माण करती है, दूसरे हाथ से विनाश। उसके हाथ में तलवार और ढाल दोनों हैं। तमाम जीवन मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा है और तमाम मृत्यु वापस जीवन की ओर।

हम जीवन अैर मृत्यु की लहर और प्रवाह पर दृष्टि डालते हैं। यह वह महान नाटक है जो हमेशा होता रहता है, जहां पात्र अपना-अपना पार्ट अदा करके अदृश्य हो जाते हैं। वह महान नाटक, जिसमें ज्ञानी-अज्ञानी सभी को अपना पार्ट करना होता है। बिना किसी पूर्व अभ्यास के और बिना नाटक के किसी कथानक अथवा उसके किसी उद्देश्य के ज्ञान के। दृश्य बदलता है, कुछ पात्र चले जाते हैं और दूसरे चले आते हैं। चारों ओर रहस्य ही रहस्य है। हम समझने का प्रयत्न करते हैं तो देखते हैं कि एक बात की व्याख्या दूसरी का खंडन करती है। एक परदा हटता है, उसी के पीछे दूसरा परदा है। सभी चीजें समान रूप से आश्चर्यकर हैं। पानी की एक बूंद तमाम समुद्रों जैसी आश्चर्यकर है, बालू का एक कण समस्त संसार की तरह, चित्रित परों वाली एक तितली समस्त प्राणियों की तरह और एक अण्डा जिसमें से जीवन विकसित हो जाता है, आकाश-मंडल के सारे तारों के समान आश्चर्यकर है।

मिट्टी में लिपटा हुआ छोटे से छोटा बीज बुद्धिमान से बुद्धिमान आदमी से भी अपना रहस्य छिपाए रखता है। सारे संसार का ज्ञान घास के एक तिनके की व्याख्या नहीं कर सकता, छोटे से छोटे पत्ते के जरा से हिलने की भी। इतना सब होने पर भी पादरी, पोप और पुरोहित लोग, जो छोटी से छोटी वस्तु के सामने गूंगे बने खड़े रहते हैं। संसार की उत्पत्ति और विनाश के बारे में सभी कुछ जानते हैं। वे उस परमात्मा के बारे में जिसने एक इच्छा मात्र से सबको पैदा कर दिया, सभी कुछ जानते हैं। वे उसकी योजना, उसके साधन और उसके अंतिम उद्देश्य के बारे में भी सब कुछ जानते हैं। उन पर सभी रहस्य प्रकट हैं यदि प्रकट नहीं है तो केवल उन वस्तुओं का रहस्य जो सीधे इंद्रियों के स्पर्श में आती हैं।

लेकिन ईमानदार आदमी जानकारी का झूठा दावा नहीं करते। वे खुले और सच्चे होते हैं। वे अपने अज्ञान को स्वीकार कर सकते हैं-हम नहीं जानते।

आखिर हम अपने अज्ञान को पूजें ही क्यों? हम अज्ञान के सामने घुटने क्यों टेकें? हम केवल एक अनुमान को दण्डवत क्यों करें?

यदि परमात्मा है, तो हम यह कैसे जानते हैं कि वह शिव (कल्याणकारी) है और वह हमारी देखभाल करता है? ईसाई कहते हैं कि उनका परमात्मा सदा से चला आया है, वह सदा से अनन्त, बुद्धिमान और शिव रहा है तथा सदा रहेगा। यदि यह परमात्मा चाहता कि वह परमात्मा न बने तो क्या वह इससे बच सकता था? यदि वह शिव न होना चाहता, तो क्या शिव होने से बच सकता था? क्या वह बिना अपनी इच्छा के बुद्धिमान और शिव था?

क्योंकि वह सदैव से चला आया है, इसलिए उसकी उत्पत्ति नहीं हुई है। वह सभी कारणों के मूल मेंहै। वह जो कुछ है, वही था, वही रहेगा, अपरिवर्तित, अपरिवर्तनीय। उसे अपने चरित्र के निर्माण या विकास

के लिए कुछ नहीं करना पड़ा, अपने मन के विकास के लिए भी। जो कुछ वह था, वही है, उसने कुछ भी प्रगति नहीं की। जो कुछ वह है, वही रहेगा, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। तो मैं जानना चाहता हूं कि हम क्यों उसकी स्तुति करें? जो कुछ वह था और वह है, वह उससे भिन्न नहीं हो सकता, तब हम उससे प्रार्थना किसलिए करें? वह बदल तो सकता ही नहीं।

इतना सब होने पर भी ईसाई लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह गलत बात न करे।

शैतान के विरुद्ध जो कमीनी से कमीनी बात कही गई है, वह यह है कि वह आदमियों को लाभांवित करता है, और तब भी परमात्मा के लिए अनादर-सूचक ढंग से यह कहा गया कि वह शैतान का अनुकरण न करे।

हमें लालच में पड़ने से बचा।

परमात्मा स्तुति क्यों चाहे? वह वैसा ही है जैसा था। उसने कभी कुछ सीखा नहीं, कभी कोई आत्म त्याग नहीं किया, कभी लोभ के लालच में नहीं पड़ा, उसे कभी भय अथवा आशा ने स्पर्श नहीं किया, उसे कभी कोई इच्छा नहीं हुई। वह हमारी स्तुति क्यों चाहे?

क्या कोई यह बात जानता है कि उस परमात्मा का अस्तित्व है, जिसने न कभी कोई प्रार्थना सुनी और न कभी पूरी की? क्या यह बात सिद्ध है कि वह संसार पर राज्य करता है, आदमियों के मामलों में दखल देता है, भलों की रक्षा करता है और दुष्टों को दण्ड देता है? क्या मानवता के इतिहास में इसका प्रमाण मिल सकता है? यदि परमात्मा संसार पर शासन करता है, तो हम उसे केवल भलाई का ही श्रेय क्यों दें और उस पर बुराई का दोषारोपण क्यों न करें? उस परमात्मा का औचित्य सिद्ध करने के लिए हमें कहना होगा कि भलाई तो भलाई है ही, साथ ही बुराई भी भलाई है। यदि सभी कुछ इस परमात्मा द्वारा किया जाता है, तो हमें उसके कार्यों में भेद नहीं करना चाहिए, उस अनंत बुद्धिमान और शक्तिशाली के कार्यों में। यदि हम उसे सुंदर सूर्य और खेती के लिए धन्यवाद दें, तो हमें उसे प्लेग और अकाल के लिए भी धन्यवाद देना चाहिए। यदि हम स्वतंत्रता के लिए उसके कृतज्ञ हैं, तो गुलाम को भी अपने दोनों जकड़े हुए हाथ उठाकर परमात्मा की पूजा करनी ही चाहिए कि वह बिना किसी मजदूरी के पीठ पर कोड़ों की मार खाता हुआ काम करता है। यदि हम विजय के लिए उसके कृतज्ञ हैं, तो हार के लिए भी हमें उसी का कृतज्ञ होना चाहिए।

सच्ची बात तो यह है कि अच्छी और बुरी आत्माएं-सुर तथा असुर-अनुभव की सीमा से बाहर के प्राणी हैं, हमारी इंद्रियों की सीमा से परे के, हमारे विचार की सीमा से परे के, जहां तक कल्पना अधिक से अधिक उड़ान ले सकती है, उस सीमा से भी परे के।

आदमी को विचार करना चाहिए, उसे अपनी सभी इंद्रियों को काम में लाना चाहिए, उसे देखभाल करनी चाहिए, उसे तर्क करना चाहिए। जो आदमी विचार नहीं कर सकता। वह आदमी से कुछ कम है, जो जान-बूझकर विचार नहीं करता, वह आत्मद्रोही है। जो आदमी विचार करने से डरता है, वह मिथ्या-विश्वास का दास है।

6

मिथ्या-विश्वास से हमारी क्या हानि होती है? पौराणिक गप्पों तथा दंतकथाओं में विश्वास करने से हमारा क्या नुकसान होता है?

चिन्हों और चमत्कारों में विश्वास करने से, जादू-टोनों में विश्वास करने से, सुरों और असुरों में विश्वास करने से तथा स्वर्गो और नरकों में विश्वास करने से आदमी पागल हो जाता है और सारा संसार एक पागलखाना बन जाता है। इससे आदमी की सारी निश्चयात्मिका बुद्धि नष्ट हो जाती है, उसका अनुभव एक जाल-मात्र रह जाता है। कार्य-कारण का संबंध अथवा प्रकृति की एकता नष्ट हो जाती है। इससे आदमी एक थर्र-थर्र कांपने वाला दास अथवा गुलाम बनकर रह जाता है। इस प्रकार के मिथ्या-विश्वासों में ग्रसे रहने पर प्रकृति प्रगति के पथ को आलोकित नहीं करती। प्रकृति अदृश्य शक्तियों के हाथ का खिलौना बन जाती है। कारण किसी कार्य को जन्म नहीं देते और और कार्य अपने स्वाभाविक कारणों से सर्वथा मुक्त हो जाते हैं। आधार लुप्त हो

जाता है। गुणों, संबंधों अथवा परिणामों में किसी प्रकार की एकसूत्रता नहीं रह जाती। तर्क सिंहासनच्यूत हो जाता है और उसके स्थान पर मिथ्या-विश्वास का राज्याभिषेक होता है।

दिल पत्थर हो जाता है और दिमाग खोखला।

अदृश्य की सुरक्षा प्राप्त करने के निष्फल प्रयत्न में आदमी की शक्तियों का अपव्यय होने लगता है। कार्य, खोज, मानसिक परिश्रम, निरीक्षण और अनुभव का स्थान अंधविश्वास, रीति-रिवाज, पूजा, बलिदान और प्रार्थना जैसी चीजें ले लेती हैं। प्रगति असंभव हो जाती है।

मिथ्या-विश्वास स्वतंत्रता का शत्रु है और सदैव रहेगा।

मिथ्या-विश्वास ने तमाम देवताओं को, तमाम शैतानों और भूत-प्रेतों को तथा तमाम दैत्यों और राक्षसों को जन्म दिया है। मिथ्या-विश्वास ने हमें भविष्यवक्ता और पैगंबर दिए, आकाश को चमत्कारों से भर दिया, कार्य-कारण की कड़ी को तोड़ दिया और मानवता के इतिहास को झूठों से भर दिया। मिथ्या-विश्वास ने सारे पोपों और पादरियों को जन्म दिया। सारे साधुओं और साध्वियों का निर्माण किया। मिथ्या-विश्वास ने आदमियों को पशुओं और पत्थरों के सामने घुटनों के बल झुकाया। उनसे सांपों और वृक्षों की पूजा करवाई, उनका धन और श्रम ठग लिया और आदमियों से उनके अपने बच्चों तक की बलि दिलवाई। मिथ्या-विश्वास ने तमाम मंदिरों, मस्जिदों तथा गिरिजाघरों का निर्माण किया। संसार को मंत्रों और ताबीजों से भर दिया। मिथ्या-विश्वास ने दूसरों को अत्यंत पीड़ा पहुंचाने की पद्धतियों का आविष्कार किया, लाखों आदमियों को आग की बलि चढ़ाया। मिथ्या-विश्वास प्रलाप को प्रतिभा समझ बैठा और पागलों की बकवास को भविष्यवाणियां। मिथ्या-विश्वास ने सदाचारियों को जेल में डाला, विचारकों को पीड़ा पहुंचाई, वीरों को मार डाला और वाणी की स्वतंत्रता को सर्वथा नष्ट कर दिया। मिथ्या-विश्वास ने हमें सब प्रार्थनाएं सिखाई, हमें सब दण्डवत् प्रणाम सिखाए, हमें आत्म-घृणा का पाठ पढ़ाया, जीवन के आनंदों से मुंह मोड़ना, काय-क्लेश, धूल-लपेटना, स्त्री तथा बच्चों को छोड़ जाना, अपने मानव बंधुओं से दूर-दूर भागना और व्यर्थ के आत्म-पीड़न में जीवन बिताना सिखाया। मिथ्या-विश्वास ने हमें मानव-प्रेम को नीचे का दर्जा देना सिखाया, उसने सिखाया कि साधु और साध्वियां माता-पिता से भी अधिक पवित्र होती हैं। विश्वास वास्तविकता से बढ़कर है, अंधविश्वास स्वर्ग का रास्ता है, संदेह करने से नरक जाना होता है, विश्वास ज्ञान से बढ़कर है और किसी बात के प्रमाण की खोज करना परमात्मा का अपमान करना है। मिथ्या-विश्वास उन्नति का बैरी, शिक्षा का शत्रु और स्वतंत्रता का हत्यारा है, रहा है और सदैव रहा है। यह अज्ञात के लिए ज्ञात की, भविष्य के लिए वर्तमान की और किसी भावी काल्पनिक संसार के लिए इस वास्तविक संसार की बलि दे देता है।इसने हमें एक स्वार्थ-भरा स्वर्ग दिया है, बदले की अनंत भावनावाला नरक, इसने संसार को घृणा, युद्ध और अपराधें से भर दिया है। सारे संसार में मिथ्या-विश्वास ही विज्ञान का एकमात्र शत्रु है।

इस राक्षस ने जातियों और नसलों को तबाह कर दिया है। लगभग दो हजार वर्ष तक परमात्मा का यह एजेंट इटली में रहा है। यह देश मठों, गिरजों और ईसाई साधुओं तथा साध्वियों के निवास-स्थानों से भरा था। सभी नमूने के पादरी और संत महात्मा वहां विद्यमान थे। शताब्दियों तक इटली श्रद्धालुओं के धन से मालामाल होता रहा। सभी सड़कें रोम की ओर जाती थीं और वे सड़कें भेंटें लेकर चलने वाले यात्रियों से भरी रहती थीं। इस सबके बावजूद इटली लगातार पतन की सड़क पर अग्रसर हुआ और मर गया। वह इस समय सदा के लिए अपनी कब्र में होता यदि कावूर, मैजिनी और गैरीवाल्डी सदृश्य महापुरुषों ने उसे न बचा लिया होता। उसकी दरिद्रता और कष्टों की सारी जिम्मेदारी इन परमात्मा के एजेंटों, रोमन-कैथोलिक पादरियों पर है। उसमें जो जीवन है उसका श्रेय मिथ्या-विश्वास के शत्रुओं को है।

एक समय था जब आधी दुनिया पर स्पेन का राज्य था और संसार के सारे चांदी-सोने पर उसका अधिकार था। उस समय सभी जातियां मिथ्या-विश्वास की अंधेरी दुनिया में रहती थीं उस समय संसार पर

पण्डे-पुरोहितों का शासन था। स्पेन अपने धार्मिक विश्वासों से चिपका रहा। कुछ जातियों ने सोचना विचारना आरंभ किया, किंतु स्पेन विश्वासी बना रहा। कुछ देशों में पादरियों-पुरोहितों के हाथ में से शक्ति जाती रही, किंतु स्पेन नहीं। सिंहासन की बागडोर पादरी के हाथ में थी। कुछ देशों में लोगों ने विज्ञान में दिलचस्पी लेनी आरंभ की, किंतु स्पेन नहीं। स्पेन माला जपता रहा और प्रार्थनाएं करता रहा। स्पेन अपनी आत्मा की रक्षा करने में व्यस्त था। अपने उत्साह में उसने अपने-आपको नष्ट कर डाला। उसे आलौकिकता पर विश्वास था। ज्ञान पर नहीं, मिथ्या-विश्वास पर। उसकी प्रार्थनाएं कभी स्वीकृत नहीं हुई। कुछ देशों के लिए सूर्य उदय होने जा रहा थ, किंतु स्पेन प्रसन्नतापूर्वक अंधकार में ही रहा। जिन आदमियों ने जरा भी विचार करने का प्रयत्न किया, उन्हें उसने तलवार और आग की बलि चढ़ा दिया। दूसरी जातियां महान हो गईं, जबकि स्पेन ह्रास हुआ। दिन-प्रतिदिन उसकी शक्ति क्षीण होती गई, किंतु उसकी श्रद्धा बढ़ती गई। एक-एक करके उसके उपनिवेश उसके हाथ से निकल गए, किंतु उसने अपनी श्रद्धा को बनाए रखा। उसने अपना धन मिथ्या-विश्वासों को सौंप दिया, दिमाग पादरियों को, किंतु अपनी माला को हाथ से नहीं छोड़ा। कुछ ही समय पहले उसने अपने परमात्मा को पादरियों के भरोसे, मंत्रों और ताबीजोंके पीछे, अभिषिक्त पानी और क्रास के सच्चे टुकड़ों के भरोसे महान-प्रजातंत्र के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया था। बड़े पादरियों ने उसकी सेना को आर्शीवाद दिए, उसके जहाजों को पवित्र जेल से अभिषिक्त किया, तब भी उसकी सेनाएं पराजित हुईं और पकड़ी गई। उसके जहाज जला डाले गए। तब अपनी असहाय अवस्था में उसे शांति के लिए प्रार्थना करनी पड़ी। किंतु उसकी श्रद्धा बनी है, उसका मिथ्या-विश्वास दूर नहीं हुआ। इस तरह बेचारा स्पेन श्रद्धा की बलि चढ़ गया। मजहब का शिकार हो गया।

दयनीय पुर्तगाल, शनैः-शनैः मर रहा है। दिन-प्रतिदिन दरिद्र होता जा रहा है, किंतु श्रद्धा से चिपटा हुआ है। उसकी प्रार्थनाएं कभी पूरी नहीं होतीं, किंतु उसका प्रार्थनाएं करना जारी है। आस्ट्रिया एक प्रकार से समाप्त ही हो गया, मिथ्या-विश्वासों का शिकार जर्मनी भी अंधकार की ओर अग्रसर है। परमात्मा ने उसके कैंसर को सिंहासनारूढ़ किया। जनता को उसकी आज्ञाओं का पालन करना ही होगा। दार्शनिक और वैज्ञानिक घुटने टेकते हैं और उस दैवी शासक के हाथ की कठपुतली बन जाते हैं।

०००

भगत सिंह के नाम पर चौंक का नाम रखने बारे पटीशन दाखिल

लाहौर-पीटीआई-शहर के शादमान चौक का नाम स्वतंत्रता सेनानी शहीद भगत सिंह के नाम पर रखने और उन का बुत लगाने की मांग को लेकर लाहौर हाई कोर्ट में एक और पटीशन दाखिल की गइ है। ब्रिटिश शासको ने शादमान चौक पर ही भगत सिंह को उनके दो साथियों राजगरु और सुखदेव सहित 23 मार्च 1931 को फांसी दी थी।

पटीशन भगत सिंह मैमोरियल फाऊंडेशन के चेयरमैन इम्तियाज़ राशिद कुरैशी ने दाखिल की है। बुधवार को पटीशन की सुनवाई के दौरान लाहौर हाई कोर्ट में बताया गया कि ऐसी ही एक और अर्जी उनके सामने लंबित है। इस में जस्टिस शहिद जमील ख़ान ने दोनों पटीशनों को इकट्ठा करने का आदेश दिया। मामले में अब पांच मार्च को सुनवाई होगी। पटीशन में कहा गया है कि भगतसिंह स्वतंत्रता सैनानी थे। उन्होंने उप-महाद्वीप की आज़ादी के लिए अपनी जान दी थी। पटीशन में कहा गया है कि पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिनाह ने उनको श्रद्धांजलि देते हुए कहा था कि उप-महाद्वीप में भगत सिंह जैसा कोई भी बहादुर व्यक्ति नहीं था।

मानवेन्द्र नाथ रॉय

–डॉ. रामेन्द्र

मानवेन्द्र नाथ रॉय (1887–1954) को बीसवीं सदी का एक प्रमुख भारतीय दार्शनिक माना जा सकता है। रॉय ने अपने दर्शन में दर्शनशास्त्र और धर्म के बीच एक स्पष्ट अंतर किया है। रॉय के अनुसार परम्परागत धार्मिक विचारों और धर्मशास्त्रीय रूढ़ियों से छुटकारा पाए बिना दर्शनशास्त्र का विकास संभव नहीं है। दूसरी ओर, रॉय ने दर्शनशास्त्र और विज्ञान के बीच बहुत निकट संबंध की कल्पना की है। रॉय के दर्शन की यह विशेषता उन्हें राधाकृष्णन सहित बीसवीं सदी के कुछ अन्य प्रमुख भारतीय विचारकों से बिल्कुल अलग कर देती है।

रॉय ने सामाजिक क्रांति के सन्दर्भ में वैचारिक या दार्शनिक क्रांति को केंद्रीय महत्त्व दिया है। रॉय के अनुसार दार्शनिक क्रांति के बिना सामाजिक क्रांति संभव नहीं है। इसके अलावा, रॉय ने अठारहवीं शताब्दी के फ्रेंच दार्शनिक हॉलबैक की परम्परा में, समकालीन वैज्ञानिक विकास के प्रकाश में भौतिकवाद की एक संशोधित और नयी व्याख्या प्रस्तुत की है, जो अपने-आप में एक दार्शनिक उपलब्धि है।

अगर हम रॉय के दर्शन को प्राचीन भारतीय दर्शन के संदर्भ में देखना चाहें, तो हम उन्हें प्राचीन भारतीय भौतिकवाद–लोकायत–की परम्परा में रख सकते हैं लेकिन रॉय का भौतिकीय वास्तववाद लोकायत या चार्वाक दर्शन की तुलना में काफी विकसित दर्शन है। रॉय ने भौतिकवाद की पुनर्व्याख्या के क्रम में न सिर्फ भौतिकशास्त्र के नवीनतम आविष्कारों को ध्यान में रखा है, बल्कि उन्होंने अपने दर्शन में नैतिकता को भी प्रमुख स्थान दिया है। इतना ही नहीं, रॉय के दर्शन का एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक पक्ष भी है, जो साम्यवाद और औपचारिक लोकतंत्र की उनकी समीक्षा पर आधारित है और जिसे रॉय ने नवमानववाद या रैडिकल मानवतावाद का नाम दिया है।

मानवेन्द्र नाथ रॉय का मूल नाम नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य था। उनका जन्म 21 मार्च 1887 को बंगाल के 24 परगना जिले के एक गांव में हुआ था। रॉय ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत एक लड़ाकू राष्ट्रवादी के रूप में की थी। उस समय वे 14 वर्षीय स्कूली छात्र थे। उनका संबंध अनुशीलन समिति और जुगांतर ग्रुप जैसे भूमिगत संगठनों से रहा।

शस्त्रों की तलाश में:

पहले विश्वयुद्ध के प्रारंभ होने के बाद रॉय सशस्त्र विद्रोह द्वारा भारत से ब्रिटिश शसन को उखाड़ फैंकने के उद्देश्य से शस्त्रों की तलाश में जावा चले गए। वहां उन्हें अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिली। इसके बाद वे शस्त्रों की तलाश में अलग-अलग नामों और नकली पासपोर्टों के सहारे एक देश से दूसरे देश में भटकते रहे। अंततः जून 1916 में वे संयुक्त राज्य अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को शहर पहुंच गए।

अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रांगण में ही रॉय ने अपना नाम नरेन्द्रनाथ भट्टाचार्य से बदलकर मानवेन्द्र नाथ रॉय रख लिया। जैसा कि रॉय ने स्वयं लिखा है, यह परिवर्तन उनके लिए एक नए जीवन की तरह था, क्योंकि शस्त्रों की निरर्थक तलाश में अब उनकी रुचि नहीं रह गयी थी और वे एक नए सिरे से अपने जीवन की शुरुआत करना चाहते थे। अमेरिका में ही रॉय स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की ग्रेजुएट छात्रा, एविलिन ट्रेन्ट के सम्पर्क में आए। बाद में दोनों ने विवाह कर लिया। एविलिन ट्रेन्ट रॉय की राजनीतिक और साहित्यिक सहयोगी बनीं। वे उनके साथ मैक्सिको और रूस भी गयीं। 1929 में वे दोनों अलग हो गए।

साम्यवाद की ओर:

अमेरिका के ही न्यूयार्क शहर में रॉय भारत के प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय के सम्पर्क में आए। रॉय भी उनके साथ सार्वजनिक सभाओं में जाने लगे। इन सभाओं में मजदूर वर्ग के लोगों द्वारा

पूछे जाने वाले सवालों ने रॉय को यह सोचने के लिए मजबूर किया कि क्या आजादी के बाद भारत से गरीबी और शोषण का अंत हो जाएगा। न्यूयार्क के सार्वजनिक पुस्तकालय में रॉय का परिचय समाजवादी साहित्य से हुआ। रॉय ने समाजवाद का खण्डन करने के उद्देश्य से समाजवाद का सिलसिलेवार अध्ययन शुरू किया। लेकिन जल्दी ही उन्होंने पाया कि वे स्वयं भी समाजवादी बन चुके हैं। अपने लड़ाकू राष्ट्रवादी दिनों में रॉय बंकिमचन्द्र, विवेकानन्द और रूढ़िवादी हिन्दू दर्शन से प्रभावित रहे थे। इसलिए शुरू में समाजवाद को स्वीकार करने पर भी रॉय ने उसके भौतिकवादी दार्शनिक आधार को स्वीकार नहीं किया था।

बाद में, 1919 में रॉय मैक्सिको में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के दूत माइकेल बोरोडिन के सम्पर्क में आए। बोरोडिन के साथ लंबी चर्चाओं के बाद रॉय ने भौतिकवादी दर्शन को स्वीकार कर लिया और पूरी तौर से साम्यवादी बन गए। मैक्सिको की समाजवादी पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी में बदलने में रॉय ने प्रमुख भूमिका निभाई।

1920 में रॉय को कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के दूसरे सम्मेलन में शामिल होने के लिए मॉस्को आमंत्रित किया गया। सम्मेलन के पहले रॉय की लेनिन से कई मुलाकातें हुई। राष्ट्रीय आंदोलनों में स्थानीय बुर्जुआ वर्ग की भूमिका के बारे में रॉय और लेनिन के बीच कुछ मतभेद थे। लेनिन की सलाह पर कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के इस सम्मेलन ने लेनिन की थीसिस के साथ रॉय की थीसिस को भी पूरक थीसिस के रूप में पारित किया। इसके बाद के वर्षों में रॉय को कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के नीति-निर्धारक संगठनों में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। 1927 में रॉय को कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के प्रतिनिधि के रूप में चीन भेजा गया। लेकिन बाद में वैचारिक मतभेदों के कारण स्टालिन द्वारा उन्हें 1929 में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से निकाल दिया गया।

भारत वापसी : जेल के वर्ष

सितम्बर, 1930 में रॉय भारत लौटने पर भूमिगत हो गए, पर जुलाई 1931 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फेंकने के षड्यंत्र के आरोप में उन पर मुकद्दमा चलाया गया और 6 वर्षों के लिए जेल की सजा दी गयी। जिस समय रॉय भारत लौटे, उस समय वे पूरी तौर से साम्यवादी ही थे, हालांकि कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से उनका संबंध टूट चुका था। जेल में रॉय को अध्ययन और चिंतन के लिए काफी समय मिला। रॉय ने जेल में ही 'आधुनिक विज्ञान के दार्शनिक परिणामों' के बारे में सिलसिलेवार अध्ययन और लेखन की योजना बनायी। इसके अंतर्गत वे मार्क्सवाद की पुनर्व्याख्या और मूल्यांकन भी करना चाहते थे। उनकी भावी पत्नी, ऐलन रॉय, सहित जर्मनी के उनके दोस्तों ने जेल में किताबें भेज कर उनके इस काम में सहायता की। 5 वर्ष की अवधि में उन्होंने अपने विचारों को लगभग तीन हजार पन्नों में लिखा। रॉय की जेल में लिखी गई पाण्डुलिपी अब तक पूरी तौर से प्रकाशित नहीं हुई है।, लेकिन इसके आधार पर कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें राय के भौतिकवाद के अध्ययन के दृष्टिकोण से Materialism, (1940) और Science and Philosophy, (1947) प्रमुख हैं। इसके अलावा, The Historical Role of Islam (1939) और India's Message (1950) भी जेल-पाण्डुलिपि पर आधारित हैं। रॉय के नवमानवतावादी दर्शन के बीच भी जेल पाण्डुलिपि में मौजूद हैं।

साम्यवाद से आगे : नवमानवतावाद की ओर-

1936 में जेल से रिहाई के बाद रॉय अपने समर्थकों के साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए। कांग्रेस में उन्होंने 'लीग ऑफ रैडिकल कांग्रेसमैन' की स्थापना की। इसके साथ ही रॉय के जीवन के उस अंतिम चरण की शुरुआत हुई, जिसमें उन्होंने नवमानवतावादी दर्शन का विकास किया।

रॉय के जेल से रिहा होने के बाद, मार्च 1937 में उनकी जर्मन दोस्त एलेन उनसे मिलने मुंबई आईं। उसी महीने दोनों ने विवाह कर लिया। इसके बाद एलेन रॉय ने उनके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और हर तरह से उनके साथ सहयोग किया।

1940 में रॉय और उनके अनुयायी दूसरे विश्वयुद्ध में भारत की हिस्सेदारी के प्रश्न पर मतभेद के कारण कांग्रेस से अलग हो गए और रॉय ने

रैडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी की स्थापना की। इसके बाद रॉय धीरे-धीरे मार्क्सवाद और साम्यवाद से दूर होते चले गए। रॉय के अनुसार Scientific Politics, New Orientation और Beyond Communism- इन तीन पुस्तकों में नवमानवतावादी दर्शन के विकास का इतिहास दर्ज है। लेकिन, रॉय के नवमानवतावादी दर्शन का परिचय हमें रैडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी द्वारा अगस्त, 1947 में जारी किए गए घोषणा पत्र New Humanism- से मिलता है।

इस घोषणा पत्र का प्रारूप रॉय ने ही तैयार किया था। घोषणा पत्र में व्यक्त किए गए विचार रॉय के शब्दों में, 'आलोचनात्मक मार्क्सवादियों और भूतपूर्व कम्युनिस्टों के एक समूह' द्वारा विकसित किए गए हैं।

घोषणा पत्र की केंद्रीय विषय-वस्तु रॉय द्वारा प्रतिपादित और रैडिकल डोमोक्रेटिक पार्टी द्वारा दिसम्बर, 1945 में मुंबई में अपने तीसरे सम्मेलन में पारित 'रैडिकल लोकतंत्र पर 22 सिद्धांत सूत्र' हैं।

'22 थीसिस' और घोषणा पत्र पर आगे चर्चा के आधार पर रॉय इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि पार्टी राजनीति और उनकी कल्पना के आदर्श लोकतंत्र के बीच परस्पर संगति नहीं है। इसलिए दिसम्बर 1948 में रैडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी ने कलकत्ता में अपने चौथे सम्मेलन में राजनीतिक दल के रूप मे कार्य करना छोड़कर, अपने को रैडिकल मानवतावादी आंदोलन में बदलने का निर्णय लिया। तदानुसार उन्नीसवीं और बीसवीं थीसिस और घोषणा पत्र से अंतिम तीन पैराग्राफों को भी संशोधित कर दिया गया। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि अपने संशोधित रूप में '22 थीसिस' रॉय के नवमानवतावादी दर्शन का सार और रैडिकल मानवतावादी आंदोलन की आधारशिला है।

अंतिम दिनः

1946 में रॉय देहरादून में इंडियन रिनेसांस इंस्टीच्यूट की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय नवजागरण आंदोलन को संगठित करना था। 1948 में रॉय ने अपने बृहत ग्रंथ Reason, Romanticism and Revolution (638) पर काम करना शुरू किया और अप्रैल, 1942 में, इसे लिखकर पूरा किया। 1942 में ही रॉय इंटरनेशनल ह्यूमैनिस्ट एंड एथिकल यूनियन (IHEU) के उद्घाटन सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए एम्स्टरडैम जाने वाले थे। इससे पहले वे थोड़े समय आराम के लिए एलेन रॉय के साथ मसूरी गए। वहीं पहाड़ी रास्तों पर चलते हुए, वे 11 जून, 1952, को लगभग 50 फीट नीचे गिर पड़े। इस कारण, रॉय दम्पति एम्स्टरडैम नहीं जा पाए और अंततः लंबी बीमारी के बाद 25 जनवरी, 1954 को एमएन राय की मृत्यु हो गयी।

x x x

दिसम्बर, 1942 में लखनऊ में रैडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी के अखिल भारतीय सम्मेलन में रॉय ने घोषित किया कि न केवल युद्ध में फासिस्ट शक्तियों का पराजित होना सुनिश्चित हो गया है, वरन् फासिस्ट-विरोधी युद्ध के कारण ग्रेट ब्रिटेन एवं मित्र देशों में जो सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन उपस्थित हुए हैं, उनके परिणामस्वरूप भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होगी।

ये दोनों अनुमान सत्य सिद्ध हुए। इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध में अंतर्राष्ट्रीय फासिस्टवाद की पराजय के कारण स्वतंत्रता को प्रोत्साहन देने वाली शक्तियों का उदय हुआ। अंधिकांशतः उनके परिणामस्वरूप भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। वास्तव में भारत ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण विश्वभर में उपनिवेशवाद की समाप्ति का यही एक कारण था।

राय को ज्यों ही यह स्पष्ट हो गया कि विश्व युद्ध में फासिस्ट शक्तियों की पराजय सन्निकट है। उन्होंने भारत के युद्धोपरान्त पुनर्निर्माण पर अपना ध्यान केंद्रित कर डाला। उन्होंने आलेख तैयार कराये-पहला, 'पीपुल्स प्लान फॉर इकानामिक डेवलपमैंट आफ इंडिया' (जनयोजना) तथा दूसरा 'ड्राफ्ट कांस्ट्टियूशन आफ फ्री इंडिया' (स्वतंत्र भारत के संविधान का मसौदा)। इन आलेखों द्वारा राय ने देश की आर्थिक उवं राजनीतिक समस्याओं को हल करने की दिशा में अपना मौलिक योगदान दिया। रॉय ने तद/युगीन प्रचलित आर्थिक चिंतन के विपरीत 'पीपुल्स प्लान' में कृषि उत्पादन एवं लघु उद्योगों को प्रधानता

दी। 'पीपुल्स प्लान' में उत्पादन का उद्देश्य लाभ के लिए न मानकर उपभोग के लिए माना गया, अर्थात् भोजन, आवास, शिक्षा एवं चिकित्सा की सुविधाएं प्रदान करना। 'ड्राफ्ट कांस्टिट्यूशन आफ फ्री इंडिया' में भारत 'राज्य' की परिकल्पना एक ऐसी संरचना के रूप में की गयी, जिसमें केंद्रसता देश-भर में फैली जन-समितियों के जाल पर आधारित हो तथा जन-समितियों को व्यापक अधिकार प्राप्त हों तथा कानून-निर्माण में पहल करना, विचाराधीन विधेयकों पर सम्मति प्रदान करना, प्रतिनिधियों का प्रत्याह्वान करना तथा महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मसलों पर जनमत-संग्रह करना। परवर्ती काल में जय प्रकाश नारायण ने 'लोक-समितियों' के जिस विचार को लोकप्रिय बनाया, वह प्रमुखतः रॉय के 'ड्राफ्ट कांस्टिट्यूशन आफ फ्री इंडिया' से लिया गया था।

रॉय के वैचारिक विकास-क्रम में नव मानवतावादी चिंतन के विकास का समारम्भ रैडिकल डेमोक्रेटिक पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ताओं के एक महत्वपूर्ण अध्ययन शिविर द्वारा हुआ, जो कि देहरादून के पास गढ़ी में 8 मई से 18 मई, 1946 तक थे। रॉय ने शिविर में अपने भाषणों में इंगित किया कि साम्यवाद अब कोई अप्रत्यक्षीकृत स्वप्नलोक नहीं है, सोवियत रूस में जो कुछ घटित हो रहा है, उससे चोर के पांव प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे हैं अब उसकी अविश्वसनीय ध्वजा की छाया में मुक्तिदायी क्रांति किसी प्रकार संभव नहीं है। हमें उच्चतर आदर्श की प्राप्ति के लिए कार्यरत होना होगा और यह आदर्श है मानव-स्वाधीनता की प्राप्ति। उन्होंने यह विचारव्यक्त किया कि साम्यवाद के सिद्धांत की प्राप्ति। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि साम्यवाद के सिद्धांत एवं व्यवहार का कारण मानव-प्रगति में विचारों के सर्वोपरि महत्व को समझ पाना है। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि भौतिकवाद मानव-इतिहास के विकास में विचारों के योगदान को असंगत नहीं दर्शाता, क्योंकि विचारों का उद्‌गम मानव के भौतिक अस्तित्व से ही होता है। गढ़ी शिविर में दिए गए उनके भाषणों का संकलन 'न्यू ऑरिएण्टेशन' नामक ग्रंथ में हुआ है।

-न्यायमूर्ति विट्ठल महादेव तारकुण्डे
('भारत के प्रख्यात नास्तिक में' से साभार)

मृत्यु के बाद जो होते हैं पाखण्ड

जब हम सब को पता है कि मृत्यु के बाद हमारे साथ कुछ नही जाता फिर हम इतना पाखण्ड क्यों करते हैं। मैं यह इसलिए लिख रहा हूं क्योंकि हमारे गावँ में एक अमीर घर की वृद्धि महिला के अंतिम संस्कार में मैं भी शामिल हुआ लेकिन वहाँ की घटना देखकर मैं बहुत विचलित हुआ। क्योंकि उसके मृत शरीर के ऊपर जो नये-नये कपड़े चादर कम्बल थे, सबको उतारने के बजाये उसके साथ ही उन सब कपड़ों को भी जला दिया। मैं असहाय होकर ये सब देखता रहा। इस घटना ने मुझे बहुत विचलित किया और ये सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या मेरे भारत के लोग अमीर है या गरीब है या फिर अनपढ़!!

कुछ दिन पहले मेरे पिता जी की अचानक मृत्यु पर उनकी इच्छानुसार उनके शरीर को कल्पना चावला मैडीकल कॉलिज में देने के साथ-साथ जो भी सगे सम्बन्धियो द्वारा लाये गये कपड़े और देशी घी को भी हमने अनाथालय में भेज दिया ताकि किसी के काम आ सके । बहुत सी ऐसी संस्थाये है जो मानवता की भलाई के लिये काम करती है और अनाथों घायलों भूखो को सहारा देती है!

जयदेव बदरपुर मो. 9813409023

'धर्म ग्रंथों का उदय गुलामों को यही बात सिखाने के लिए हुआ कि अगर वे मालिक के खिलाफ बगावत करें, तो पापी बन जायेंगे और मालिकों की आज्ञा का पालन करते सेवा करते रहें, तो पुण्य कमा लेंगे। इस अर्थ में एक-एक धर्म ग्रंथ सौ-सौ तलवारों से ज्यादा ध ाारदार होता है। मज़हब की एक-एक नसीहत गुलामों का शरीर फाड़ डालने वाले, लम्बे-तगड़े खूंखार कुत्तों से ज्यादा खौफनाक होती है।'
-(रंगनायकम्मा 'बच्चों के लिए अर्थशास्त्र' पुस्तक से

-अजय नबस (9996036595 द्वारा प्रेषित

ब्रूनो जिसे धर्माधिकारियों ने जिंदा जलाया – क्योंकि पृथ्वी को 'स्थिर' रखना था !

आज से 418 वर्ष पहले, 17 फरवरी, सन् 1600 को, 'अपने विश्ध्वासों के लिए कुर्बान होने वाले महान वैज्ञानिक, साहसी क्रान्तिकारी, धगियोर्दानो ब्रूनो को रोम में प्राणदण्ड दिया गया था।' प्राणदण्ड देने का 'न्यायालय' का निर्णय सुनकर, गियोर्दानो ब्रूनो ने 'इन्क्विजितरों' से शान्तिपूर्वक कहा था –''आप दण्ड देने वाले हैं और मैं अपराधी हूँ, मगर अजीब बात है कि पासिन्धु भगवान के नाम पर अपना फैय्सला सुनाते हुए आपका हृदय मुझसे कहीं अधिक डर रहा है।'

'इन्क्विजिशन' की यह प्रथा थी कि वह अपना निर्णय इन पाखण्ड भरे शब्दों में सुनाता था – "'पवित्र धर्म इस अपराधी को बिना खून बहाये मृत्युदण्ड देने की प्रार्थना करता है।'' किन्तु वास्तव में इसका अर्थ होता था भयानक मृत्युदण्ड – यानी जीवित ही जला देना।'

. ब्रूनो जीवन भर कॉपरनिकस के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए संघर्ष करता रहा। ब्रूनो ने कॉपरनिकस के सिद्धान्तों को, एक परिश्रमी तथा भीरु शिष्य की भाँति दुहराया ही नहीं, बल्कि उन्हें और भी अधिक विस्तृत किया। स्वयं कॉपरनिकस की तुलना में उसने संसार को कहीं अधिक अच्छी तरह समझा।

गियोर्दानो ब्रूनो ने बताया कि 'न केवल पृथ्वी ही, बल्कि सूर्य भी अपनी धुरी पर घूमता है। ब्रूनो की मृत्यु के बहुत वर्षो बाद ही यह तथ्य प्रमाणित हुआ।'

ब्रूनो ने बताया कि बहुत-से ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं और यह कि मनुष्य नये तथा अभी तक अनजाने कई अन्य ग्रहों का भी पता लगा सकता है। उसकी यह बात सच भी निकली। ब्रूनो की मृत्यु के लगभग दो सौ वर्ष बाद ऐसे अनजाने ग्रहों में सबसे पहले यूरेनस का, और कुछ समय बाद, नेप्चून और प्लूटो ग्रहों का तथा दूसरे सैकड़ों छोटे-छोटे ग्रहों का पता लगा। इन्हें एस्टेरॉयड कहते हैं। इस प्रकार इस प्रतिभाशाली इतालवी की भविष्यवाणी सोलह आने सच साबित हुई।

कॉपरनिकस दूर के तारों की ओर कम ध्यान देता था। परन्तु ब्रूनो ने निश्चय के साथ कहा कि हर तारा हमारे सूर्य जैसा ही विशाल सूर्य है। उसने यह भी कहा कि ग्रह हर तारे के चारों ओर घूमते हैं। हम केवल उन्हें देख नहीं पाते हैं, क्योंकि वे हमसे बहुत ही दूर हैं। ब्रूनो ने यह भी कहा कि हर एक तारा अपने ग्रहों के साथ एक वैसा ही विश्व है, जैसा कि हमारा सौर जगत, और ब्रह्माण्ड में ऐसे विश्वों की संख्या अनन्त है।

गियोर्दानो ब्रूनो ने बताया कि 'ब्रह्माण्ड के सभी संसारों की अपनी स्वयं की उत्पत्ति और अपना स्वयं का अन्त है और वे बराबर बदलते रहते हैं।' यह विचार बहुत ही साहसपूर्ण था, क्योंकि ईसाई धर्म के अनुसार तो संसार अपरिवर्तनशील है और वह सदा वैसा ही बना रहता है जैसा कि ईश्वर ने इसे बनाया है।'

ब्रूनो बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति था। उसने अपने बुद्धिबल द्वारा ही वह बात समझी जिसे खगोलविज्ञानी बाद में दूरबीनों और टेलीस्कोपों की सहायता से जान पाये। आज हमारे लिए यह अनुमान लगाना भी कठिन है कि ब्रूनो ने खगोलविज्ञान में कितनी बड़ी क्रान्ति कर दी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने किसी बन्दी को कारावास से बाहर निकालकर उसे तंग व अँधेरी कोठरी की जगह एक विचित्र व

अनन्त संसार का सुन्दर दृश्य दिखाया था।

ब्रूनो के कुछ समय बाद एक अन्य खगोलविज्ञानी केपलर ने यह स्वीकार किया कि इस महान व प्रसिद्ध इतालवी वैज्ञानिक की कृतियाँ पढ़कर उसका सिर चकराने लगता था। इस कल्पना से कि शायद वह इस अन्तरिक्ष में निराधार घूमता रहता है, कि इसका न कोई केन्द्र और न कोई आरम्भ और अन्त ही है, वह एक गुप्त आतंक से आतंकित हो उठता था।

पादरी गियोर्दानो ब्रूनो को अपना जानी दुश्मन मानने लगे। ब्रूनो के ये सिद्धान्त कि बसे हुए संसारों की संख्या अनन्त है, और ब्रह्माण्ड का कोई आरम्भ और कोई अन्त नहीं है, विश्व की सृष्टि के विषय में तथा पृथ्वी पर ईसा मसीह के आने के विषय में 'बाइबल' के कथनों को मटियामेट करने के लिए काफी थे। 'बाइबल' के यही कथन तो ईसाई धर्म के आधार-स्तम्भ थे। पादरियों ने गियोर्दानो ब्रूनो के विरुद्ध जो अभियोग-पत्र तैयार किये उनमें पूरे एक सौ तीस पैराग्राफ थे।

पादरियों ने इस महान वैज्ञानिक को ''ईश्वर को गाली देने वाला'' कहा और वे बराबर प्रयत्न करते रहे कि सभी जगहों के शासक ब्रूनो को अपने देशों से निकाल दें। किन्तु ब्रूनो जितना ही अधिक मारा-मारा फिरता रहा, उतना ही अधिक वह अपने साहसपूर्ण सिद्धान्तों का प्रचार भी करता रहा।

स्वदेश से अलग किया हुआ ब्रूनो अपने खिली धूप के देश इटली के लिए बराबर आतुर रहता था। उसे मार डालने के लिए उसके दुश्मनों ने ब्रूनो की इस देश प्रेम की भावना से लाभ उठाया।

कुलीन तथा नवयुवक इतालवी जियोवानी मोचेनीगो ने यह ढोंग रचा कि उसे ब्रूनो की उन अनगिनत कृतियों में विशेष रुचि है जो यूरोप के भिन्न-भिन्न नगरों में छप चुकी हैं। उसने ब्रूनो को लिखा कि वह उसका शिष्य बनना चाहता है और यह भी कहा कि बदले में वह उसे उदारतापूर्वक पुरस्कृत करेगा।

निर्वासित ब्रूनो के लिए स्वदेश लौटना बहुत खतरनाक था, किन्तु मोचेनीगो ने कपटपूर्वक उसे आश्वासन दिलाया कि वह अपने शिक्षक को बैरियों से बचा लेगा। ब्रूनो विदेशों में भटक-भटककर ऊब चुका था। उसने कपटी मोचेनीगो पर विश्वास कर लिया।

महान वैज्ञानिक यह न जानता था कि उसे धोखा देकर इटली में वापस बुलाने की यह नीच योजना कैथोलिक चर्च के 'न्यायालय' द्वारा बनायी गयी है। स्पेन और इटली में 'इन्क्विजिशन' नामक भयानक न्यायालय था। यह धर्म का विरोध करने वालों पर अत्याचार करता था। 'इन्क्विजितरों' ने, अर्थात् उपरोक्त संस्था के न्यायाधीशों ने, इस संस्था के अस्तित्व काल में लाखों बेगुनाहों की जान ली थी। ब्रूनो भी इसका एक ऐसा ही बेगुनाह शिकार हुआ।

गियोर्दानो ब्रूनो इटली के वेनिस नगर में पहुँचा और मोचेनीगो को पढ़ाने लगा। मोचेनीगो ने वैज्ञानिक से यह प्रतिज्ञा करवा ली थी कि जाने का विचार बना लेने पर वह मोचेनीगो से विदा अवश्य लेगा। यह भी एक चाल थी। मोचेनीगो को यह भय था कि यदि कहीं ब्रूनो को 'इन्क्विजिशन' की योजना का पता चल गया तो फिर वह अपनी युवावस्था की भाँति, अवश्य ही चुपके से भाग खड़ा होगा। परन्तु यदि खगोलविज्ञानी उससे विदा लेने आया तो फिर उसे रोकना मुश्किल न होगा।

कुछ महीनों की शिक्षा के बाद मोचेनीगो ने कहा कि ब्रूनो उसे ठीक ढंग से नहीं पढ़ाता है और यह कि वह उससे अपने भेद छिपाता है। इस आरोप के उत्तर में ब्रूनो ने वेनिस छोड़ देने का निश्चय किया, और मोचेनीगो ने इसकी सूचना 'इन्क्विजिशन' को दे दी। 23 मई सन् 1592 को इस विख्यात वैज्ञानिक को जेल में डाल दिया गया। उसने जेल में यातनापूर्ण आठ वर्ष बिताये।

वह कोठरी, जिसमें ब्रूनो को रखा गया था, जेल की सीसे की छत के नीचे थी। ऐसी छत के नीचे गर्मियों में असह्य गर्मी और उमस तथा जाड़ों में नमी और ठण्ड रहती। ऐसी कोठरी में बन्दी का जीवन भयानक तथा यातनापूर्ण था-यह तो जैसे तड़पा-तड़पाकर मारने वाली बात थी।

हत्यारों ने गियोर्दानो ब्रूनो को आठ वर्षो तक जेल में क्यों बन्द रखा? इसलिए कि उन्हें आशा थी कि वे इस खगोलविज्ञानी को अपने सिद्धान्त त्याग

देने के लिए बाध्य कर सकेंगे। यदि ऐसा हो जाता, तो यह उन सबके लिए एक बड़ी विजय होती। पूरा यूरोप इस विख्यात वैज्ञानिक को जानता था और उसका आदर करता था। यदि ब्रूनो यह घोषणा कर देता कि वह गलती पर था और पादरी लोग ठीक थे, तो बहुत-से लोग फिर से विश्व की सृष्टि के विषय में धर्म के कथनों पर विश्वास करने लगते। किन्तु गियोर्दानो ब्रूनो चट्टान की तरह दृढ़ और साहसी व्यक्ति था। पादरी न तो धमकियों और न ही यन्त्रणाओं द्वारा ब्रूनो को विचलित कर पाये। वह दृढ़ता से अपने विचारों की सत्यता को सिद्ध करता रहा।

अन्त में हत्यारों ने उसे प्राणदण्ड देने का निर्णय सुनाया। 'न्यायालय' का निर्णय सुनकर, गियोर्दानो ब्रूनो ने 'इन्क्विजितरों' से शान्तिपूर्वक कहा – ''आप दण्ड देने वाले हैं और मैं अपराधी हूँ, मगर अजीब बात है कि पासिन्धु भगवान के नाम पर अपना फैसला सुनाते हुए आपका हृदय मुझसे कहीं अधिक डर रहा है।''

('अनुराग ट्रस्ट' से प्रकाशित पुस्तक 'धरती और आकाश' से)

नारी और धर्म

-डॉ रवीन्द्र कुमार पाठक

विज्ञान और तकनीक की उपलब्धियों से भरी इस 21 वीं सदी में भी कितनी बड़ी विडम्बना है कि आज भी धर्म की गलियों में औरत की हैसियत एक अदद इंसान की नहीं हो सकी है ।(धर्म और धर्माचार्यों की निगाह में स्त्री या तो घृणित यौनवस्तु है या मासिक स्राव का बाज बजाता नाला), जब कि हर धर्म के ठेकेदार यह कहते नहीं अघाते कि हम औरतों की पूजा करने वाली संस्कृति के वाहक हैं। इसे गदहपन या हैवानियत की हद ही कहा जा सकता है कि असम के 'कामाख्या मंदिर' में हर साल बारिश के मौसम में चार दिनों में देवी के रजस्वला होने का उत्सव मनाया जाता है । (उस मंदिर में आराध्य रूप में कोई पूर्ण प्रतिमा नहीं, बल्कि देवी की योनि है) पर उसी मंदिर में पीरियड्स (रजस्वला होने) के दौरान किसी स्त्री के प्रवेश पर सदियों से कठोर बंदिशें हैं । ..... केरल के 'सबरीमाला मंदिर' में तो पुजारियों की गुंडई इस हद तक बढ़ी नजर आयी कि उन्होंने डंके की चोट पर कहा कि मंदिर में स्त्रियों की माहवारी की जांच के लिए मशीन लगायी जाएगी और बिना 'माहवारी-निगेटिव' को सुनिश्चित किए उन्हें मंदिर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा । देश में आज भी ऐसी मूढ़ताओं और कुत्सित सोच के सड़े हुए धागे को अपने गले में चिपकाए मंदिरों की एक लंबी कतार है । वाह रे! नारीपूजक देश! .....

बात केवल हिन्दू-धर्मस्थल तक सीमित नहीं है । कई दरगाहों में भी पीरियड्स के समय या वैसे भी महिलाओं का प्रवेश प्रतिबंधित होने की खबरें आये दिन गरमाती रहती हैं । यह मामला केवल धर्म के ठेकेदारों का नहीं है, बल्कि गहराई से देखा जाए तो विश्व में आज उपलब्ध तमाम धर्म अपनी आधारभूत संरचना में स्त्रीद्रोही और पुरुषवर्चस्वी ही नजर आते हैं । सवाल है कि मानव को जीवनमार्ग दिखाने का धंधा करने वाले इन धर्मों में कब आएगा विवेक ? कब आएगा लोकतंत्र या सामाजिक (लैंगिक) न्याय ?

'जीवन में प्रोटीन, डी.एन.ए. और जल की महत्ता'

-'शरद कोकास'

मैं आपको पुरानी हिन्दी फिल्मों का एक दृश्य याद दिलाना चाहता हूँ । कटघरे में एक स्त्री खड़ी है और वह चीख चीख कर कह रही है ''इस बच्चे का पिता यही है मी लॉर्ड ।'' दूसरे कटघरे में एक विलेन टाईप का पुरुष चेहरे पर कुटिल मुस्कान लिए खड़ा है । उसका वकील कह रहा है ''लेकिन इसका तुम्हारे पास क्या सबूत है ?'' अब फिल्मों में ऐसा नहीं होता, इसलिए कि अब समय बदल गया है और विज्ञान ने साबित कर दिया है कि बच्चे के डी. एन.ए. से पिता का डी.एन.ए. मिलाकर यह जाना जा सकता है कि उसका वास्तविक पिता कौन है । अब तो टी.वी.धारावाहिक देखने वाले बच्चे भी इस बात को बखूबी जानते हैं कि बच्चे के पिता का पता लगाने के लिए दोनों के डी.एन.ए. का मिलान आवश्यक है । अब देखते हैं कि यह डी एन ए क्या बला है? इससे पूर्व यह जानना जरूरी है कि कोशिका क्या है।

'कोशिका क्या है?'

मनुष्य का शरीर लाखों जीवित कोशिकाओं से बना है ।कोशिका पदार्थ की वह संगठित इकाई है जिसमे सभी क्रियाएँ होती हैं जिनके सामूहिक रूप को हम जीवन कहते हैं । यह शरीर इन्हीं जीवित कोशिकाओं के कारण जीवित कहलाता है । इसे कोई आत्मा जैसी वस्तु जीवित नहीं रखती । यह सूक्ष्म कोशिकाएं हम केवल सूक्ष्मदर्शी से देख सकते हैं ।

शरीर की प्रत्येक कोशिका के भीतर एक केन्द्रक होता है । प्रत्येक कोशिका के प्रत्येक केन्द्रक के भीतर धागे के आकार की एक संरचना होती है ।

यह संरचना गुणसूत्र कहलाती है ।इस तरह प्रत्येक कोशिका के प्रत्येक केन्द्रक में इस संरचना के रूप में 46 गुणसूत्र होते हैं। यह गुणसूत्र 23 पिता से और 23 माता से आते हैं। यह गुणसूत्र डी एन ए और प्रोटीन से मिलकर बनते हैं ।

'डी एन ए क्या है ?'

डी एन ए का अर्थ है डीआक्सीराइबो नयूक्लीइक एसिड।डी एन ए अणु की संरचना घुमावदार सीढ़ी की तरह होती है। डी एन ए का एक अणु चार रासायनिक वस्तुओं से बनता है जिन्हें न्यूक्लिओटाईड्स कहते हैं। न्यूक्लिओटाईड एक नाइट्रोजन युक्त वस्तु है। डी एन ए सामान्यतः गुणसूत्र या क्रोमोसोम के रूप में होता है। गुणसूत्र या क्रोमोसोम में भले ही प्रोटीन और डी एन ए दोनों हो लेकिन डी एन ए ही जीन कहलाता है । जीन का यह सेट मानव जीनोम कहलाता है। एक कोशिका में गुणसूत्रों का सेट जीनोम का निर्माण करता है । मानव जीनोम में इन 46 गुणसूत्रों की व्यवस्था में डी एन ए के आधार जोड़े लगभग 3 अरब हैं । अगर विश्व की आबादी 6 अरब मानी जाये तो दो व्यक्तियों के डी एन ए एक से हो सकते हैं।

सार यह कि जीवित कोशिकाओं के गुणसूत्रों में पाए जाने वाले तंतुनुमा अणु को डी-अ क्सीराइबो न्यूक्लिक एसिड या डी एन ए कहते हैं। इसमें अनुवांशिक कूट निब) रहता है।

'प्रोटीन क्या है?'

अब कोशिका में उपस्थित दूसरे महत्वपूर्ण तत्त्व अर्थात प्रोटीन के बारे में भी कुछ जान लें । हमारा शरीर विभिन्न प्रकार के प्रोटीनों से बनता है । प्रोटीन या प्रोभूजिन एक जटिल कार्बनिक पदार्थ है जिसका गठन कार्बन, हाइड्रोजन,आक्सीजन एवं नाइट्रोजन तत्वों के अणुओं से मिलकर होता है।

कुछ प्रोटीन में इन तत्वों के अतिरिक्त आंशिक रुप से गंधक, जस्ता, ताँबा तथा फास्फोरस भी उपस्थित होता है। यह जीवद्रव्य या प्रोटोप्लाज्म छ्कोशिका की कोशिका झिल्ली के अंदर सम्पूर्ण पदार्थों को जीव द्रव्य कहते हैं।) के मुख्य अवयव हैं एवं

शारीरिक वृद्धि तथा विभिन्न जैविक क्रियाओं के लिए आवश्यक हैं।

प्रोटीन वस्तुतः छोटे छोटे अणुओं की कड़ियाँ होते हैं । यह प्रोटीन विभिन्न कड़ियों में एमीनो एसिड्स के मेल से बनता हैं जैसे न्यूक्लीइक अम्ल न्यूक्लिओटाईड्स से बनता है। इनमें कार्बन नाइट्रोजन के यौगिक शर्करा एवं फास्फेट से जुडे होते हैं। प्रोटीन जीवन की सुनियोजित संरचना का आधार होता है ,वहीं डी.एन.ए यह निर्धारित करता है कि शरीर में क्या बनाना है।

इस तरह हम देखते हैं कि जीवन के लिए दो रासायनिक व्यवस्थाएँ आवश्यक हैं प्रोटीन तथा डी.एन.ए (डीआक्सीराइबो नयूक्लीइक एसिड)। हर व्यक्ति का डी.एन.ए. अलग होता है । आजकल के मानव शरीर के डी.एन.ए. अन्य प्राणियों के डी.एन.ए. से भी मिलते हैं जैसे चिम्पांजी और मनुष्य के डी.एन.ए. 99.8 : मिलते हैं तथा कुत्ते व मनुष्य के 75: डी.एन.ए. आपस में मिलते हैं।

अब कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों की बात। सन् 1944 में यह प्रमाणित हुआ कि प्रोटीन नहीं बल्कि डी एन ए ही जीन होता है । सन 1953 में वाटसन और क्रिक नामक वैज्ञानिकों ने डी एन ए की संरचना का पता लगाया और बताया कि यह दो तंतुओं से बना हुआ घुमावदार सीढ़ी या दोहरी कुण्डलिनी के आकार का होता है। इस वैज्ञानिक सिद्धांत के प्रारम्भिक चरण में सन 1953 में मिलर नामक वैज्ञानिक ने एक प्रयोग किया था जिसमें उसने पृथ्वी के प्रांरभिक वायुमंडल में पाई जाने वाली जल वाष्प, मीथेन अमोनिया और हाइड्रोजन जैसी गैसों के मिश्रण में एक सप्ताह तक बिजली की चिनगारी प्रवाहित की जिसके फलस्वरूप एमिनो एसिड्स तैयार हुए। तत्पश्चात अनेक वैज्ञानिकों ने भी ऐसे ही प्रयोग किये जिससे राइबो शर्करा उनके फास्फेट तथा एडनिन जैसे अनेक जैव अणु तैयार हुए। ये अणु न्यूक्लिओटाईड्स के मूल घटक हैं। इनके ही बहुलकीकरण से न्यूक्लीईक एसिड बनता है।

अंत में एक और महत्वपूर्ण बात। आपको ज्ञात है जल ही जीवन है क्यों कहा जाता है? हमारे सौर परिवार में केवल पृथ्वी पर ही जीवन संभव हो सका इसका कारण यह है कि प्रोटीन की एंजाइमी किया के लिए मुक्तजल की उपस्थिति अनिवार्य थी। इस तरह जल जीवन के निर्माण का पहला तत्व है। हमारी पृथ्वी सूर्य से न अधिक दूर है न अधिक पास इस वजह से यहाँ वाष्पीकरण के पश्चात भी काफी जल शेष रहता है। अब आप समझ गए होंगे कि वैज्ञानिक चन्द्रमा और मंगल पर जीवन की सम्भावनाओं से पहले पानी की तलाश क्यों कर रहे हैं।

अब कुछ कविता की बात ...जीवन पर बहुत कुछ लिखा है कवियों ने लेकिन सबसे अधिक जो मुझे पसंद है वह है शायर निदा फाजली की यह नज़्म .. एक क्रूर सच्चाई है इसमें।

'ये जिन्दगी'

ये जिन्दगी
आज जो तुम्हारे
बदन की छोटी बड़ी नसों में
मचल रही है
तुम्हारे पैरों से चल रही है
तुम्हारी आवाज में गले से
निकल रही है
तुम्हारे लफ्जों में
ढल रही है.....
ये जिन्दगी.....
जाने कितनी सदियों से
यूँ ही शक्लें
बदल रही है
बदलती शक्लों
बदलते जिस्मों में
चलता-फिरता ये इक शरारा
जो इस घड़ी नाम है तुम्हारा !
इसी से सारी चहल-पहल है
इसी से रोशन है हर नजारा
सितारे तोड़ो
या घर बसाओ
अलम उठाओ
या सर झुकाओ
तुम्हारी आँखों की रोशनी तक है
खेल सारा
ये खेल होगा नहीं दोबारा ।
अलमजंग का निशान

-8871665060

मीठे बाबा

–नरेन्द्र दाभोलकर

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति का जब परोक्ष रूप से भी अस्तित्व नहीं था, तभी भानूदास गायकवाड़ मीठे बाबा बन गया था। वर्ष 1982 की बात है। बताया जाता है कि महाराष्ट्र के बारामती गांव का 25–26 साल का यह युवक अपने खेत में गुलर के पेड़ के नीचे सोया था। अचानक उसके शरीर में कुछ संचार होने के कारण वह जाग गया। और आश्चर्य! उसके स्पर्श में अचानक मीठापन आ गया। पहले तो किसी ने भरोसा नहीं किया। फिर चाय बनाने के लिए पानी लाया गया। उसमें शक्कर न डालकर भानुदास ने अपनी उंगली डाली, चाय तैयार हुई, जो बिल्कुल मीठी थी। भानुदास की ख्याति दूर–दूर तक फैल गई। इसमें बदमाशी की आशंका के चलते पुलिस ने उसे तलब किया। पुलिस अधिकारी के सामने बैठते समय उसने उससे हाथ मिलाया और बड़े आश्चर्यजनक ढंग से पुलिस अधिकारी के हाथों की उंगलियां मीठी बन गईं। इसी पकार से आकाशवाणी की एक वृत्तनिवेदिका की चूड़ियों को उसने स्पर्श किया। चूड़ियां मीठी बनीं और समाचार आकाशवाणी पर गूंजता रहा। इसके उपरांत उस समय खूब चलने वाले साप्ताहिक ने भानुदार पर आवरण कथा सुनाई। उसका शीर्षक था–'भगवान दत्त की कृपा हुई, शरीर में मिठास आई।' इसके चलते भगवान दत्त के मंदिर के निम्रण कार्य के लिए पैसे भी इक्ट्ठे होने लगे।

इसी बीच और एक घटना घटी। महाराष्ट्र में उस समय परमानसशास्त्र संस्था कार्यरत थी। उसने भानुदास गायकवाड़ के मीठेपन पर अनुसंधान किया। उनके लिए विज्ञान के ज्ञात नियमों के बाहर की यह घटना लगी। उन्होंने विश्वस्तर की परमानसशास्त्र संस्था से सम्पर्क किया। उनमें भी भानुदास के प्रति जिज्ञासा जागृत हुई। भानुदास गायकवाड़ देखते ही देखते 'मीठे बाबा' बन गया। असल में इनमें से एक ने भी भानुदास के कथित दैवी चमत्कार की वास्तविकता को खोजने का वैज्ञानिक प्रयास नहीं किया। इसके लिए मैं बारामती गया। वहां ॲड. विजय मोरे जी के घर पर भानुदास को बुलाया गया। उसके द्वारा मीठा बनाया गया पानी सील किया गया। पानी के ये सारे सीलबंद नमूने दिल्ली की श्रीराम रिसर्च इंस्टीच्यूट नामक मशहूर संस्था को भेज दिए गए।यह समझ नहीं आ रहा था कि पानी में निश्चित रूप से कौन सा द्रव्य मिलाया गया है। इसका पता लगाने के लिए सैंकड़ों परीक्षण करने की आवश्यकताथी। इस संबंध में कुछ जोखिम उठाकर मैंने 'सकरीन' का परीक्षण करने की बात कही।

शक्कर से 500 गुना मीठा रहने वाला 'सक्रीन' एक कृत्रिम रासायनिक द्रव्य है। इसकी गोलियां मैडिकल शॉपिज में मिलती हैं। वे सस्ती होती हैं और दो उंगलियों से उसका पाऊडर बनाकर उसे उंगलियों से लगाना बड़ा आसान रहता है। उसकी कम मात्रा भी पर्याप्त रहती है। इन सभी को ध्यान में रखकर मीठे बाबा भी इसी का प्रयोग करते होंगे, ऐसा अनुमान लगाकर उसके द्वारा मीठे बनाये पानी में 'सकरीन' की मात्रा की जांच करने को कहा। मेरा अनुमान बिल्कुल सही निकला। पानी के नमूने में सकरीन मिला था और हाथ धोकर बाद में लिए गए हर नमूने में सकरीन की मात्रा क्रमशः कम होती पाई गई। सकरीन पूर्णतः कृत्रिम पदार्थ है। इसके चलते इस घटना का परमानसशास्त्र तथा शरीर में निर्माण होने वाले अद्‌भुत स्रोतों से कुछ भी संबंध न होने की पुष्टि मिली।

असल में इस घटना को अंतराष्ट्रीय स्तर तक ले जाने से पहले संबंधित व्यकित या संस्था द्वारा यह परीक्षण करना चाहिए था। लेकिन इस घटना को चमत्कार मानकर इसके सबूत इक्ट्ठे करने में रूचि रखने वाले इसे क्यों करेंगे।

हाथ लगाने वाली हर वस्तु को मीठी बनाने का यह चमत्कार आगे जाकर हमारे अंनिस के चमत्कार प्रस्तुतिकरण में मनोरंजन और आकर्षण का एक हिस्सा बन गया। दर्शकों में से असंख्य लोगों को इस मिठास की अनुभूति हमारे कार्यकर्ता कराते हैं। उसके हाथ के सामने जो-जो तीखी वस्तुएं लाई जाती हैं, उसे वे मीठी बना देते हैं। कोई चालाक श्रोता हाथ धोकर, पोंठकर दुबारा चमत्कार करने की मांग करता है। हमारे कार्यकर्ता अच्छे ढंग से हाथ पर बहुत सारा पानी लेकर, साबुन लगाकर, तौलिये से हाथ पोंछ लेते हैं, फिर भी अपनी उंगलियों की मिठास कायम रहने के चमत्कार को दिखाते हैं। इस प्रकार चुनौतियों की संभावनाओं को ध्यान में रखकर ही हमारे कार्यकर्ता पहले से तैयार रहते हैं।

कई स्कूलों में किसी न किसी रूप में यह चमत्कार कई बार दिखाया जाता है। इसके चलते अब कुछ जगहों पर मीठे बाबा का चमत्कार शुरू करते ही बच्चे 'सकरीन सकरीन' कहकर चिल्लाते हैं। यह है अंधश्रद्धा निर्मूलन कार्य का वास्तविक असर।

असल में मीठेबाबा का भंडाफोड़ करने हेतु इतना काफी था, लेकिन मीठेबाबा इतने में चुप बैठने वाला नहीं था। महाराष्ट्र विशाल है। यहां लोग चमत्कार देखने और फंसने के लिए उत्सुक रहते हैं। इस संबंध में कोई कानून न होने के कारण मीठेबाबा का महाराष्ट्र-भ्रमण लगातार चलता रहा।

एक बार मुंबई के मुख्य डाकघर में जाकर उसने चमत्कार के प्रस्तुतीकरण की शुरूआत की। लोगों की भीड़ जमा हुई। पोस्ट ऑफिस में काम करने वाली समिति की एक कार्यकर्ता ने इसे देखा। उसने बाहर जाकर झट से सकरीन की गोलियां प्राप्त की, उसका चूर्ण बनाकर उंगलियों पर पोतकर मीठेबाबा का चमत्कार स्वयं ही बड़े जोर-शोर से दिखाना शुरू कर दिया।

मीठेबाबा ने बोरिया-बिस्तर समेटा, लेकिन वह इतनी आसानी से हार मानने वाला नहीं था। उसने कुछ समय बाद मुंबई में 'मातोश्री' बंगले पर बालासाहब ठाकरे से भेंट की। बाला साहब को भानुदास ने हस्तस्पर्श से मिठास दे दी। 'दैनिक सामना' ने पूरे एक पन्ने पर इस खबर को जगह दी। उसमें इस बात का उल्लेख किया था कि बालासाहब ने अपने स्टाइल में कहा कि 'अच्छा हुआ, अब तक हमें बारामती के एक ही बाबा का पता था (शरद पवार) जो कड़ूबाबा था, आप मीठेबाबा मिल गए।'

इसके कुछ दिन बाद 'दैनिक सकाल' अखबार के पहले पन्ने पर मीठे बाबा की चार कालम की खबर ने सभी को आकर्षित किया। उसमें मेरे प्रति गुस्से के साथ चुनौती भी थी। असल में इस प्रकार की खबरें छापना 'दैनिक सकाल' अखबार की परम्परा के विपरीत था, जो मैंने किया। 'सकाल' ने उसे प्रसिद्ध भी किया। इस मामले से विस्मृति में गए मीठे बाबा को अनायास और बड़ी प्रसिद्धि मिली। इसके चलते चुनौती-प्रक्रिया को पूरा करने हेतु मीठेबाबा से बातचीत करनी चाही। मीठेबाबा को इसमें जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। अलग-अलग तरह के विवादास्पद बयान देकर अपने-आपको सुर्खियों में रखने की उसकी मंशा थी। इसी वजह से चमत्कार को साबित करने की चुनौती केवल रोचक समाचार का ही विषय बनकर रह गया। इससे किसी उपलब्धि की अपेक्षा बहुत कम थी।

इस दौरान मीठे बाबा और पूना के रोटरी क्लब द्वारा एक अलग ही दांवपेच रचाया गया। रोटरी क्लब ने मीठे बाबा के चमत्कारों का कथित वैज्ञानिक परीक्षण करने की घोषणा की। इसका नियंत्रण मुझे नहीं मिला था। साथ ही यह परीक्षण कैसे होगा,इसके बारे में भी कोई विचार-मंथन नहीं हुआ था। कोई एक जादूगर, भौतिक वैज्ञानी, आहार विशेषज्ञ को बुलाकर रोटरी क्लब ने यह परीक्षण करवाया। मीठे बाबा द्वारा मीठा बनाया गया पानी लोगों को दिया गया, लेकिन किसी प्रयोगशाला में इसे नहीं भेजा। यह सोची-समझी साजिश थी। यह एक पूर्वनियोजित षड्यंत्र था। इसके चलते भानुदास गायकवाड़ के दैवी चमत्कार के सच होने को बल मिला। समाचार-पत्रों के लिए खबरें पहुंचाई गई, लेकिन पूना के एक किसी भी अखबार में इसे जगह नहीं मिली।

औरंगाबाद के 'दैनिक लोकमत' के पहले पन्ने पर यह खबर जरूर प्रकाशित हुई। (उस समय लोकमत पूना से प्रकाशित नहीं होता था।) लोकमत के अन्य संस्करणों में भी यह सनसनीखेज खबर सुर्खियां बनबर प्रसिद्ध हुई। उसमें लिखा था कि 'मीठे बाबा ने चुनौती-प्रक्रिया बड़ी सफलता से पूरी की, लेकिन खबर मिलकर भी दाभोलकर नहीं आए।' इस परीक्षण में मीठेबाबा की दैवी शक्ति प्रमाणित हुई है। उसने अब मांग की है कि 'दाभोलकर अब पैदल चलकर प्रायश्चित के रूप में पंढरपुर-आलंदी की तीर्थयात्रा करें।'

मराठवाड़ा में दैनिक लोकमत दूर-दूर तक पहुंचता है। इस कारण यह खबर पढ़कर हमारे कार्यकर्ता थोड़े सिटपिटाए। इस झूठी खबर का खंडन मैंने तुरंत किया, लेकिन दैनिक लोकमत ने इसे तीसरे दिन और अंदर के पन्ने पर प्रकाशित किया। कहर तो तब हुआ, जब रोटरी क्लब की सदस्या रही एक वकील महिला ने मेरे ऊपर मानहानि की एक लाख का नोटिस भेज दिया। मैंने इसके उत्तर में लिखा कि 'मीठे बाबा सकरीन का आधार लेकर यह चमत्कार करता है, इस बात पर मैं कायम हूं, इसलिए यह मुकद्दमा चलना चाहिए। इसके माध्यम से न्यायाधीश के सामने यह सिद्ध करने का मुझे मौका मिलेगा।' इसके बाद मुकद्दमें का ज्वार शांत हुआ। मीठा बाबा अपने कथित चमत्कार करता रहा। उसने इस बात को अच्छी तरह से समझ लिया था कि 'यदि मुझे सुर्ख्यिों में रहना है तो अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति को मेरे चमत्कारों पर गौर करना होगा तथा उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए मुझे उन्हें उकसाना होगा।' उसकी इस चाल को समझकर हमने भी जान-बूझकर उसे नजरअंदाज किया।

एक बार पूना में महात्मा फुले सभागार में मैं और डॉ. श्रीराम लागू जी का 'विवेक जागरण : वाद-संवाद' का कार्यक्रम चल रहा था। सभागार में भारी भीड़ थी। कार्यक्रम अपनी चरम सीमा पर था कि दरवाजे पर खड़े कार्यकर्ताओं से झगड़ा करते हुए मीठे बाबा अंदर घुस गया। उसके साथ कैमरा लेकर स्थानीय केबल का आदमी और वकील भी था। 'दाभोलकर मुझे बदनाम करते हैं इसलिए उन्हें सीधे चुनौती देने आया हूं,' ऐसा दावा करते हुए भीड़ में शोर मचाते हुए वह आगे बढ़ने लगा।

उसे कैसे रोका जाए, इस प्रश्न से कार्यकर्ता परेशान हो गए। क्योंकि उसका इरादा ही धांधली मचाना था। संयोग से इस कार्यक्रम के लिए उस इलाके के पुलिस थाने के पुलिस अधीक्षक आए हुए थे। वे सिविल ड्रेस में थे। उन्होंने परिस्थिति को भांप कर मीठे बाबा को तुरंत बाहर निकाला।

तहकीकात के बाद यह भी पता चला कि चुनौती देने हेतु मीठे बाबा जिस वकील को लेकर आया था, वह भी फरेबी निकला।

इसके बाद दो बार मैं भाषण देने हेतु बारामती गया। किसी के न बुलाने पर भी मीठे बाबा मेरे सामने वाली पंक्ति में बैठ गया। वह इसके पूर्व 'सकाल' और 'लोकमत' में छपी खबरों के कटिंग लेकर आया था और उनके जेरॉक्स उपस्थित प्रमुख अतिथियों को बांट रहा था। लेकिन सभी उसे नजरअंदाज किया। उसने समय-असमय मुझे फोन करके, फोन कर अनाप-शनाप बोलकर, धमकी देकर आदि कई तरीकों से मुझे उकसाने की कोशिश की। ये सारे प्रकरण अपने आप तभी बंद हुए जब उसे पता चला कि मेरा मानसिक स्वास्थ्य बिगाड़ने में इन बातों का कोई असर नहीं हो रहा है। मैं और हमारी अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति अपने विवेकवादी और विज्ञाननिष्ठ विचारों-आचारों पर प्रतिबद्ध हो अविचल कार्य करती रही। उसका यह नतीजा निकला कि मीठे बाबा का जादू कालौघ में खत्म हुआ।

°°°

लदी हुई है रेशमी चादरों से
वो हरी मज़ार।
पर बाहर एक बूढ़ी अम्मा को
ठंड से ठिठुरते देखा है।

मस्तिष्क आघात के मरीज को कैसे पहचानें ?

डा महेश सिन्हा --

मस्तिष्क आघात --जी वही, जिसे कई बार ब्रेन-स्ट्रोक भी कह दिया जाता है अथवा आम भाषा में दिमाग की नस फटना या ब्रेन-हैमरेज भी कह देते हैं। इस के बारे में पोस्ट डाक्टर साहब लिखते हैं-

एक पार्टी चल रही थी, एक मित्र को थोड़ी ठोकर सी लगी और वह गिरते गिरते संभल गई और अपने आस पास के लोगों को उस ने यह कह कर आश्वस्त किया कि सब कुछ ठीक है, बस नये बूट की वजह से एक ईंट से थोड़ी ठोकर लग गई थी। (आस पास के लोगों ने ऐम्बुलैंस बुलाने की पेशकश भी की) साथ में खड़े मित्रों ने उन्हें साफ होने में उन की मदद की और एक नई प्लेट भी आ गई। ऐसा लग रहा था कि इन्ग्रिड थोड़ा अपने आप में नहीं है लेकिन वह पूरी शाम पार्टी तो एकदम एन्जॉय करती रहीं। बाद में इन्ग्रिड के पति का लोगों को फोन आया कि कि उसे हस्पताल में ले जाया गया लेकिन वहां पर उस ने उसी शाम को दम तोड़ दिया।

दरअसल उस पार्टी के दौरान इन्ग्रिड को ब्रेन-हैमरेज हुआ था -अगर वहां पर मौजूद लोगों में से कोई इस अवस्था की पहचान कर पाता तो आज इन्ग्रिड हमारे बीच होती। ठीक है ब्रेन-हैमरेज से कुछ लोग मरते नहीं है --लेकिन वे सारी उम्र के लिये अपाहिज और बेबसी वाला जीवन जीने पर मजबूर तो हो ही जाते हैं।जो नीचे लिखा है इसे पढ़ने में केवल आप का एक मिनट लगेगा।

स्ट्रोक की पहचान ---

एक न्यूरोलॉजिस्ट कहते हैं कि अगर स्ट्रोक का कोई मरीज उन के पास तीन घंटे के अंदर पहुंच जाए तो वह उस स्ट्रोक के प्रभाव को समाप्त 're-verse½ भी कर सकते हैं---पूरी तरह से। उन का मानना है कि सारी ट्रिक बस यही है कि कैसे भी स्ट्रोक के मरीज की तुरंत पहचान हो, उस का निदान हो और उस को तीन घंटे के अंदर डाक्टरी चिकित्सा मुहैया हो, और अकसर यह सब ही अज्ञानता वश हो नहीं पाता।

स्ट्रोक के मरीज की पहचान के लिये तीन बातें ध्यान में रखिये --और इस से पहले हमेशा याद रखिये।

डाक्टरों का मानना है कि एक राहगीर भी तीन प्रश्नों के उत्तर के आधार पर एक स्ट्रोक के मरीज की पहचान करने एवं उस का बहुमूल्य जीवन बचाने में योगदान कर सकता है.......इसे अच्छे से पढ़िये और मन में बैठा लीजिएः

1- Smile- आप उस व्यक्ति को मुस्कुराने के लिये कहिए।

2- Talk- उस व्यक्ति को कोई भी सीधा सा एक वाक्य बोलने के लिये कहें जैसे कि आज मौसम बहुत अच्छा है।

3- Raise -उस व्यक्ति को दोनों बाजू ऊपर उठाने के लिये कहें। अगर इस व्यक्ति को ऊपर लिखे तीन कामों में से एक भी काम करने में दिक्कत है, तो तुरंत ऐम्बुलैंस बुला कर उसे अस्पताल शिफ्ट करें और जो आदमी साथ जा रहा है उसे इन लक्षणों के बारे में बता दें ताकि वह आगे जा कर डाक्टर से इस का खुलासा कर सके।

नोट करें -- स्ट्रोक का एक लक्षण यह भी है -

1. उस आदमी को जिह्वा (जुबान) बाहर निकालने को कहें।

2. अगर जुबान सीधी बाहर नहीं आ रही और वह एक तरफ को मुड़ सी रही है तो भी यह एक स्ट्रोक का लक्षण है।

००0००

अंधविश्वास के चलते

मुझे भी बचा लेंगे कन्हैया सोचकर मंदिर की छत से लगा दी छलांग

अपने आराध्य पर अटूट विश्वास के चलते एक युवक ने वृंदावन स्थित एक मंदिर की दूसरी मंजिल से यह सोचकर छलांग लगा लेते हैं तो उसे भी बचा लेंगे। यह घटना की परिणति यह हुई कि युवक की जान तो बच गई, लेकिन उसके दोनों पैर फ्रैक्चर हो गए। अस्पताल में अब युवक अपने किए पर अफसोस जाहिर कर रहा है। पुलिस युवक को मानसिक तौर पर कमजोर बता रही है।

जानकारी के अनुसार बदायूं के गांव हजरतगंज निवासी 20 साल का विकास तीन दिन पहले वृंदावन घूमने के लिए आया था। अस्पताल में उसने बताया कि वह भगवान श्रीकृष्ण का भक्त है और अपने आराध्य से बहुत ज्यादा लगाव था। उसने कहा कि मैं गांव में भी भगवान की भक्ति करता था। उसने बताया कि मेरा मन किया कि भगवान सभी को मौत के मुंह से बचा लेता है, तो मैं भी कूद कर देखूं कि मेरा कन्हैया मुझे बचा लेगा। यही सोच कर उसने बुधवार को प्रेम मंदिर की दूसरी मंजिल से छलांग लगा दी। विकास से पूछा तो उसने कहा कि किसी ने नहीं बताया बस विश्वास था कि मैं उनसे इतना प्यार करता हूं तो वो मुझे बचा लेंगे। अपने किए पर उसे अब पछतावा हो रहा है। उसका कहना है कि उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। युवक की स्थिति के बारे में बताते हुए संयुक्त जिला अस्पताल के चिकित्सक डॉ. विपिन चाहर ने बताया कि इस घटना में युवक की पेल्विक बोन के साथ ही दोनों पैरों में भी फ्रैक्चर हुआ है। चिकित्सक ने बताया कि युवक की हालत गंभीर है।

राजस्थान के विधायक बोले, विधान सभा में है भूत-प्रेत की परछाई

जेएनएन, जयपुर-राजस्थान के विधायाकों कोअब विधान सभा भवन अपशगुन लगने लगा है। विधायक चाहते हैं कि विधान सभा कम्पलेक्स में यज्ञ-हवन करवाने और गंगाजल के साथ पूरे कम्पलेक्स को धोया जाये। विधायकों का कहना है कि सन् 2000 में विधान सभी इस नई इमारत में तबदील हुई थी । तब से कभी 200 विधायक इकट्ठे नहीं बैठैं। राजसथान में विधायकों की कुल गिनती 200 है परन्तु पिछले 18 वर्षो में सदन में इकट्ठे कभी पूरे विधायक नहीं बैठै। कभी किसी विधायक की मौत हो गई तो कभी किसी विधायक को जेल जाना पड़ा। विधायकों ने मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे और विधान सभी सपीकर कैलाश मेघवाल को कम्पलेक्स में यज्ञ-हवन करवाने की अपीरल की है।

शमशानघाट की जमीन पर बनी है इमारतः

विधान सभा में सरकार मुख्य सचेतक तथा भाजपा के सीनियर विधायक कालू लाल गुज्जर का कहना है कि यह विधान सभा की इमारत शमशानधाट की जमीन पर बनी हुई है इस कारण यहां पर आत्माएं घूम रहीं हैं । इसी कारण से यहां कभी सारे 200 विधायक एक साथ नहीं बैठै। उन्होंने कहा कि विधान सभा भवन में भूत, प्रेतों का साया है। गुज्जर ने बताया कि मुख्यमंत्री को हवन करवाने की की गई है।

खोज खबर

मस्तिष्क की मात्रा और मोटाई मिर्गी के जोखिम का पूर्वानुमान लगा सकती है

लंदन : भारतीय मूल के एक वैज्ञानिक समेत वैज्ञानिकों के एक समूह ने निष्कर्ष निकाला है कि मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों में तंत्रिका कोशिकाओं ग्रे मैटरी की मोटाई और मात्रा मिर्गी के जोखिम का पूर्वानुमान लगा सकती हैं। पत्रिका 'ब्रेन' में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार मिर्गी में जितना माना जाता है, उससे कहीं ज्यादा भौतिक अंतर होता है, यहां तक उन प्रकार की मिर्गियों में भी जिन्हें मृदु माना जाता है और दौरे नियंत्रण में होते हैं।

समय पूर्व जन्मे बच्चों के देर से बोलने का कारण पता चला

समय पूर्व जन्म लेने वाले बच्चों के देर से बोलने की वजह का पता लगा लिया गया है। वैज्ञानिकों ने पाया कि ऐसे बच्चों में मस्तिष्क के उस हिस्से के विकास में देरी हो सकती है, जिसका संबंध सुनने और समझने से होता है। इसके चलते वे दो साल की उम्र में भी बोलने की समस्या से जूझ सकते हैं। अमेरिका की इलिनॉयस यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर ब्रायन मोनसन ने कहा, 'इस बात को लेकर हमारी सीमित समझ रही है कि समय पूर्व जन्में बच्चों के मस्तिष्क में श्रवण संबंधी भाग का विकास किस तरह होता है? पूर्व के शोध से हमें पता चल चुका है कि गर्भावस्था की पूरी अवधि के बाद जन्म लेने वाले बच्चे गर्भ में रहने के दौरन ही न सिर्फ सुनते हैं कि बल्कि सीखते भी हैं।' शोधकर्ताओं के अनुसार, समय पूर्व जन्में ९० शिशुओं पर मैग्नेटिक रेजोनेन्स इमेजिंग (एमआरआई) की मदद से अध्ययन किया गया। इसके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है।

'लव हार्मोन' सामाजिक संकेतोंको समझने में करता है मदद

बॉस्टन : हार्वर्ड के वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि प्रेम हार्मोन नाम से लोकप्रिय ऑक्सीटोसिन मस्तिष्क को विभिन्न सामाजिक संकेतों को समझने में मदद पहुंचाता है। उनका अध्ययन बताता है कि ऑक्सीटोसिन मस्तिष्क में परिवर्तनकारी की भूमिका निभाता है, वह कुछ खास उद्दीपकों को बढ़ा देता है, जबकि कुछ को घटा देता है तथा मस्तिष्क हर पल जो भी सूचनाएं हासिल करता है, उसके लिए जरूरत के हिसाब से बाधा उत्पन्न करने में सहयोग करता है। सामाजिक संकेतों को समझने में ऑक्सीटोसिन की भूमिका की जांच करते हुए अमरीका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्त्ताओं ने प्रचलित आचरण–नर चूहे का मादा चूहे के प्रति आकर्षण–से शुरुआत की। अध्ययन से पता चला है कि यह आचरण बस सामाजिक नहीं है बल्कि यह नर चूहे के मस्तिष्क में ऐसा अंतस्थ होता है। जब नर चूहों को मादा चूहों के विशेष रसायन जनित संकेतों से रूबरू कराया जाता है, तो उसके मध्य के प्रमस्तिष्ठक खंड में न्यूरॉन सक्रियता का स्तर बढ़ा देता है, लेकिन जब उसी चूहे को नर चूहे के ही रसायन जनित संकेतों से रूबरू कराया जाता है तो ये न्यूरॉन अपेक्षाकृत कम उद्दीपन दर्शाता है। इन आंकड़ों से लैस अनुसंधानकर्त्ताओं ने ऑक्सीटोसिन के लिए जिम्मेदार जीन को लक्ष्य बनाया। माना जाता है कि ऑक्सीटोसिन कृंतकों में वात्सल्य से लेकर एक विवाह तक सामाजिक अंतर्सबंधों में शामिल है।

स्वास्थ्य

मशरूम से हो सकता है डिप्रेशन का इलाज

सेहत के लिए फायदेमंद माने जाने वाले मशरूम की एक नई खूबी सामने आई है। नए अध्ययन में पाया गया है कि यह डिप्रेशन (अवसाद) के इलाज में भी मददगार साबित हो सकता है। शोधकर्त्ताओं के अनुसार अवसाद रोधी ऐसी कई दवाएं हैं जिससे इस समस्स्रा का मुकाबला किया जा सकता है, लेकिन वे दवाएं मस्तिष्क में भावनाओं से जुड़ी प्रतिक्रियाओं पर असर डाल सकती हैं। ब्रिटेन के इंपीरियल कालेज लंदन के शोधकर्त्ताओं ने पाया कि मशरूम में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो इन दुष्प्रभावों से बचाव कर सकते हैं। पूर्व के शोध में भी यह पाया जा चुका है कि मशरूम मे ंसाइलोसाबिन नामक कम्पाउंट पाया जाता है जो डिप्रेशन के खतरे को कम कर सकता है। नए अध्ययन में शोधकर्ताओं में संभावित नई दवा को लेकर इस बात पर गौर किया कि इसका भावनाओं से जुड़ी मस्तिष्क की गतिविधियों पर क्या असर पड़ता है? उन्होंने साइलोसाइबिन से रोगियों के मूड और डिप्रेशन के लक्षण में सुधार आया।

कसरत के शरीर पर चमत्कारी प्रभाव

युवावस्था में ही की गई कसरत का प्रभाव बुढ़ापे तक बना रहता है। व्यक्ति बुढ़ापे में स्वस्थ रहता है, यही नहीं, वृद्धावस्था में कसरत करने से जवानी लौट आती । सर्वांग की सक्रियता बढ़ाजाती है। व्यक्ति में चुस्ती-फुर्ती व चंचलता भी रहती है।

सोयाबीन है पोषक तत्वों का जख़ीरा

सोयाबीन प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और वसा का मुख्यस्रोत है। इसमें मौजूद पोषक तत्वों से होनेवाले ला लाभ है लाजवाब।

◦ उच्च रक्तचाप है तो सोयाबीन इसे कम करता है। इसमें मौजूद आयरन शरीर में खून की कमी नहीं होने देता। 'आईसोप्लेबोंस' रसायन ऑस्टियोपोरोसिस नहीं होने देता।

◦ शरीर विकास या फिर नाखून, बाल अािद नहीं बढ़ने पर सोयाबीन का सेवन करने से लाभ होता है। यह मिर्गी, याददाश्त बढ़ाने एवं दिमागी कमज़ोरी भी दूर करता है।

◦ यदि आपको रात में नींद नहीं आती, तो सोयाबीन खाएं। इसमें मौजूद मैग्नीशियम नींद आने में सहायता करता है। सोया चंक्स, सोया मिल्क का सेवन करें।

◦ इसमें लेसीथिन पाया जाता है, जो लिवर के लिए फायदेमंद है। मधुमेह के रोगियों को इसके तेल से बनी चीजों का सेवन अत्याधिक लाभ देता है।

◦ वज़न बढ़ाने के लिए अंकुरित सोयाबीन का सेवन और गठिया रोग में सोयाबीन का दूध पीना बेहद फायदेमंद है। वहीं, सोयाबीन की छाछ पीने से पेट के कीड़े भी मर जाते हैं।

-सोनिया नारंग, डाइटिशियन

(अमर उजाला से साभार)

बच्चों का कोना

विटामिन सी के लिए जांच

कई ताजे फलों और सब्जियों (नींबू, संतरा, टमाटर, हरी सब्जियां, काली मिर्च) आदि में 'विटामिन सी' भरपूर मात्रा में रता है, जो हमारे शरीर में 'कोलेजेन' नामक प्रोटीन बनाने में मदद करता है। जब हमें घाव हो जाता है या हड्डी टूट जाती है, कोलेजेन घाव-चोट को भरने में मदद करता है। विटामिन सी का रासायनिक नाम - 'एस्कॉर्बिक एसिड' है। आइए जांच करें कि किस पदार्थ में विटामिन सी अधिक मात्रा में रहता है और किसमें कम।

जरूरी सामान :

कई तरह के ज्यूस और तरल जिनकी जांच की जानी है। टिंचर आयोडीन (जहरीला रहता है), स्टार्च सासेलूशन (चावल का मांड), कागज के कप और इंक ड्रॉपर।

इस तरह से करें :

जिस नमूने की जांच करनी है, उसके आधे कप में एक चम्मच स्टार्च सोलूशन घोल लें अब ड्रॉपर से टिंचर आयोडीन की एक-एक बूंद इस घोल में डालकर चम्मच से चलाते जाएं और बूंदों की संख्या गिनते जाएं। जब घोल का रंग बदल जाए तो नोट कर लें कि टिंचर आयोडीन की कितनी बूंदें मिलानी पड़ी।

यही प्रक्रिया सभी नमूनों के साथ दोहराएं। रंग बदलने के लिए टिंचर आयोडीन की जितनी ज्यादा बूंदों की जरूरत पड़े, उस नमूने में उतना ही ज्यादा विटामिन सी है।

कुछ चर्चा :

आयोडीन पहले विटामिन सी के साथ रासायनिक क्रिया करता है। इस क्रिया के दौरान रंग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जब नमूने में मौजूद पूरी विटामिन सी समाप्त हो जाती है, उसके बाद ही आयोडीन, स्टार्च के साथ क्रिया शुरू करता है। स्टार्च और आयोडीन की रासायनिक क्रिया में घोल का रंग गाढ़ा भूरा हो जाता है।

फलों को ब्राउन होने से बचाना

अधिकांश फलों में 'एंजाइम' नामक रसायन रहते हैं कुछ एंजाइम हवा में मौजूद आक्सीजन से क्रिया करके भूरे हो जाते हैं। फलों के छिलके एंजाइम को आक्सीजन के संपर्क में आने नहीं देते। सेब या केला काटिए, थोड़ी देर में ही कटे हुए टुकड़ों का रंग भूरा होने लगेगा। आइए देखें, कैसे कुछ रसायन इन्हें भूरा होने से बचाते हैं।

जरूरी सामान :

सेब, केला तथा अन्य फल जिनकी जांच करनी है, विटामिन सी की गोलियां, नींबू, पेपर प्लेट, तीन पेपर कप और पानी।

इस तरह से करें :

तीनों कप में आधा-आधा कप पानी भर लें। एक कप यूं ही रहने दें। दूसरे कप में नींबू का रस और तीसरे कप में विटामिन सी की गोलियां मिला दें।

फलों के छोटे-छोटे टुकड़े काटकर तीन प्लेटों में रख दें। एक प्लेट पर पानी, दूसरे पर नींबू पानी और तीसरे पर विटामिन सी के घोल का छिड़काव कर दें।

आपको दस-दस मिनटों के अंतराल से फलों के टुकड़ों को ध्यान से देखना है। आप पाएंगे कि सबसे पहले सादे पानी के छिड़काव वाले फल भूरे होने लगेंगे, जबकि नींबू पानी और विटामिन सी वाले फलों के टुकड़ोंमें भूरापन काफी देर बाद आता है।

कुछ चर्चा :

नींबू के रस में विटामिन सी रहता है। विटामिन सी एंटी-ऑक्सीडेंट है, अतः यह भूरे होने की प्रक्रिया को धीमा कर देता है। रासायनिक क्रियाओं के चलते धीरे-धीरे विटामिन सी खत्म हो जाता है।, जिसके बाद फल भूरा होने लगता है।

गर्म करने पर विटामिन सी अन्य रसायनों में परिवर्तित हो जाता है। उपरोक्त प्रयोग सभी घोलों को गर्म करके दोहराकर देखें।

तर्कशील सोसाइटी कालांवाली की ओर से कालांवाली वैज्ञानिक विचारों का प्रचार

तर्कशील सोसाइटी कालांवाली की तरफ से 2 दिसम्बर 2018 को कालांवाली के दो स्कूलों में तर्कशील वैन गई। जिसमें बच्चों को वैज्ञानिक विचारों की जानकारी दी गई। पुस्तक प्रदर्शनी, जादू के ट्रिक्स, शहीद भगत सिंह के जीवन और उनके विचारों से सबंधित पहले हुए एक्जाम में भाग लेने विद्यार्थियों को प्रशंसा पत्र दिए गए।ऐसे प्रोग्राम में विद्यार्थी बहुत दिलचस्पी लेते हैं।आज के इस प्रोग्राम जगदीश,शमशेर,दर्शन,हरचरण,परमजीत और मैं स्वंय शामिल थे।

तर्कशील सोसाइटी कालांवाली द्वारा गांव सुखचौन, फग्गू, और कुरंगावाली के स्कूलों में तर्कशील साहित्य वैन का सफर जारी रहा। वहां बच्चों को वैज्ञानिक विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए विचार चर्चा वैज्ञानिक प्रयोग, जादू के ट्रिक्स व पुस्तक प्रदर्शनी द्वारा जानकारी प्रदान की। सहयोगी साथी बलजीत सिंह,शमशेर, जगदीश, सतनाम, सुखविंदर सिंह, बूटा सिंह, रिछपाल सिंह, परमजीत सिंह और अजायब जलालाना भी शामिल थे...ऐसे विचारों को बच्चों में पहुंचाने की बहुत बड़ी जरूरत महसूस हुई।

अपना अभियान जारी रखते हुए दिनांक 18 फरवरी को डबवाली में डॉ. बी.आर. अंबेडकर जागृति मंच डबवाली की ओर से चलाए जा रहे अभियान बेटी पढ़ाओ की रैली में शामिल हो कर तर्कशीलों द्वारा अंधविश्वासों के विरुद्ध वैज्ञानिक विचारों के प्रचार प्रसार के लिए भीअपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। 19 फरवरी को गांव अबूबशहर और डबवाली के स्थानीय स्कूल में तर्कशीहल प्रोग्राम पेश किया । जिसमें मुख्य वक्ता के तौर पर राम सिंह जगतार सिंह सहयोगी पुष्पिंदर सिंह, कृष्ण कायत और बलौर सिंह शामिल थे । काफी संख्या में साहित्य बेचा गया `और अध्यापको ने आर्थिक सहयोग भी दिया।

रिपोर्ट -अजायब जलालाना

तर्कशील सोसाइटी कालांवाली की टीम ने किया लोगों को जागरूक!

नये वर्ष के आगमन पर आनन्दगढ़ के औगाड.(चौपाल) में इकट्ठे हुए लोगों को मा. शमशेर चोरमार ने तर्कशीलता की जीवन में जरूरत पर बात करते हुए कहा आज इस विज्ञान के युग में जीवन में आगे बढ़ने और सामाजिक सौहार्द के लिए वैज्ञानिक विचारों का होना अति जरूरी है।क्योंकि इससे हम वास्तविकताओं को समझने में सक्षम होंगे।जब हम अपनी समस्याओं का हल किसी दैवीय चमत्कारों में से ढूंढ़ने की कोशिश में रहेंगे तब तक वैज्ञानिक विचार बनने मुश्किल हैं। अगर पूरी दुनियां ने विज्ञान के बल पर तरक्की की है,तो हम टोनों-टोटकों से कैसे आगे बढ़ पाएंगे? मा. अजायब जलालाना ने चोटी कटने से लेकर पूरी सामाजिक व्यवस्था की संरचना की जानकारी वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित दी।2 घण्टे से भी अधिक समय तक तर्कशील विचारों और जादू के ट्रिकों,वैज्ञानिक प्रयोगों के माध्यम से तर्कशीलों ने अपनी बातों को गांव वासियों के सामने रखा और उन्होनें बड़े गौर से सुना और समझा। सुरेन्द्रपाल सिंह ने कहा तर्कशील सोसाइटी अंधविश्वासों,चमत्कारिक घटनाओं की व्याख्या करने के लिए गांवों में लोगों को जागरूक करने के लिए अपना अभियान चलाती रहती है। गाइड ऐंड काउंसलर विशेषज्ञ राजिंदर योधपुरिया भी इस टीम में शामिल थे।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक मीटिंग

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की द्विमासिक मीटिंग 14 जनवरी को, सोसायटी प्रधान गुरमीत सिंह की अध्यक्षता में कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई। जिसमें पूर्व घोषित एजेंडे पर उपस्थित कार्यकर्ताओं ने अपने विचार रखे। पत्रिका पर केंद्रित करते हुए सदस्यों ने इसकी सदस्य संख्या बढ़ाने पर के लिए विभिन्न सुझाव रखे और निकट भविष्य में तर्कशील केंद्र निर्माण के लिए प्रयास करने पर भी विचार किया गया। पत्रिका सम्पादक प्रा.बलवन्त सिंह ने पत्रिका के प्रचार प्रसार और तर्कशील केंद्र निर्माण को लेकर कार्यकर्ताओं को अग्रणी भूमिका निभाने पर बल दिया। प्रचार सचिव सुभाष तितरम ने पत्रिका और तर्कशील साहित्य के प्रसार को प्रमुखता से चलाने पर बल दिया। इसके अतिरिक्त कृष्ण राजौंद, कृष्ण कुमार पूंडरी, बलदेव महरोक, पदम् तरावड़ी, पलविंदर सफीदों आदि ने भी विचार चर्चा में भाग लिया। सोसायटी कार्यकारिणी के सदस्य बलजीत भारती ने मंच संचालन किया। सोसायटी की मीटिंग को सफल बनाने के लिए कुरुक्षेत्र के साथियों ने अहम भूमिका निभाई।

डा. हरपाल आर्य के मरने के बाद प्रदान की देह

इंद्री 30 जनवरी–तर्कशील सोसायटी के हलका प्रधान जयदेव नंबरदार, गांव के पिता डा. हरपाल सिंह आर्य (जन्म 6-8-1946) की दिनांक 29-1-2018, सोमवार को हृदय गति रुकने से मृत्यु हो गई। डा. हरपाल आर्य ने मृत्यु से पहले अपने परिवार वालों को कहा था कि मेरे मरने के उपरांत मेरा शरीर कल्पना चावल मैडीकल कालेज को प्रदान किया जावे। जयदेव नंबरदार ने बताया कि मेरे पिता का एक सपना था कि मेरे शरीर को चिता न दी जाये बल्कि मेडीकल रिसर्च के लिये चिकित्सा महाविद्यालय दे दी जावे। यह प्रेरणा मेरे पिता जी ने तर्कशील सोसायटी से ली थी।

इस बात को लेकर इंद्री हलके में अत्यंत प्रशंसा की जा रही है। आप को बता दें कि मृतक हरपाल आर्य ने 16 जनवरी को फार्म भरकर चंडीगढ़ पीजीआई को रजिस्टर्ड पोस्ट के द्वारा भेजे था। जयदेव का कहना है कि इंद्री हलके में यह एक प्रेरणादायक घटना है जिस पर उन्हें गर्व है ।

हरपाल सिंह आर्य की देह पर होगी मेडिकल कॉलेज में रिसर्च

इंद्री के बदरपुर गांव निवासी हरपाल सिंह आर्य का शरीर मरने के बाद भी कल्पना चावला राजकीय मेडिकल कॉलेज के काम आएगा।....मंगलवार को उनकी आंखें किसी के अंधेरे जीवन को उजियारा दे गई। गांव के लोगों ने हरपाल आर्य को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनसे प्रेरणा लेने का संकल्प किया।इस अवसर पर उनके गांव बदरपुर में एक शोकसभा का आयोजन किया गया।

उनके बेटे जयदेव ने बताया कि उनके पिताजी मृत्यु उपरांत भी शरीर दान करके समाज को प्रेरणा दे गए हैं। उनसे प्रेरणा लेकर इंद्री क्षेत्र में भी कई लोगों ने शरीर दान करने का संकल्प लिया है। तर्कशील सोसायटी की पत्रिका 'तर्कशील पथ' के संपादक बलवंत सिंह ने कहा कि हरपाल सिंह के द्वारा देह प्रदान का संकल्प अंधविश्वास को दूर कर प्रदूषण मुक्ति की दिशा में भी उठाया गया एक प्रशंसनीय कदम है।

केस रिपोर्ट

घर में से लाखों रुपए गुम होने का रहस्य सुलझाया

—बलवंत सिंह लैक्चरार

एक दिन मैं अपने घर में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था कि मेरा एक पुराना परिचित अपने साथ एक बेहद परेशान व्यक्ति को लेकर मेरे पास आ गया। जान-पहचान करने के पश्चात् चाय-पानी पीते हुए उस परेशान आदमी बलदेव सिंह ने अपनी दुख भरी कहानी बयान करनी शुरू कर दी। उसने बताया कि 'गांव से बाहर अपने खेतों में उन्होंने अपना घर बना रखा है। उसके दो पुत्र हैं और दोनों ही शादीशुदा हैं उसकी पत्नी का देहांत हो चुका है। उनके पास 20-22 एकड़ कृषि योग्य जमीन है। उनकी अपनी दो कम्बाईनें हैं। सीजन के समय एक कम्बाईन तो वे स्थानीय इलाके में चलाते हैं और दूसरी कम्बाईन को यूपी, एमपी और बिहार आदि अन्य प्रदेशों में गेहूं, जीरी व सोयाबीन की कटाई के सीजन में चलाते हैं। घर में 35-40 विलायती नस्ल की गाय पाली हुई हैं। गायों का दूध निकालने के लिए दूध दोहने की मशीनें भी रखी हुई हैं। घर में हर तरह की सुख-सुविधा के साधन मौजूद थे। परन्तु पिछले 5-6 सालों से घर में नुक्सान पर नुक्सान होता चला जा रहा है। घर का सारा सिस्टम ही उल्टा होता चला जा रहा है। शुरू-शुरू में घर में रखे हुए पैसों में से कभी दो हजार कभी पांच हजार कभी दस हजार रुपये गायब हो जाते थे। धीरे-धीरे नुक्सान और अधिक बढ़ता चला गया। एक दिन घर के अंदर अलमारी में से 70 हजार रुपए गायब हो गए, जबकि अलमारी को ताला वैसे का वैसा ही लगा हुआ था। एक दिन ताला लगी हुई अलमारी में से बड़ी बहू के लगभग दस तोला सोने के जेवर भी गायब हो गए। अब पिछले कुछ समय से घर के सदस्यों के कपड़े भी कटने शुरू हो गए हैं।

दुखी मन के साथ बलदेव सिंह अपनी व्यथा सुनाता चला जा रहा था। उसने आगे यह भी बताया कि इतना नुक्सान होने के कारण उन पर अब कर्ज भी चढ़ता चला जा रहा था। सबसे बाद वाली घटना का जिक्र करते हुए उसने बताया कि अभी दो दिन पूर्व वह अपनी मजबूरियों के चलते अपने एक रिश्तेदार से 50 हजार रुपए उधार मांग कर लाया था। उसने घर जाकर वे रुपए अपने छोटे बेटे सुखदीप सिंह को पकड़ा दिए। सुखदीप सिंह ने जब वे रुपए गिने तो उनमें से 10 हजार रुपए कम थे। साथ ही उसने यह भी बताया कि उनकी बढ़िया नस्ल की गऊएं भी अब खराब हो चुकी हैं और दूध देना भी बंद कर चुकी हैं। इसके साथ उसने अपने घर में होने वाले नुक्सान की और भी अनेकों बातें बताईं। अब मामले की तह तक जाने वाले उनके घर में जाकर जांच-पड़ताल करना आवश्यक था, परन्तु अत्यधिक व्यस्त होने के कारण फौरन कुछ दिनों तक समय निकाल पाना मेरे लिए असंभव लग रहा था। अतः मैंने उन्हें दो दिन बाद रविवार को लगने वाले मनोरोग परामर्श केंद्र में दोनों बहुओं को साथ लेकर आने के लिए कह दिया।

मेरे साथ की गई बातचीत को जब बलदेव सिंह ने अपने घर में जाकर सारे परिवार वालों को बताई और रविवार को मेरे पास जाने की बात कही तो अगले दिन छोटी बहू गुरदीप कौर घर वालों से लड़-झगड़ कर अपने मायके में चली गई। अतः रविवार को वे बड़ी बहू परमजीत कौर को ही लेकर मेरे पास आ गए। अब मैंने सुखदीप सिंह और परमजीत कौर के साथ अलग-अलग से विस्तार से पूछताछ करके मामले की गहराई के साथ जांच-पड़ताल की तो बात साफ हो गई कि घर में से पैसे उठाने व कपड़े काटने की सभी घटनाओं के पीछे छोटी बहू गुरदीप कौर का ही हाथ है। मैंने उनको निर्देश दिया कि गुरदीप कौर को अब अपने मायके में ही रहने दिया जाए, चाहे जब तक वह मायके में रहना चाहे,

तब तक उसे रहने दिया जाए। यदि इस दौरान भी घर में कोई ऐसी घटना घटे तो मुझे फौन द्वारा सूचना दे दी जाए। जब गुरदीप कौर स्वयं ही अपने ससुराल में आ जाए तो मुझे बता देना, ताकि फिर तुम्हारे घर में जाकर जांच-पड़ताल का प्रोग्राम बनाया जा सके।

लगभग 10 दिनों के बाद ही गुरदीप कौर स्वयं ही अपने ससुराल में पहुंच गई। उसके आने के पश्चात् मैंने उन्हें समय दे दिया और निश्चित दिन उनके घर में जांच-पड़ताल के लिए उनके साथ चला गया। अब बाकी सदस्यों से तो नाममात्र की बातचीत की और मेरा सारा ध्यान गुरदीप कौर की गतिविधियों पर केंद्रित रहा। वह पूरी तरह से भयभीत और बेचैन प्रतीत हो रही थी। परिवार के अन्य सदस्यों के साथ साधारण सी बातचीत करने के पश्चात् मैंने गुरदीप कौर को अपने पास बुला लिया। हल्की-फुल्की बातों द्वारा मैंने गुरदीप कौर का विश्वास जीत कर उसे अपने प्रभाव में लाकर उससे खुलकर बातचीत करनी शुरू कर दी। थोड़ी ही देर में वह बेतकल्लुफ होकर मेरी हर बात का सही ढंग से जवाब देने लग गई।

सबसे पहले मैंने उससे यही सवाल किया कि तुम उस रविवार को मेरे पास आने की बजाए अपने मायके क्यों चली गई थी। उसका जवाब था कि उसके ससुर ने जब घर जाकर बताया कि मास्टर जी 'भूत' बनकर घर में से पैसे चुराने वाले को रंगे हाथ सबूतों के साथ पकड़ कर दिखा देंगे तो मैं डर गई और जाते-जाते नजर बचाकर अपनी जेठानी के कपड़ों को कैंची से काटकर टॉयलेट की फ्लश में छिपा गई थी, ताकि ये लोग डरते ही रहें। आगे की बातचीत में उसने स्वीकार कर लिया कि घर में से कभी थोड़े कभी अधिक सारे पैसे उसी ने ही चुराए हैं और सभी कपड़े भी उसी ने ही कैंची द्वारा काटे हैं। इसके साथ-साथ अपनी जेठानी के सारे आभूषण भी उसी ने ही उठाकर अपनी भाभी को दे दिए थे।

मेरे द्वारा पूछने पर कि अपने ही घर का इस प्रकार से इतना नुक्सान वह क्यों करती रही है? इसका जवाब जो उसने दिया उसका सारतत्व इस प्रकार से हैः

गुरदीप कौर का शादी से पहले अपने गांव के एक रिश्तेदार लड़के के साथ प्रेम संबंध था। उस लड़के का परिवार आर्थिक तौर पर अत्यंत सम्पन्न परिवार था। इकलौता लड़का होने के कारण वह बेहद फिजूल खर्चकरने वाला एक एय्याश लड़का था। वह प्रायः आने-बहाने गुरदीप कौर के घर में आ जाता और घर वालों से नजरें बचाकर उसे कोई न कोई महंगा सा उपहार दे जाता। जब भी कभी मौका मिलने पर वे बाहर कहीं बाजार में मिलते तो वहां पर वह गुरदीप कौर को उसकी मनपसंद की चीजें खिलाता-पिलाता। दो-चार बार तो उसने गुरदीप कौर को अपने प्यार का वास्ता देकर बीयर के पैग भी पिला दिए थे। गुरदीप कौर ने यह भी बताया कि कई बार उस लड़के के साथ बाजार में कोल्ड ड्रिंक का गिलास पीने के पश्चात् उसे नशा सा हो जाता था और उसे चक्कर आने लग जाते थे। ऐसी हालत में उन दोनों ने मर्यादा की सभी सीमाएं लांघ कर कई बार शारीरिक संबंध भी बना लिए थे।

उस लड़के के घर में बार-बार आने से तथा गुरदीप कौर के आसपास मंडराते रहने से गुरदीप कौर के घर वालों को उन पर संदेह होना शुरू हो गया। अतः उन्होंने जल्दी से जल्दी कोई लड़का देख कर गुरदीप कौर की शादी जल्द से जल्द कर देने में ही भलाई समझी। इसी दौरान उसका सुखदीप सिंह के साथ रिश्ता तय हो गया और जल्दी ही दोनों की शादी हो गई। अपने ससुराल में जाकर गुरदीप कौर को उस लड़के के साथ बिताए हुए एय्याशी भरे पल याद आते रहते थे और वह उन यादों में खोई हुई अपने परिवार की जरूरतों की ओर ध्यान नहीं देती थी और बात-बात पर बिना किसी कारण के किसी न किसी सदस्य के साथ झगड़ा कर बैठती थी। इसके साथ ही वह कोई न कोई बहाना बनाकर कई-कई दिन अपने मायके में लगा आती थी। जब भी वह अपने मायके में जाती तो उस दौरान वह अपने प्रेमी लड़के के साथ किसी न किसी बहाने से अवश्य मिल लेती। मौका मिलने पर वे दोनों अपने-अपने शरीर की प्यास को भी बुझा लेते। एक दिन गुरदीप कौर की भाभी ने उन दोनों को अनैतिक अवस्था में रंगे हाथों पकड़ लिया।

उसकी भाभी की अपने पति और अपने ससुराल वालों के साथ अनबन रहती थी। उसके मायके वाले अत्यंत गरीब थे। जितना हो सके वह अपने ससुराल

वालों पर दबाव डलवाकर अपने मायके वालों की आर्थिक सहायता करती रहती थी। इस कारण उन पति-पत्नी की आपस में कहासुनी भी हो जाया करती थी। अब अपनी ननद को अनैतिक अवस्था में देखकर उसने उसे ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। इसी दौरान गुरदीप कौर की सास का दिल का दौड़ा पड़ने से देहांत हो गया। बलदेव सिंह का परिवार अंधविश्वासी होने के कारण किसी भी परेशानी के आने पर बाबाओं की शरण में पुच्छा लेने हेतु अवश्य जाया करता था। बलदेव सिंह अपनी पत्नी के देहांत के कुछ दिनों के पश्चात् एक बाबा की शरण में चला गया। वह बाबा बलदेव सिंह के साथ उनके घर में आ गया और उनके घर में अपनी चौकी लगाकर उनकी परेशानियों के निराकरण का ढोंग करने लग गया। अपने ऊपर आई 'चौकी' के दौरान उसने ऐलान कर दिया कि 'उनके घर में किसी 'अपने' ने दुश्मन बनकर एक भयंकर 'जिन्न' को छुड़वाया हुआ है। अब उस 'जिन्न' ने ही उसकी पत्नी की जान ली है। यदि अभी उपाय नहीं किया गया तो दोनों लड़कों की भी जान जा सकती है।' उपाय के नाम पर उसने उनके घर से चारों कोनों से थोड़ी-थोड़ी मिट्टी एकत्र की, साथ में सवा किलो देसी घी, कुछ अनाज और 11 हजार रुपए नकद दक्षिणा लेकर चलता बना।

इसी दौरान घर की साफ-सफाई करते हुए गुरदीप कौर ने अलमारी में रखे हुए सुखदीप सिंह के पर्स में से दो हजार रुपए निकाल लिए। अगले दिन जरूरत पड़ने पर जब सुखदीप ने अपना पर्स खोला तो उसने अपने पर्स में से दो हजार रुपए कम हो जाने की बात घर वालों को बताई तो बलदेव सिंह के मुंह से निकल गया कि हो न हो यह भी जिन्न, भूत-प्रेत का ही कारनामा है। फिर तो गुरदीप कौर ने वाकई में 'जिन्न, भूत-प्रेतों' का कारनामा करना शुरू कर दिया। अब जब भी उसका दांव लगता तो वह किसी के भी पर्स में रखे हुए, अल्मारी में रखे हुए पैसों में से कभी आधे कभी आधे से कम पैसे उठा लेती। जब फसलों की कटाई का सीजन होता तो कम्बाईन द्वारा कटाई करने पर जो किराया मिलता, उसे वे लाकर अपने घर में अलमारी के अंदर ताला लगाकर रख देते और अलमारी की चाबी वहीं आसपास रख देते थे। अब घर के सदस्यों को लगभग पता ही रहता है कि अलमारी की चाबी कहां पर रखी जाती है। इससे 'जिन्न-प्रेत' बनी हुई गुरदीप कौर का काम और भी आसान हो जाता। पैसे हाथ में आते ही वह या तो खुद कोई बहाना बनाकर अपने मायके चली जाती अथवा अपनी भाभी को फोन करके अपने पास बुलवा लेती। उन पैसों में से कुछ तो वह अपनी भाभी को दे देती और बाकी बचे हुए पैसों से खूब फिजूलखर्ची करती।

पिछले 5-6 वर्षो से उनका 'जिन्न-प्रेत' के बहाने से घर से पैसे उड़ाने का सिलसिला चलता चला जा रहा था। जब घर वालों पर और अधिक मानसिक दहशत फैलानी होती तो वह किसी न किसी सदस्य का कोई सूत्र कैंची द्वारा तार-तार कर देती। घर वाले इसके उपाय के लिए अनेकों बाबाओं की शरण में जाते रहे और प्रत्येक बाबा को हजारों रुपए दक्षिणा के रूप में देते रहे, परन्तु समस्या और अधिक विकट होती चली गई। इसी कारण उनका घर के कामकाज की तरफ से ध्यान भी हटता चला गया। सही समय पर फसल न बोने के कारण खेती में घाटा आना शुरू हो गया। पशुओं की उचित संभाल के बिना विलायती गायों का सिस्टम भी बिगड़ता चला गया। अब अधिकतर गाएं फंडर (बांझ) बन चुकी थी, परन्तु कथित गौ रक्षकों के डर के कारण उनको घर में बांध कर रखना उनकी मजबूरी थी। इस प्रकार का यह सभी नुक्सान भी उन्होंने कथित जिन्न-प्रेतों के खाते में ही डाल रखा था। इसी कारण बलदेव सिंह कह देता था कि अब तक भूत-प्रेतों ने 40-50 लाख का नुक्सान कर दिया था।

गुरदीप कौर ने सही वस्तुस्थिति समझने के पश्चात् अपने द्वारा की गई पिछली गलतियों की क्षमायाचना की और अपने बच्चों के सुंदर भविष्य के लिए अपने परिवार का पूर्ण सहयोग कने का वचन दिया। उसने यह भी विश्वास दिलाया कि वह अपनी भाभी की ब्लैकमेलिंग के आगे घुटने नहीं टेकेगी। अब लगभग 6 महीने बीत चुके हैं, तब से कोई ऐसी घटना नहीं घटी।

नोट : यह एक सत्यकथा है। परिस्थितिवश पात्रों के नाम बदल दिये गए हैं।

ooo

केस रिपोर्ट-2

तर्कशीलों ने घर में ईंट-पत्थर बरसने बंद करवाए

- अजायब जलालआना

सिरसा के नजदीकी गांव के एक घर में कुछ वर्ष पूर्व अजीब घटनाएं घट रही थीं, जिसकी वजह से रात्रि को पुलिस पहरा भी लगाया जाता परन्तु अजीब घटनाओं का घटना फिर भी जारी था। ऐसी घटनाओं को हमारी आधुनिक पुलिस भी समझने और समाधान करने के लिए अक्षम थी। उस घर में शाम होते ही एक के बाद एक नई घटना घटती, शुरुआत रंग बिरंगे कंकड़, पत्थरों से हुई थी। घर वाले इतने खौफजदा थे, कि वो रात को सोते समय मई-जून की तपती गर्मी में भी मोटी रजाईयां ऊपर ओढ़कर सोते! कारण उनके परिवार के तीन सदस्य इन कंकड़-पत्थरों की रात को होती बरसात में घायल भी हो चुके थे। इस बड़े घर और बड़े परिवार में शाम को जब घर का बड़ा दरवाजा बन्द करने कोई जाता तो वो डर के मारे कांपने लग जाता क्योंकि उस सदस्य को जोर का झटका लगता और वो वहीं गिर जाता तथा चीख-पुकार शुरू हो जाती।

उस घर में एक शादीशुदा लड़की अपने मायके ही पति के साथ रह रही थी। शाम को खाना बनता, वो थाली में खाना परोसकर चारपाई पर बैठे अपने पति को पकड़ाती तो वो थाली खाने सहित आसमान में उड़ जाती!! घर के आंगन में बैठे सभी खाना खा रहे होते तो अचानक साबुत ईंटें गिरने लग जाती हैं। उनका खाना बीच में ही रह जाता और घर में शोर शराबा शुरू हो जाता। जब भी कोई घटना होती शोर सुनकर गांव वालों का उनके घर तांता लग जाता। लोग तरह-तरह की बातें बनाते। परन्तु वो होती घटनाओं को समझ न सके।

शुरुआत में हुई घटनाओं के बाद घर में रह रही शादीशुदा लड़की के जानकार एक बाबा से ईलाज भी करवाया गया था। कुछ देर घटनाओं के रुकने के बाद पुनः दोबारा शुरू हो गई थीं। अब तो इन घटनाओं की अति ही हो गई थी। और बहुत बार बाबाओं की शरण में गए पर हल नहीं हुआ। इन घटनाओं की चर्चा अब अखवारों में होने लगी।

गांव के सरपंच ने पुलिस तक पहुंच की। पुलिस वाले रात को घर के आस-पास पहरा देते परन्तु घटनाएं फिर भी हो रही थी। घर के सदस्यों के घायल हो जाने के कारण आम लोग भी डरे और सहमे हुए थे। उसी गांव के नजदीकी गांव के एक तर्कशील विचारों के आदमी ने सरपंच को तर्कशीलों की सहायता लेने की सलाह दी और हमारी इकाई कालांवाली के सदस्यों से सम्पर्क करवाया।

तीन भाई शादीशुदा, बच्चों सहित माता-पिता के संयुक्त परिवार में एक शादीशुदा बहन भी अपने पति सहित आर्जी तौर पर रह रही थी। क्योंकि उनके पास रहने के लिए स्थाई मकान नहीं था।

सरपंच, पंचायत के बुलाने पर हमारी चार सदस्यों की टीम जिसमें मैडम जसवंत भी शामिल थे। जब उनके घर गए तो परिवार वाले पूरी तरह डरे हुए थे। घायल तीन सदस्यों के सिरों पर पट्टियां बंधी हुई थी।

एक-एक कर सभी से बात की गई। घर में घटित घटनाओं को जब जोड़ा गया, तो सचाई सामने आती गई। रंग-बिरंगे कंकड़ देखे तो वो नई बन रही सड़क के पत्थर थे। नीले, सफेद, काले रंग के ज्यादातर गोल-गोल पत्थर! जहां सड़क बन रही थी वहां पानी का एक खाला बहता था, जिसमें कपड़े धोने के लिए घर की शादीशुदा लड़की भी जाया करती।

जब वही लड़की अपने पति को खाने वाली थाली पकड़ाती और उसका आसमान में उड़ना हम इसे समझ चुके थे...क्योंकि थाली के नीचे जोर से हाथ मारने से ही वो ऊपर उड़ेगी!!

बड़े क्षेत्रफल में फैले घर में साबुत ईंट बाहर से...दूर से नहीं फेंकी जा सकती! जब ईंट गिरती थी तब उसके आस-पास कौन होता था। ये जानकर हम ईंट फैंकने वाले को भी चिन्हित कर चुके थे! शाम को दरवाजा बन्द करते समय लगने वाले झटकों में कुछ में सचाई थी...कुछ मानसिक भय के कारण वो महसूस करने लगे थे..उनमें सचाई वाली घटनाओं को भी चिन्हित कर लिया था। आखिर में चिन्हित सदस्य को हमने चौतावनी दी-खबरदार! अगर आपने दोबारा

इन घटनाओं को अंजाम दिया, तो हम सबूतों सहित गांव के सरपंच और पारिवारिक मैंबरों को बता देंगे!!

पूरे परिवार को इकट्ठा करके हमने भूत-प्रेत के होने की बात को झूठा करार दिया! और हो रही इन घटनाओं के पीछे किसी सदस्य का हाथ है, अब नहीं बताएंगे अगर अब दोबारा एक भी घटना हुई तो सच आपके सामने रख देंगे!!

हमारी बातें सुनकर परिवार और ग्राम पंचायत सदस्यों ने राहत की सांस ली और दोबारा कभी भी ऐसी अजीब घटना, घटित नहीं हुई।

क्या कोई परिवारिक सदस्य अपनी किसी समस्या, मांग को पूरा करवाने के लिए अपने ही परिवारिक सदस्यों के सिर भी फोड़ देते हैं? हां ऐसा ही कुछ इस केस में था,जिसकी जानकारी गांव के सरपंच को दे दी गई थी ताकि परिवार को किसी अप्रिय घटना से बचने के लिए सचेत किया जा सके।

सब लुटेरे हैं!!!

-फूलसिंह लुहानी

जगह-जगह पर
तथाकथित बाबा
बनाकर बैठे डेरे हैं
सीधा स्वर्ग दिखाने वाले
बैठे सब लुटेरे हैं।
लूटें ये मजबूरों को
या मेहनतकश मजदूरों को
या अनपढ भोले-भालों को
संग लेकर बीच दलालों को
भभूत, ताबीज, धागा,
टोना-टोटका,
ये लूट के तंत्र तेरे हैं।
सीधा स्वर्ग.......।

न कोई ऊपर खुदा प्यारे
न कोई भगवान है।
न नीचे पाताल -लोक
न ही देव-स्थान है।
धरती घूम रही ब्रहमांड में
ये सारा विज्ञान है।
घर नहीं है जिन बाबाओं का
वे मार्गदर्शक तेरे हैं।
सीधा स्वर्ग......।

अंधश्रद्धा-नशा, अपराधों के अड्डे
किस्मत रहे सुधार।
सिर घुमाकर वर हैं देते
फंस जाते लाचार।
मानसिक रोगी खुद बाबा ही
तुझको भी वो घेरे हैं
सीधा स्वर्ग.......।

तीसरा नेत्र शिक्षा है
न शिव का नेत्र मानो।
तर्क करो और ज्ञान बढाओ
शक्ति को पहचानो।
भगवान है केवल कपोल कल्पना
मन में बैठी तेरे।
सीधा स्वर्ग.......।
नारी है कमजोर कड़ी
होती वही शिकार।
उसकी शिक्षा बहुत जरूरी
शिक्षित हो परिवार।
नारी का सम्मान हो पूरा
फिर सब दूर अंधेरे हैं।
सीधा स्वर्ग दिखाने वाले
बैठे सब लुटेरे हैं।

कोई नारी डायन (टोनही) नहीं अभियान से जुड़- डॉ. दिनेश मिश्र

(अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अभियान से जुड़ने की अपील)

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष नेत्र विशेषज्ञ डॉ दिनेश मिश्र ने कहा डायन या टोनही की धारणा हमारे देश में प्रमुख अंधविश्वासों में से एक है जिसमें किसी महिला को डायन (टोनही) घोषित कर दिया जाता है तथा उस पर जादू-टोना कर बीमारी फैलाने, गाँव में विपत्तियाँ लाने का आरोप लगाकर उसे लांछित किया जाता है। डायन (टोनही) के रूप में आरोपित इन महिलाओं को न केवल सार्वजनिक रूप से बेइज्जत किया जाता है, बल्कि उन्हें शारीरिक प्रताडना दी जाती है तथा समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। ऐसे मामलों में शारीरिक प्रताडना इतनी अधिक होती है कि वे महिनों शारीरिक जख्मों का दर्द लिये कराहती रहती है तथा गाँव में उन्हें उपचार मिलना भी संभव नहीं होता। सार्वजनिक रूप से बेइज्जती व अपमान के जख्म तो आजीवन दुख देते हैं। इन स्थानों पर प्रभावशाली समूह का दबाव इतना अधिक रहता है कि प्रताडना की घटनाओं की जानकारी गाँव के बाहर नहीं जा पाती तथा प्रताड़ित महिला व उसका परिवार नारकीय जीवन जीता रहता है, ऐसे मामलों में कई बार महिलाएँ आत्महत्या तक कर लेती है।

डॉ. मिश्र ने कहा डायन के संदेह में प्रताडना के मामले में गाँवों के जनप्रतिनिधि व शासकीय कर्मचारी भी सामने आने का साहस नहीं कर पाते, ऐसे अधिकांश मामलों में जो जानकारी ही गाँवों से बाहर नहीं आ पाती, जिससे कथित बैगाओं का राज कायम हो जाता है। जो गाँव में सभी विपदाओं का कारण जादू-टोना व डायन बताकर, टोनही पकड़वाने, चिन्हित करने, गाँव बाँधने के नाम पर न केवल मनमानी राशि वसूलते हैं बल्कि किसी भी गरीब बेकसूर महिला को डायन घोषित कर हमेशा अभिशप्त जीवन जीने व प्रताडना सहने के लिये छोड़ देते हैं, इन बैगाओं द्वारा महिला को डायन न होने का प्रमाण देने के लिये ऐसी परीक्षाएँ ली जाती है जो किसी भी महिलाओं के लिये संभव नहीं है। ऐसे मामलों में खुद को निर्दोष साबित करना बहुत मुश्किल हो जाता है वह भी जब पूरा गाँव ही अंधविश्वास के कारण विरोध में खड़ा हो, जबकि वास्तविकता यह है कि डायन छ्टोनहीऋ के रूप में घोषित की जाने वाली महिला में इतनी ताकत नहीं होती है कि आत्मरक्षा ही कर सके, दूसरों के नुकसान करना तो संभव ही नहीं है।

डॉ. मिश्र ने कहा हम पिछले कुछ वर्षो से समाज में फैले अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों के निर्मूलन के लिए अभियन चला रहे हैं जिसका एक प्रमुख हिस्सा डायन की धारणा का निर्मूलन भी है इसलिये व्याख्यान, चमत्कारिक घटनाओं की वैज्ञानिक धारणा, विभिन्न ग्रामों में दौरा कर समझाना, अंधविश्वास का पर्याय बनने वाले मामलों की जाँच व सत्य की जानकारी, गोष्ठियाँ, बैठकें की जाती है। हमें कई बार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न स्थानों के बुद्धिजीवी साथियों, छात्रों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, समाज-सुधार के संबंध में विचार पढने को मिलते हैं, मेरा यह मानना है कि अंधविश्वासों एवं सामाजिक कुरीतियों का समूल निर्मूलन किसी एक व्यक्ति, एक संगठन या प्रशासन के लिये संभव नहीं है। अलग-अलग स्थानों पर निवास व कार्य कर रहे सभी व्यक्ति यदि इस कार्य के लिये अपना थोड़ा समय व बहुमूल्य विचार हमें प्रदान करें, व सहयोग से कार्य करें तो ऐसा कोई भी कारण नहीं है कि इन कुरीतियों व अंधविश्वासों का निर्मूलन न किया जा सके, नये वर्ष में सर्व सहयोग से यह काम बेहतर ढंग से किया जा सकता है। इच्छुक स्वयंसेवी व्यक्ति व उत्साही कार्यकर्ता मुझसे इस पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मोबाईल नं. 98274-00859

वानर के नर बनने में श्रम की भूमिका

(मनुष्य के हाथ श्रम की उपज हैं)

-फ्रेडरिक एंगेल्स (1876)

पछले अंक का शेष....

माँसाहार में शरीर के उपापचयन के लिए दरकार सभी सब से अधिक आवश्यक तत्व प्रायः पूर्णतः तैयार मिलते हैं इस से पाचन के लिए दरकार समय की ही बचत नहीं हुई, अपितु वनस्पति-जीवन के अनुरूप अन्य शारीरिक विकास की प्रक्रियाओं के लिए दरकार समय भी घट गया और इस प्रकार पशु-जीवन की, इस शब्द के ठीक अर्थो में, सक्रिया अभिव्यंजना के लिए अधिक समय, सामग्री तथा शक्ति का लाभ हुआ। विकसित होता मानव जितना ही वनस्पति जगत से दूर रहता गया, उतना ही वह पशु से ऊँचा उठता गया। जिस तरह मांसाहार के संग शाकाहार के अभ्यस्त होने के साथ जंगली बिल्लियाँ और कुत्ते मानव के सेवक बन गए, ठीक उसी तरह शाकाहार के साथ-साथ मांसाहार को अपनाने से विकसित होते मानव को शारीरिक शक्ति एवं आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में भारी मदद मिली। परन्तु मांसाहार का सब से अधिक प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ा। मस्तिष्क को अपने पोषण और विकास के लिए आवश्यक सामग्री अब पहले से कहीं अधिक प्रचुरता से प्राप्त होने लगी, अतः अब वह पीढ़ी दर पीढ़ी अधिक तेजी और पूर्णता के साथ विकास कर सकता था। हम शाकाहारियों का बहुत आदर करते हैं, परन्तु हमें यह मानना ही पड़ेगा कि मांसाहार के बिना मनुष्य का आविर्भाव असंभव होता। हाँ, मांसाहार के कारण ही सभी ज्ञात जनगण यदि किसी काल में नरभक्षी बन गए थे अभी दसवीं शताब्दी तक बर्लिनवासियों के पूर्वज, वेलेतोबियन या बिल्जियन लोग अपने माँ-बाप को मार कर खा जाया करते थे) तो आज इस का महत्व नहीं रह गया है। मांसाहार के फलस्वरूप निर्णायक महत्व रखने वाले दो नए कदम उठाए गए- मनुष्य ने अग्नि को वशीभूत किया। दूसरे पशुपालन आरंभ हुआ। पहले के फलस्वरूप पाचन प्रक्रिया और संकुचित बन गयी क्योंकि इस की बदौलत मानव-मुख को मानो पहले से ही आधा पचा हुआ भोजन मिलने लगा। दूसरे ने मांस की पूर्ति का शिकार के अलावा एक नया, अधिक नियमित स्रोत प्रदान कर के मांस की सप्लाई को अधिक प्रचुर बना दिया। इस के अतिरिक्त दूध और दूध से बनी वस्तुओं के रूप में उस ने आहार की एक नयी सामग्री प्रदान की, जो अपने अवयवों की दृष्टि से उतनी ही मूल्यवान थी जितना कि मांस। अतः ये दोनों ही नयी प्रगतियाँ सीधे-सीधे मानव की मुक्ति का नया साधन बन गयीं। उन के अप्रत्यक्ष परिणामों को यहाँ विशद विवेचना करने से हम विषय से बहुत दूर चले जाएँगे, हालाँकि मानव और समाज के विकास के लिए उन का भारी महत्व है। श्रम-मनुष्य तथा अन्य पशुओं के बीच अंतिम एवं सारभूत अंतर जिस तरह मनुष्य ने सभी भक्ष्य वस्तुओं को खाना सीखा, उसी तरह उस ने किसी भी जलवायु में रह लेना भी सीखा। वह समूची निवास योग्य दुनिया में फैल गया। वही एक मात्र पशु ऐसा था जिस में खुद-ब-खुद ऐसा करने की क्षमता थी। अन्य पशु-पालतू जानवर और मि-अपने आप नहीं, बल्कि मनुष्य का अनुसरण कर ही सभी जलवायुओं के अभ्यस्त बने। और मानव द्वारा एक समान गरम जलवायु वाले अपने मूल निवास स्थान से ठण्डे इलाकों में स्थानान्तरण से, जहाँ वर्ष के दो भाग हैं- ग्रीष्म ऋतु एवं शीत ऋतु - नयी आवश्यकताएँ उत्पन्न हुई - शीत और नमी से बचाव के लिए घर और पहनावे की आवश्यकता उत्पन्न हुई जिस से श्रम के नए क्षेत्र आविर्भूत हुए। फलतः नए प्रकार के कार्यकलाप आरंभ हुए जिन से

मनुष्य पशु से और भी अधिकाधिक पृथक होता गया। प्रत्येक व्यक्ति में ही नहीं, बल्कि समाज में भी हाथों स्वरांगों और मस्तिष्क के संयुक्त काम से मानव अधिकाधिक पेचीदा कार्य करने के तथा सतत उच्चतर लक्ष्य अपने सामने रखने और उन्हें हासिल करने के योग्य बने। हर पीढ़ी के गुजरने के साथ स्वयं श्रम भिन्न, अधिक परिनिष्पन्न, अधिक विविधतायुक्त होता गया। शिकार और पशुपालन के अतिरिक्त कृषि भी की जाने लगी। फिर कताई, बुनाई, धातुकारी, कुम्हारी और नौचालन की बारी आयी। व्यापार और उद्योग के साथ अन्ततः कला और विज्ञान का आविर्भाव हुआ। कबीलों से जातियों और राज्यों का विकास हुआ। प्रथमतः मस्तिष्क की उपज लगने वाले और मानव समाजों के ऊपर छाए प्रतीत होने वाले इन सारे सृजनों के आगे श्रमशील हाथ के अधिक साध ाारण उत्पादन पृष्ठभूमि में चले गए। ऐसा इस कारण से भी हुआ कि समाज के विकास की बहुत प्रारंभिक मंजिल से ही (उदाहरणार्थ आदिम परिवार से ही) श्रम को नियोजित करने वाला मस्तिष्क नियोजित श्रम को दूसरों के हाथों से करा सकने में समर्थ था। सभ्यता की द्रुत प्रगति का समूचा श्रेय मस्तिष्क को, मस्तिष्क के विकास एवं क्रियाकलाप को दे डाला गया। मनुष्य अपने कार्यों की व्याख्या अपनी आवश्यकताओं से करने के बदले अपने विचारों से करने के आदी हो गए (हालाँकि आवश्यकताएँ ही मस्तिष्क में प्रतिबिंबित होती हैं, चेतना द्वारा ग्रहण की जाती हैं)। अतः कालक्रम में उस भाववादी विश्व दृष्टिकोण का उदय हुआ जो प्राचीन यूनानी-रोमन समाज के पतन के बाद से तो खास तौर पर मानवों के मस्तिष्क पर हावी रहा है। वह अब भी उन पर इस हद तक हावी है कि डार्विन पंथ के भौतिकवादी से भौतिकवादी प्रगृति विज्ञानी भी अभी तक मनुष्य की उत्पत्ति के विषय में स्पष्ट धारणा निरूपित करने में असमर्थ हैं क्योंकि इस विचारधारा के प्रभाव में पड़ कर वे इस में श्रम द्वारा अदा की गई भूमिका को नहीं देखते। जैसा कि पहले ही इंगित किया जा चुका है, पशु अपने क्रियाकलाप से मानवों की भाँति बाह्य प्रकृति को परिवर्तित करते हैं यद्यपि वे उस हद तक ऐसा नहीं करते जिस हद तक मनुष्य करता है। और जैसा कि हम देख चुके हैं उन के द्वारा अपने परिवेश में किया गया यह परिवर्तन उलट कर उन के ऊपर असर डालता है तथा अपने प्रणेताओं को परिवर्तित करता है। प्रकृति में पृथक रूप से कुछ भी नहीं होता। हर चीज अन्य चीजों पर प्रभाव डालती तथा उन के द्वारा स्वयं प्रभावित होती है। इस सर्वांगीण गति एवं अन्योन्यक्रिया को बहुधा भुला देने के कारण ही प्रकृति-विज्ञानी साधारण से साधारण चीजों को स्पष्टता के साथ नहीं देख पाते। हम देख चुके हैं कि किस तरह बकरियों ने यूनान में वनों के पुनर्जन्म को रोका है। सेंट हलेना द्वीप में वहाँ पहुँचनेवाले प्रथम यात्रियों द्वारा उतारे गए बकरों और सुअरों ने पहले से चली आती वहाँ की वनस्पतियों का लगभग पूरी तरह सफाया कर दिया और ऐसा कर के उन्हों ने बाद में आए नाविकों और आबादकारों द्वारा लाए गए पौधों के प्रसार के लिए जमीन तैयार की। परन्तु यदि पशु अपने परिवेश पर अधिक समय तक प्रभाव डालते हैं तो ऐसा अचेत रूप से ही होता है तथा स्वयं पशुओं को सम्बन्ध में यह महज संयोग की बात होती है. लेकिन मनुष्य पशु से जितना ही अधिक दूर होते हैं, प्रकृति पर उन का प्रभाव पहले से ज्ञात निश्चित लक्ष्यों की ओर निर्देशित, नियोजित क्रिया का रूप धारण कर लेता है। पशु यह महसूस किए बिना कि वह क्या कर रहा है, किसी इलाके की वनस्पतियों को नष्ट करता है। मनुष्य नष्ट करता है मुक्त भूमि पर फसलें बोने के लिए अथवा वृक्ष एवं अंगूर की लताएँ रोपने के लिए, जिन के बारे में वह जानता है कि वे बोयी गई मात्रा से कहीं अधिक उपज देंगी। उपयोगी पौधों और पालतू पशुओं को वह एक देश से दूसरे में स्थानान्तरित करता है और इस प्रकार पूरे के पूरे महाद्वीपों के पशुओं एवं पादपों को बदल डालता है। इतना ही नहीं, कृत्रिम प्रजनन के द्वारा वनस्पति और पशु दोनों ही मानव के हाथों से इस तरह बदल दिए जाते हैं कि वन पहचाने भी नहीं जा सकते। उन जंगली पौधों की व्यर्थ ही अब खोज की जा रही है जिन से हमारे नाना प्रकार के अन्नों की उत्पत्ति हुई है। यह प्रश्न कि हमारे कुत्तों का, जो खुद भी एक दूसरे से अति भिन्न हैं, अथवा उतनी ही भिन्न नस्लों

के घोड़ों का पूर्वज कौन सा वन्य पशु है अब भी विवादास्पद है। बात चाहे जो भी हो, पशुओं के नियोजित पूर्वकल्पित ढंग से काम कर सकने की क्षमता के बारे में विवाद उठाना हमारा मकसद नहीं है। इस के विपरीत, जहाँ भी प्रोटोप्लाज्म का, जीवित एल्बुमिन का अस्तित्व है और वह प्रतिक्रिया करता है, यानी निश्चित बाह्य उद्दीपनाओं के फलस्वरूप निश्चित क्रियाएँ संपन्न करता है, भले ही ये क्रियाएँ अत्यन्त ही सहज प्रकार की हों, वहाँ क्रिया की एक नियोजित विधि विद्यमान रहती है। यह प्रतिक्रिया वहाँ भी होती है जहाँ अभी कोई कोशिका नहीं है, तंत्रिका कोशिका की तो बात दूर रही। इसी प्रकार से कीटभक्षी पौधों का अपना शिकार पकड़ने का ढंग किसी मानी में नियोजित क्रिया सा लगता है यद्यपि वह बिलकुल अचेतन रूप में की जाती है। पशुओं में सचेत, नियोजित क्रिया की क्षमता तंत्रिका तन्त्र के विकास के अनुपात में विकसित होती है और स्तनधारी पशुओं में यह काफी उच्च्व स्तर तक पहुँच जाती है। इंग्लेंड में लोमड़ी का शिकार करने वाले आसानी से यह देख सकते हैं कि लोमड़ी अपना पीछा करने वालों की आँखों में धूल झोंकने के लिए स्थानीय इलाके की अपनी उत्तम जानकारी का इस्तेमाल करने का कैसा अचूक ज्ञान रखती है और भूमि की अपने लिए सुविधाजनक हर विशेषता को वह कितनी अच्छी तरह जानती तथा कितनी अच्छी तरह शिकारी को गुमराह कर देने के लिए उस का इस्तेमाल करती है। मानव की संगति में रहने के कारण अधिक विकसित पालतू पशुओं को हम नित्य ही चतुराई के ठीक उस स्तर के कार्य करते देखते हैं जिस स्तर के बच्चे किया करते हैं। कारण यह है कि जिस प्रकार माता के गर्भ में मानव भ्रूण के विकास का इतिहास करोड़ों वर्षों में फैले हमारे पशु पूर्वजों के केंचुए से आरम्भ कर के अब तक के शारीरिक विकास के इतिहास की संक्षिप्त पुनरावृत्ति है, उसी प्रकार मानव शिशु का मानसिक विकास इन्हीं पूर्वजों के, कम से कम बाद में आने वाले पूर्वजों के, बौद्धिक विकास की ओर भी संक्षिप्त पुनरावृत्ति है। पर सारे के सारे पशुओं की सारी की सारी नियोजित क्रिया भी कभी धरती पर उन की इच्छा की छाप न छोड़ सकी। यह श्रेय मनुष्य को ही प्राप्त हुआ। संक्षेप में, पशु बाह्य प्रकृति का उपयोग मात्र करता है और उस में केवल अपनी उपस्थिति द्वारा परिवर्तन लाता है। पर मनुष्य अपने परिवर्तनों द्वारा प्रकृति से अपने काम करवाता है, उस पर स्वामिवत शासन करता है। यही मनुष्य तथा अन्य पशुओं के बीच अंतिम एवं सारभूत अंतर है। श्रम यहाँ भी इस अन्तर को लाने वाला होता है। (गौरवशाली बनाने वाला होता है) प्रकृति उस पर हर विजय का हम से प्रतिशोध लेती है

प्रकृति पर अपनी मानवीय विजयों के कारण हमें आत्मप्रशंसा में विभोर नहीं हो जाना चाहिए, क्योंकि वह हर ऐसी विजय का हम से प्रतिशोध लेती है। यह सही है कि प्रत्येक विजय से प्रथमतः वे ही परिणाम प्राप्त होते हैं जिन का हम ने भरोसा किया था, पर द्वितीयतः और तृतीयतः उस के परिणाम बिल्कुल ही भिन्न तथा अप्रत्याशित होते हैं, जिनसे अक्सर पहले परिणाम का असर जाता रहता है। मेसोपोटामिया, यूनान. एशिया माइनर, तथा अन्य स्थानों में जिन लोगों ने कृषि योग्य भूमि प्राप्त करने के लिए वनों को बिल्कुल ही नष्ट कर डाला, उन्हों ने कभी यह कल्पना नहीं की थी कि वनों के साथ आर्द्रता के संग्रह–केन्द्रों और आगारों का उन्मूलन कर के वे इन देशों की मौजूदा तबाही की बुनियाद डाल रहे हैं। एल्प्स के इटालियनों ने जब पर्वतों की दक्षिणी ढलानों पर चीड़ के वनों को (ये दक्षिणी ढलानों पर खूब सुरक्षित रखे गए थे) पूरी तरह काट डाला, तब उन्हें इस बात का आभास नहीं था कि ऐसा कर के वे अपने प्रदेश के दुग्ध उद्योग पर कुठाराघात कर रहे हैं। इस से भी कम आभास उन्हें इस बात का था कि अपने कार्य द्वारा वे अपने पर्वतीय स्रोतों को वर्ष के अधिक भाग के लिए जलहीन बना रहे हैं तथा साथ ही इन स्रोतों के लिए यह सम्भव बना रहे हैं कि वे वर्षा ऋतु में मैदानों में और भी अधिक भयानक बाढ़ें लाया करें। यूरोप में आलू का प्रचार करने वालों को यह ज्ञात नहीं था कि असल मंडमय कंद को फैलाने के साथ–साथ वे स्क्रोफुला रोग का भी प्रसार कर रहे हैं। अतः हमें हर पग पर यह याद कराया जाता है कि प्रकृति पर

हमारा शासन किसी विदेशी जाति पर एक विजेता के शासन जैसा कदापि नहीं है, वह प्रकृति से बाहर के किसी व्यक्ति जैसा शासन नहीं है, बल्कि रक्त, मांस, और मस्तिष्क से युक्त हम प्रकृति के ही प्राणी हैं, हमारा अस्तित्व उस के मध्य है और उस के ऊपर हमारा सारा शासन केवल इस बात में निहित है कि अन्य सभी प्राणियों से हम इस मानों में श्रेष्ठ हैं कि हम प्रकृति के नियमों को जान सकते हैं और ठीक-ठीक लागू कर सकते हैं।

वास्तव में, ज्यों-ज्यों दिन बीतते जाते हैं हम उस के नियमों को अधिकाधिक सही ढंग से सीखते जाते हैं और प्रकृति के नैसर्गिक प्रक्रम में अपने हस्तक्षेप के तात्कालिक परिणामों के साथ उस के दूरवर्ती परिणामों के भी देखने लगे हैं। खास कर प्रकृति-विज्ञान की वर्तमान शताब्दी की प्रबल प्रगति के बाद तो हम अधिकाधिक ऐसी स्थिति में आते जा रहे हैं जहाँ कम से कम अपने सब से साधारण उत्पादक क्रियाकलाप के अधिक दूरवर्ती परिणामों तक को हम जान सकते हैं और फलतः उन्हें नियंत्रित कर सकते हैं। लेकिन जितना ही ज्यादा ऐसा होगा उतनी ही ज्यादा मनुष्य प्रकृति के साथ अपनी एकता न केवल महसूस करेंगे बल्कि उसे समझेंगे भी और तब यूरोप में प्राचीन क्लासिकीय युग के अवसान के बाद उद्‌भूत होने वाली ईसाई मत में सब से अधिक विशद रूप में निरूपित की जाने वाली मस्तिष्क और भूतद्रव्य, मनुष्य और प्रकृति, आत्मा और शरीर के वैपरीत्य की निरर्थक एवं अस्वाभाविक धारणा उतनी ही अधिक असम्भव होती जायेगी।

परन्तु उत्पादन की दिशा में निर्देशित अपने कार्यकलाप के अधिक दूरवर्ती प्राकृतिक फलों का आकलन सीखने में जहाँ हमें हजारों वर्षों की मेहनत लग चुकी है, वहाँ इन क्रियाओं के अधिक दूरवर्ती सामाजिक फलों का आकलन करने का काम और भी दुष्कर रहा है। आलू के प्रचार के फलस्वरूप स्क्रोफुला रोग के प्रसार की हम चर्चा कर चुके हैं। परन्तु श्रम जीवियों के आलू के आहार पर ही आश्रित हो जाने का पूरे के पूरे देशों के अन्दर जनसमुदाय की जीवनावस्था पर जो प्रभाव पड़ा है, उस के मुकाबले स्क्रोफुला रोग भी भला क्या है? अथवा उस अकाल की तुलना में ही यह रोग क्या था जिस ने आलू की फसल में कीड़ा लग जाने के फलस्वरूप 1847 में आयरलैंड को अपना ग्रास बनाया था और सम्पूर्णतया या लगभग सम्पूर्णतया आलू के आहार पर पले दस लाख आयरलैंडवासियों को मौत का शिकार बना दिया तथा बीस लाख को विदेशों में जा कर बसने को मजबूर किया था? जब अरबों ने शराब चुआना सीखा तो यह बात उन के दिमाग में बिल्कुल नहीं आयी थी कि ऐसा कर के वे उस समय अज्ञात अमरीकी महाद्वीप के आदिवासियों के भावी उन्मूलन का एक मुख्य साधन उत्पन्न कर रहे थे। और बाद में जब कोलम्बस ने अमरीका की खोज की तो उसे नहीं पता था कि ऐसा कर के वह यूरोप में बहुत पहले मिटायी जा चुकी दास-प्रथा को नवजीवन प्रदान कर रहा था और नीग्रो-व्यापार की नींव डाल रहा था। सत्रहवीं और अठारवीं शताब्दियों में भाप का इंजन आविष्कार करने में संलग्न लोगों के दिमाग में यह बात नहीं आयी थी कि वे वह औजार तैयार कर रहे हैं जो समूची दुनिया के अन्दर सामाजिक सम्बन्धों में अन्य किसी भी औजार की अपेक्षा बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन ला देने वाला होगा, खास कर के यूरोप में यह औजार थोड़े से लोगों के हाथ में धन को संकेंद्रित करते हुए और विशाल बहुसंख्यक को सम्पत्तिहीन बनाते हुए पहले तो पूंजीपति वर्ग को सामाजिक और राजनीतिक प्रभुता प्रदान करने वाला, लेकिन उस के बाद पूंजीपति और सर्वहारा वर्गों के उस वर्ग-संघर्ष को जन्म देनेवाला होगा जिस का अन्तिम परिणाम पूंजीपति वर्ग की सत्ता का खात्मा और सभी वर्ग विग्रहों की समाप्ति ही हो सकता है। परन्तु इस क्षेत्र में भी लम्बे और प्रायः कठोर अनुभव के बाद तथा ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह और विश्लेषण कर के धीरे-धीरे हम अपने उत्पादक क्रियाकलाप के अप्रत्यक्ष, अधिक दूरवर्ती सामाजिक परिणामों को स्पष्ट देखना सीख रहे हैं। इस प्रकार इन परिणामों को भी नियंत्रित और नियमित करने की सम्भावना हमारे सामने प्रस्तुत हो रही है। पर ऐसे नियमन को क्रियान्वित करने के लिए ज्ञान ही

पर्याप्त नहीं है। इस के लिए हमारी अभी तक की उत्पादन-प्रणाली में, और उसके साथ हमारी समूची समकालीन समाज-व्यवस्था में आमूल क्रांति अपेक्षित है।

तात्कालिक मुनाफे की अर्थव्यवस्था के परिणाम आज तक जितनी भी उत्पादन-प्रणालियाँ रही हैं, उन सब का लक्ष्य केवल श्रम के सब से तात्कालिक एवं प्रत्यक्षतः उपयोगी परिणाम प्राप्त करना मात्र रहा है। इस के आगे के परिणामों की, जो बाद में आते हैं तथा क्रमिक पुनरावृत्ति एवं संचय द्वारा ही प्रभावोत्पादक बनते हैं, पूर्णतया उपेक्षा की गई। भूमि का सम्मिलित स्वामित्व जो आरम्भ में था, एक ओर तो मानवों के ऐसे विकास स्तर के अनुरूप था जिस में उन का क्षितिज सामान्यतः सम्मुख उपस्थित वस्तुओं तक सीमित था, दूसरी ओर उसमें उपलब्ध भूमि का कुछ फाजिल होना पूर्वमान्य था जिससे कि इस आदिम किस्म की अर्थव्यवस्था के किन्ही सम्भव दुष्परिणामों का निराकरण करने की गुंजाइश पैदा होती थी। इस फाजिल भूमि के चुक जाने के साथ सम्मिलित स्वामित्व का ह्रास होने लगा, पर उत्पादन के सभी उच्चतर रूपों के परिणामस्वरूप आबादी विभिन्न वर्गो में विभक्त हो जाती थी और इस विभाजन के कारण शासक और उत्पीड़ित वर्गो का विग्रह शुरू हो जाता था। अतः शासक वर्ग का हित उस हद तक उत्पादन का मुख्य प्रेरक तत्व बन गया। जिस हद तक कि उत्पादन उत्पीड़ित जनता के जीवन-निर्वाह के न्यूनतम साधनों तक ही सीमित न था। पश्चिमी यूरोप में आज प्रचलित पूँजीवादी उत्पादन-प्रणाली में यह चीज सब से अधिक पूर्णता के साथ क्रियान्वित की गई है। उत्पादन और विनिमय पर प्रभुत्व रखने वाले अलग अलग पूँजीपति अपने कार्यो के सब से तात्कालिक उपयोगी परिणाम की चिन्ता करने में ही समर्थ हैं। वस्तुतः यह उपयोगी परिणाम भी-जहाँ तक कि प्रश्न उत्पादित और विनिमय की गई वस्तु की उपयोगिता का ही होता है- पृष्ठभूमि में चला जाता है और विक्रय द्वारा मिलने वाला मुनाफा एकमात्र प्रेरक तत्व बन जाता है। पूँजीपति वर्ग का सामाजिक विज्ञान - क्लासिकीय राजनीतिक अर्थशास्त्र - प्रधानतया उत्पादन और विनिमय से सम्बन्धित मानव क्रियाकलापों के केवल सीधे-सीधे इच्छित सामाजिक प्रभावों को ही लेता है। वह पूर्णतया उस सामाजिक संगठन के अनुरूप है जिस की वह सैद्धान्तिक व्याख्या है। चूँकि पूँजीपति तात्कालिक मुनाफे के लिए उत्पादन और विनिमय करते हैं इसलिए केवल निकटतम, सब से तात्कालिक परिणामों का ही सर्वप्रथम लेखा लिया जा सकता है। कोई कारखानेदार अथवा व्यापारी जब तक सामान्य इच्छित मुनाफे पर किसी उत्पादित अथवा खरीदे माल को बेचता है वह खुश रहता है और इस की चिन्ता नहीं करता कि बाद में माल और उस के खरीददारों का क्या होता है। इस क्रियाकलाप के प्राकृतिक प्रभावों के बारे में भी यही बात कही जा सकती है। जब क्यूबा में स्पेनी बागान मालिकों ने पर्वतों की ढलानों पर खड़े जंगलों को जला डाला और उन की राख से अत्यन्त लाभप्रद कहवा-वृक्षों की केवल एक पीढ़ी के लिए पर्याप्त खाद हासिल की, तब उन्हें इस बात की परवाह न हुई कि बाद में उष्णप्रदेशीय भारी वर्षा मिट्टी की अरक्षित परत को बहा ले जाएगी और नंगी चट्टाने ही छोड़ देगी ! जैसे समाज के सम्बन्ध में वैसे ही प्रकृति के सम्बन्ध में भी वर्तमान उत्पादन-प्रणाली मुख्यतया केवल प्रथम, ठोस परिणाम भर से मतलब रखती है। और तब विस्मय प्रकट किया जाता है कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किये गये क्रियाकलाप के दूरवर्ती प्रभाव दूसरे ही प्रकार के, बल्कि मुख्यतया बिलकुल उलटे ही प्रकार के होते हैं, कि पूर्ति और मांग का तालमेल बिलकुल विपरीत वस्तु में परिणत हो जाता है (जैसा कि प्रत्येक दस वर्षीय औद्योगिक चक्र से, जिस का जर्मनी तक 'गिरावट' के मौके पर आरम्भिक स्वाद चख चुका है, सिद्ध हो चुका है), यह कि अपने श्रम पर आधारित निजि-स्वामित्व अनिवार्यतः मजदूरों की संपत्तिहीनता में विकसित हो जाता है जब कि समस्त धन गैरमजदूरों के हाथों में अधिकाधिक केन्द्रित होता जाता है, यह कि ख.....,'

क्रमशः ...

०००

लेखकों/पाठकों के लिए :

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ-साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता तथा रचनाओं पर प्रतिक्रिया ईमेल tarksheeleditor @gmail.com अथवा वट्सएप न. 9416036203 भी भेजी जा सकती है।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा को प्राप्त आर्थिक सहयोग

1. जयदेव नंबरदार, निवासी बदरपुर ने अपने पिता हरपाल सिंह आर्य के निधन पर उनकी समृति में सोसायटी को रु० 3100/- (मात्र तीन हजार एक सौ रुपये)) का सहयोग भेजा है।

2. पदम् सिंह, तरावड़ी निवासी ने रु० 500/- (मात्र पांच सौ रुपये) का सहयोग तर्कशील सोसायटी हरियाणा को भेजा है।

तर्कशील सोसायटी हरियाणा दोनों साथियों का उनके आर्थिक सहयोग के लिये हार्दिक धन्यवाद करती है।

रागणी

बिल्ली रस्ता काट गई

-रामेश्वर दास 'गुप्त'

पाखण्ड तै लिए गात बचा, सुण बात मेरी गोह कर कै
अंधविश्वास नहीं सैं ठीक विश्वास करो टोह कर कै।

छींक मारणा कसौण होया कदे, बिल्ली रस्ता काट गई,
उल्टी देख खाट स्याह्मी, तेरी हिम्मत बारां बाट गई,
पाछे तै आवाज मार दी, तो समझा कालजा चाट गई।,
थोथे बहमां की ये गठड़ी, तनै चलण तै डाट गई,
गलत सोच नै भरमा राख्या, अपणा आपा खो कर कै।

कोई भी हो मर्ज गात म्हां, एक जतन बताया जा,
मुर्गा, दारू, नीली चादर, पीर पै धुर चढ़वाया जा,
सूत्तक-पात्तक तै बचणा हो, एक ताबीज बंधाया जा,
वैज्ञानिक ईलाज छुड्वा दें, तन्नै न्यूं बहकाया जा,
इस जन्म नै नर्क बणा र्‌या, अगले का मोह कर कै।

अंधविश्वास अर पाखण्ड की, होती कोई औकात नहीं,
बिन तर्क के ज्ञान ना होता, बिना ज्ञान प्रभात नहीं,
धन-इज्जत दोनों का घाटा, कोई सुणता बात नहीं,
खुद लिकड़णा पड़ै , 'रामेश्वर', करता कोई हिमात नहीं,
आम कड़ै तै खावेगा तू, पेड़ कीकर का बो कर कै।
अंधविश्वास नहीं सैं ठीक विश्वास करो टोह कर कै।

-लेखक की पुस्तक 'च्यौंद कसूती(2010) में से

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की अपील

हरियाणा के असंध में शीघ्र ही 'तर्कशील केंद्र' के रूप में एक भवन निर्माण की योजना प्रस्तावित है। जिसके लिए सोसायटी के कार्यकर्ता मेहर सिंह विर्क ने असंध जिला करनाल में एक भूखण्ड प्रदान किया है। अतः सभी साथियों से अपील की जाती है कि इस योजना हेतु बढ़-चढ़ कर आर्थिक सहयोग करें।

-राज्य कार्यकारिणी

16वां कृष्ण बरगाड़ी समागम



1957-2002

तर्कशील लहर के दिवंगत नायक कृष्ण बरगाड़ी की स्मृति में 16वां स्मृति सम्मान समारोह तर्कशील भवन बरनाला में आयोजित किया गया। इस समागम में राज्य भर से तर्कशील कार्यकर्ता, शुभ चिंतक आदि शामिल हुए। समारोह के प्रथम भाग में कृष्ण बरगाड़ी सम्मान पंजाबी के प्रख्यात लेखक बलदेव सिंह सड़कनामा को प्रदान किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए लेखक ने कहा कि वह इतिहास के उन सुनहरी पन्नों को अपनी लेखनी में शामिल करते हैं जिसमें बराबरी, जुझारूपन के नायक होते हैं। उन्होंने आज के फासीवादी रुझान पर भी चिंता व्यक्त की तथा तर्कशील लहर के वैज्ञानिक चेतना के प्रचार प्रसार को सराहा। तर्कशील पत्रिका के सम्पादक बलबीर चन्द लोंगोवाल ने देश भर में तर्कशील चिंतको पर होने वाले हमले और बोलने लिखने पर भय उत्पन्न करने पर चिंता व्यक्त की और तर्कशीलता पर अढिकता के साथ डटे रहने का आह्वान किया। प्रसिद्ध कवि व आलोचक डा. सुरजीत बराड़ ने बलदेव सिंह सड़कनामा के लोक पक्ष वाले लेखन को सराहा और कहा कि ऐसी लेखनी को कोई भी ताकत झुका नहीं सकती। कृष्ण बरगाड़ी के समाज हित के योगदान को राज्य प्रभारी राजेन्द्र भदौड़ ने रेखांकित किया। इस अवसर पर कृष्ण बरगाड़ी के परिवार के सदस्य राजेन्द्र कौर, मास्टर राम कुमार, प्रेम समालसर एवं राज्य कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे। समारोह के दुसरे भाग में मानसिक रोगों पर जागरूकता को लेकर मानसिक रोग विशेषज्ञ राजकुमार बांसल ने विस्तार पूर्वक चर्चा की। मंच संचालन बलविंदर बरनाला, राष्ट्रीय एवं अंतराराष्ट्रीय प्रभारी ने किया।

शहीद भगत सिंह की बौद्धिकता और प्रचार को समर्पित - पुणे की वेदिका

एक तरफ जहां शहीद भगत सिंह को उनकी मिट्टी के लोग भावुकता से याद करते हैं वहीं दूसरे राज्यों में ऐसे नौजवान हैं जिनका जीवन भगत सिंह के विचारों को प्रचारित करने में लगा हुआ है, इन में से ही वेदिका लखे प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई हैं, वे अपने संसाधनों से भगत सिंह पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोयित कर रहीं है, पुणे की वेदिका पंजाब की सरजमीं को सजदा करने पहुँची थी, खास तथ्य ये है कि वे भगत सिंह के बौद्धिक पक्ष को ग्रहण कर प्रचारित कर रही हैं, उन्होंने सबसे पहले 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' किताब पढ़ी थी जिसने उनके मन को बेहत प्रभावित किया और इसने उन्हें सोचने का नया नजरिया दिया और उनका जीवन बदल गया, इससे प्रभावित होकर उन्होंने 'हम साथी भगत सिंह' ग्रुप बनाया। अब तक वे हुसैनीवाला बार्डर, खटकड़कला में स्थित भगत सिंह के घर, देश भक्तों के खोजी लेखक प्रो. मलविंदर सिंह , भगत सिंह के भांजे प्रो. जगमोहन सिंह, भगत सिंह विष्यों के लेखक प्रो चमन लाल से मुलाकात की है।

हरमनदीप सिंह

94633-91947

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तर्कशीलता के बढ़ते कदम



त्रिचनापल्ली में सम्पन्न विश्व नास्तिक सम्मेलन के अध्यक्ष मंडल की झलक



शहीद भगत सिंह को सलाम करने के लिए आए पुणे की वेदिका और प्रो. चमन लाल अपने परिवार के साथ

कृष्ण बरगाडी समृति समारोह - 2018



साहित्यकार बलदेव सड़कनामा को कृष्ण बरगाडी स्मृति सम्मान देते हुए तर्कशील सोसायटी पंजाब की राज्य कार्यकारिणी





मानसिक स्वास्थ्य चेतना विषय पर आयोजित सेमिनार में सम्बोधन करते हुए डा. राज कुमार बांसल एवं उपस्थित दर्शक

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera By Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।